आज़ादी का अमृत महोत्सव

पीएनबी प्रतिभा
pnb pratibha

अंकः 62-04 जनवरी-मार्च, 2022

पंजाब नैशनल बैंक की तिमाही गृह पत्रिका

जोखिम प्रबंधन विशेषांक

pnb
पीएनबी स्टाफ जर्नल
PNB Staff Journal

पीएनबी को स्वयं सहायता समूह बैंक लिंकेज अभियान 2020-21 में उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कार प्राप्त

नई दिल्ली, विज्ञान भवन में दिनांक 08 मार्च 2022 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में दीनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY & NRLM) के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह बैंक लिंकेज अभियान 2020-21 में उत्कृष्ट कार्य हेतु माननीय कृषि विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री गिरिराज सिंह से पंजाब नैशनल बैंक की ओर से पुरस्कार ग्रहण करते हुए कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार तथा मुख्य महाप्रबंधक, श्री एस. के. दीक्षित।

पंजाब नैशनल बैंक को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की श्रेणी में सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 'अनुसूचित जाति उद्यमी के सबसे महत्वपूर्ण ऋणदाता सहायक' के रूप में प्रतिष्ठित 'डॉ. अम्बेडकर बिजनेस एक्सीलेंस अवार्ड' पुरस्कार के लिया चुना गया। केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार से बैंक की ओर से मुख्य महाप्रबंधक, श्री एस.के. दीक्षित पुरस्कार ग्रहण करते हुए।

पंजाब नैशनल बैंक की तिमाही गृह पत्रिका जनवरी–मार्च 2022

मुख्य संरक्षक:
अतुल कुमार गोयल
(प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी)

संरक्षक:
संजय कुमार
(कार्यपालक निदेशक)
विजय दुबे
(कार्यपालक निदेशक)
स्वरुप कुमार साहा
(कार्यपालक निदेशक)
कल्याण कुमार
(कार्यपालक निदेशक)

विशेष सहयोग:
आशुतोष चौधुरी
(मुख्य महाप्रबंधक)

सुरेन्द्र कुमार थापर
(महाप्रबंधक)

प्रबंधकीय संपादक:
एस. के. दाश
(महाप्रबंधक – राजभाषा)

संपादक:
मनीषा शर्मा
(सहायक महाप्रबंधक – राजभाषा)

सह संपादक:
बलदेव कुमार मल्होत्रा
(मुख्य प्रबंधक – राजभाषा)

रविंद्र मंडले
(वरिष्ठ प्रबंधक – राजभाषा)

हृदय कुमार
(राजभाषा अधिकारी)

श्री एस. के. दाश, महाप्रबंधक–राजभाषा द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक–राजभाषा द्वारा संपादित।

पंजाब नैशनल बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, सेक्टर–10, द्वारका, नई दिल्ली

मुद्रण:
रॉयल प्रेस, बी–81, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेज 1, नई दिल्ली–110020

पीएनबी प्रतिभा में लेखकों/रचयिताओं द्वारा व्यक्त राय एवं विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। बैंक प्रबंधन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय का संदेश	2
कार्यपालक निदेशक महोदय का संदेश	4
महाप्रबंधक (राजभाषा) महोदय का संदेश	6
संपादकीय	7
उच्चाधिकारियों के दौरे	8
बैंक को प्राप्त पुरस्कार	10
प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन	11
अंचल और मंडल कार्यालय में आयोजित महिला दिवस की झलकियाँ	14
विविध – होली मिलन समारोह	16
बैंकों में जोखिम प्रबंधन के विविध आयाम	17
उद्घाटन	23
स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर को भावभीनी श्रद्धांजली	24
बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन की आवश्यकता	26
हरिद्वार (कुम्भ मेला)– एक जीवंत यात्रा	30
जोखिम प्रबंधन का महत्व	33
वर्क फ्रॉम होम अवसर या चुनौती	35
बैंक ऋण, जोखिम और वसूली	38
आजादी का अमृत महोत्सव: विगत 75 वर्षों की देश की उपलब्धियाँ एवं चुनौतियाँ	39
जोखिम प्रबंधन एक आवश्यकता या अनिवार्यता	43
ऑनलाइन बैंकिंग में हिंदी की भूमिका	45
एक नजर फाजिल्का की ओर	47
जोखिम प्रबंधन–बदलता स्वरुप	49
कहानी–ऋण माफी	50
बैंकिंग और परिचालनात्मक जोखिम (Operational Risk)	52
अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं समीक्षा बैठक का आयोजन	54
राजभाषा गतिविधियाँ	56
सीएसआर गतिविधियाँ	59
विविध गतिविधियाँ	61
बैंकों में जोखिम प्रबंधन (रिस्क मैनेजमेंट)–एक अवलोकन	63
मैं और स्वर्ग भूमि	66
कविताएं	68
हर तस्वीर कुछ कहती है : उत्कृष्ट प्रविष्टियाँ	70
हर तस्वीर कुछ कहती है	72
आते होंगे – लघु कथा	73
आपके पत्र	74
सेवानिवृत्ति	75

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय का संदेश

प्रिय पीएनबीयंस,

"जोखिम प्रबंधन" विषय पर **पीएनबी प्रतिभा** के इस विशेषांक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। बैंकिंग कारोबार में विश्वास अंतर्निहित होता है क्योंकि बैंकर जनता के धन के अभिरक्षक के रूप में कार्य करते हैं। यह कर्तव्य हमें अपने कार्यों को करने तथा निर्णयों को लेने में सावधानी बरतने का उत्तरदायित्व प्रदान करता है। एक वित्तीय सेवा प्रदाता होने के नाते, हमें अपने कारोबार से जुड़े जोखिमों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। उन जोखिमों को इष्टतम तरीके से नियंत्रित करना हमारी संस्था की सफलता की कुंजी है।

जोखिम प्रबंधन में विभिन्न चैनलों से होने वाले जोखिमों के विश्लेषण द्वारा सूचित निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। परंपरागत रूप से, जोखिम पेशेवरों का ध्यान पूँजी की आवश्यकता को प्रभावित करने वाले क्षेत्रों जैसे ऋण जोखिम, बाजार जोखिम और परिचालन जोखिम पर केंद्रित था। परन्तु, पिछले दशक में तरलता जोखिम और विभिन्न गैर–वित्तीय जोखिमों जैसे प्रतिष्ठा जोखिम, रणनीति जोखिम, ईएसजी जोखिम, आदि के बारे में नियामक और संस्थागत जागरूकता में तीव्र वृद्धि देखी गई है।

तदनुसार, हमारे बैंक में जोखिम प्रबंधन को लगातार सुदृढ़ बनाया गया है और एक स्वतंत्र दो स्तरीय संरचना के अंतर्गत अंचल स्तर पर अंचल जोखिम प्रबंधन कक्ष और प्रधान कार्यालय स्तर पर एक समर्पित प्रभाग स्थापित किया गया है। इसके अलावा, जोखिम प्रबंधन के संबंध में कई नई पहलें की गई हैं, जिनमें से कुछ नीचे दी गई हैं।

अंतिम उपयोगकर्ताओं के लिए प्रक्रियाओं को सरल बनाने और ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने के लिए, नए प्रस्तावों के लिए ऋण जोखिम रेटिंग के लिए टीएटी अधिदेश को घटाकर 7 दिन कर दिया गया है और बैंक की अपनी जमा राशि के विरुद्ध अग्रिमों पर ब्याज दर में रियायत देने के लिए लागत लाभ विश्लेषण उपयोगिता विकसित की गई है और सभी कार्यालयों को उपलब्ध कराई गई है तथा उधार खातों में वित्तीय विवरणियां प्राप्त

Dear PNBians,

I am pleased to present the special issue of **PNB Pratibha** carrying the theme of **"Risk Management"**. The business of banking involves trust as bankers act as custodian of public money. This confers on us a duty to be careful with our actions and decision making. As a financial service provider, knowledge of risks involved with our business is necessary. Managing those risks in the optimum manner is key to the success of our institution.

Risk management requires informed decision making through analyzing risks which arise through various channels. Traditionally, areas affecting capital requirement viz. Credit Risk, Market Risk and Operational Risk were mostly in focus for risk practitioners. However, last decade has seen rapid increase in regulatory and institutional awareness of liquidity risk and various non-financial risks such as reputational risk, strategy risk, ESG risk, etc.

Accordingly, risk management functions have continuously been strengthened in our Bank and an independent two-tier structure of Zonal Risk Management Cell at Zonal level and dedicated division at Head Office level have been set up. Further, various new initiatives have been taken with respect to risk management, some of which are presented below.

To simplify processes for end users and to improve customer experience, TAT mandate for credit risk rating has been reduced to 7 days for fresh proposals, cost-benefit analysis utility has been developed and provided to all offices to allow concession in rate of interest on advances against bank's own deposit and guidelines for obtainment of financial statements in borrowal accounts has been revised

करने के लिए दिशानिर्देशों को संशोधित किया गया है, जिसमें विशिष्ट दस्तावेज पहचान संख्या (यूडीआईएन) की अवधारणा का लाभ उठाते हुए कुछ मामलों में अनंतिम (प्रोविजनल) विवरण स्वीकार किए जाते हैं। इसके अलावा, अलग इकाई/निवास/कार्यालय के दौरे के दिशानिर्देश बनाए गए हैं, गोपनीय रिपोर्टिंग को सरल बनाया गया है, तिमाही निगरानी प्रणाली संबंधी दिशानिर्देश जोकि 1991 में जारी आरबीआई दिशानिर्देशों पर आधारित थे, को वर्तमान व्यापार गतिशीलता के साथ जोड़ा गया है तथा शेष और प्रतिभूति पुष्टि पत्र की पावती को अधिक लचीले विकल्पों को शेष राशि की पुष्टि के रूप में मानने की अनुमति देने हेतु परिसीमा अधिनियम के साथ जोड़ा गया है।

बैंक की पूर्व चेतावनी संकेत (अर्ली वार्निंग सिग्नल) प्रणाली, पीएनबी–सजग को नया रूप दिया गया है और इसमें ट्रिगर्स के ऑटो–जेनरेशन, ट्रिगर्स बंद करने की पद्धति और बकाया ट्रिगर्स के ऑटो–एस्केलेशन की अतिरिक्त कार्यक्षमता को जोड़ा गया है। रिटेल पूर्व चेतावनी संकेत को लागू किया गया है जिसमें ट्रिगर टेकओवर को रोकने के साथ–साथ नया कारोबार पाने के साधन के रूप में काम करते हैं।

पीएनबी संपत्ति के लिए योजना के अनुसार क्रेडिट स्कोरिंग मॉडल, पीएनबी जीएसटी एक्सप्रेस ऋण, लेंडिंगकार्ट के साथ सह–उधार व्यवस्था, पूर्व स्वीकृत व्यक्तिगत ऋण श्रेणियाँ और पीएनबी क्रेडिट कार्ड के लिए जोखिम हामीदारी मॉडल विकसित किए गए हैं।

एकीकृत जोखिम प्रबंधन प्रभाग (आईआरएमडी) द्वारा हाल ही में उद्योग की कुछ अग्रणी पहलें भी शुरू की गई हैं, जिसमें 150 से अधिक उद्योगों के लिए इन–हाउस उद्योग आउटलुक जेनरेट करना और बड़े मूल्य के खातों पर जानकारी एकत्र करने के लिए मार्केट इंटेलिजेंस यूनिट की स्थापना शामिल है।

हमारी जोखिम प्रबंधन प्रक्रियाओं और प्रणालियों में उपरोक्त सुधार उन्हें अधिक व्यापक, मजबूत और सुगम संचालन के लिए किए गए हैं। चूँकि जोखिम अपरिहार्य है, इसलिए बेहतर निर्णय लेने और वित्तीय संस्थान की दीर्घकालिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए उनका प्रबंधन करना सीखना आवश्यक है।

मुझे उम्मीद है कि जोखिम प्रबंधन पर आधरित यह विशेषांक संबंधित फील्ड पदाधिकारियों में बैंकिंग कारोबार से जुड़े जोखिमों और उन्हें नियंत्रित करने के लिए उपलब्ध साधनों और तकनीकों के बारे में बेहतर जागरूकता फैलाने में सहायक होगा।

शुभकामनाओं सहित!

अतुल कुमार गोयल

(प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी)

wherein provisional statements are accepted in some cases leveraging the concept of Unique Document Identification Number (UDIN). Further, separate unit/ residence/ office visit guidelines have been introduced, confidential reporting has been simplified, Quarterly Monitoring System guidelines which were based on RBI guidelines issued in 1991 have been aligned with the present business dynamics and acknowledgement of balance & security confirmation letter has been further aligned with The Limitation Act to allow more flexible options to be treated as Balance Confirmation.

Bank's Early Warning Signal (EWS) System, PNB-Sajag, has been revamped with additional functionalities of auto-generation of triggers, closure mechanism for triggers and auto-escalation of unattended triggers. Retail EWS has been implemented wherein triggers serve as a tool to prevent takeover as well as get a fresh business lead.

Scheme specific credit scoring models for PNB Sampatti, PNB GST Express Loan, Co-lending arrangement with LendingKart, Pre-approved Personal Loan categories and risk underwriting model for PNB Credit Card have been developed.

Some of the industry leading initiatives have also been undertaken recently by IRMD, which includes in-house generation of industry outlook for more than 150 industries and establishment of Market Intelligence Unit for gathering information on large value accounts.

The above improvements in our risk management processes and systems have been carried out to make them more comprehensive, robust and easy to operate. Since risks are inevitable, learning to manage them is essential for better decision making and ensuring long term viability of a financial institution.

I hope that this special edition's focus on risk management will help in creating better awareness amongst field functionaries about risks associated with the business of banking and tools and techniques available to manage them.

With best wishes,

Atul Kumar Goel

(Managing Director & CEO)

कार्यपालक निदेशक महोदय का संदेश

प्रिय पीएनबीयंस,

पीएनबी प्रतिभा का यह जोखिम प्रबंधन विशेषांक हमारे आसपास हो रहे बदलावों को प्रतिबिंबित करने और इससे जुड़े जोखिम घटक को समझने का एक अवसर प्रदान करता है।

किसी भी व्यवसाय के जोखिम परिदृश्य में विशेषज्ञता हासिल करना कार्यात्मक विकास और उसकी निरंतरता बनाए रखने का सबसे अच्छा साधन है। हमने 'निरंतरता' शब्द के महत्व को महसूस किया है क्योंकि व्यापार निरंतरता जोखिम के रूप में उत्पन्न खतरा वर्तमान महामारी के दौरान अधिक स्पष्ट हो गया है।

'जोखिम नहीं लाभ नहीं' का सदियों पुराना सिद्धांत आज के समय में प्रचलित अत्यंत कम मार्जिन की अति प्रतिस्पर्धी वास्तविकता के सन्दर्भ में कभी भी इतना अधिक सत्य नहीं रहा है। मैं इस बात पर जोर दूँगा कि, जोखिम का प्रभावी प्रबंधन वह ईंधन है जो किसी भी अत्याधुनिक लाभप्रद संगठन के लाभ इंजन को चलाता है।

स्वतः उजागर होने वाले विभिन्न गैर–वित्तीय जोखिमों के कारण लाभ की आधार रेखा और पूँजी पर्याप्तता की अपेक्षा ध्यान मुख्य रूप से त्रिपक्षीय (टिकाऊ, आर्थिक, सामाजिक पर्यावरण) बॉटमलाइन और कारोबार निरंतरता की ओर केंद्रित हो गया है। व्यापार, युद्ध, भू–राजनीतिक

Dear PNBians,

The release of a Risk Management special issue of **PNB Pratibha** is an opportunity to reflect on the changes going on around us and to understand the risk component associated with it.

Mastering risk landscape of one's business is the finest tool to maintain functional growth and continuity. We have realized the importance of the word 'continuity' as the threat posed by business continuity risk became more evident during the ongoing pandemic.

The age-old dictum of 'no risk no reward' has never been truer than in the context of the ultra-competitive reality of razor-thin margins prevalent today. I would emphasize that, managing risk effectively is the fuel that drives the profit engine of any modern day profit making organization.

The various non-financial risks manifesting themselves have shifted the conversations from profit bottom-line and capital adequacy to mostly towards triple (sustainable – economic, social, environmental) bottom-lines and business continuity. Trade wars, geopolitical

जोखिम, साइबर सुरक्षा खतरे, जलवायु जोखिम, महामारी जोखिम और डीईआई (विविधता, समानता और समावेशिता) की चिंताओं ने जोखिम प्रबंधकों के सरोकार को बढ़ा दिया है। पीएनबीयंस से मेरी अपेक्षा है कि वे खुद को और संगठन को बेहतर स्थिति में रखने के लिए इन मामलों में स्वयं को प्रशिक्षित और तैयार करें।

ऊपर उल्लिखित नए और कभी–कभी अस्पष्ट दुरूह विषय, हमें ऋण जोखिम, बाजार जोखिम, परिचालन जोखिम और तरलता जोखिम के पारंपरिक और अच्छी तरह से समझे जाने वाले जोखिम चैनलों को महत्व देने से नहीं रोकते हैं। धोखाधड़ी की रोकथाम सहित विभिन्न जोखिम समस्याओं को हल करने के लिए दुनिया भर के शिक्षाविदों और व्यवसायों द्वारा विभिन्न सांख्यिकीय अवधारणाएं, मॉडलिंग तकनीक और विशिष्ट प्रणालियाँ विकसित की जा रही हैं। हमें ऐसी ज्ञानप्रद अर्थव्यवस्था में भाग लेने के लिए एक संस्कृति का निर्माण करना चाहिए और बैंक के लिए अत्याधुनिक जोखिम प्रबंधन सॉल्यूशन बनाने हेतु सामूहिक बुद्धिमत्ता का लाभ उठाना चाहिए, जो अपने बैंक को भारत का सर्वश्रेष्ठ बैंक बनाने के हमारे विजन के अनुकूल हो।

किसी भी संस्था की जोखिम संस्कृति जोखिम के बारे में उसके दृष्टिकोण, व्यवहार और समझ का कुल योग होती है। मुझे उम्मीद है कि जोखिम प्रबंधन विषयों को समर्पित यह पीएनबी प्रतिभा का अंक जोखिम प्रबंधन अवधारणाओं और बैंकिंग व्यवसाय में उनके महत्व को समझने में मूल्यवान साबित होगा।

सुरक्षित रहें और मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

संजय कुमार
(कार्यपालक निदेशक)

risk, cyber-security threats, climate risk, pandemic risk and DEI (diversity, equity and inclusiveness) concerns have enhanced the mandates of risk managers. My expectation from PNBians is to train and prepare for these issues to keep themselves and the organization above the curve.

The new and sometimes nebulous topics mentioned above, do not preclude us from assigning importance to the conventional and well understood risk channels of Credit Risk, Market Risk, Operational Risk and Liquidity Risk. Various statistical concepts, modelling techniques and bespoke algorithms are being developed by academia and businesses around the world to solve various risk problems, including fraud prevention. We should create a culture to participate in such a knowledge economy and leverage on all the collective intellect to create a state of the art risk management solutions for the Bank, which befits our vision of making ourselves the best bank of India.

A corporation's risk culture is the sum total of the attitudes, behaviours and understanding about risk. I hope that this PNB Pratibha issue dedicated to risk management topics will be valuable in understanding of risk management concepts and their importance in banking business.

Stay safe and best wishes,

Sanjay Kumar
(Executive Director)

महाप्रबंधक (राजभाषा) महोदय का सन्देश

प्रिय पीएनबीयंस,

पहली बार बैंक की तिमाही गृह पत्रिका **"पीएनबी प्रतिभा"** के इस नवीन अंक के माध्यम से आप सभी से एक बार पुनः संवाद करते हुए मुझे बेहद अपनेपन और प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। मैं पीएनबी परिवार के सभी स्टाफ सदस्यों के साथ गृह पत्रिका के इस अंक के माध्यम से जुड़कर बहुत हर्षित हूँ। पत्रिका का यह अंक **"जोखिम प्रबंधन विशेषांक"** के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है, जिसमें बैंकिंग कारोबार में होने वाले विभिन्न जोखिमों और उनसे बचाव हेतु प्रबंधन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है ताकि हमारा बैंक और हमारे ग्राहक बैंकिंग कारोबार में होने वाले सभी प्रकार के जोखिमों से बचाव करने में सक्षम और जागरूक हो सकें।

हमारे बैंक ने जोखिम प्रबंधन की महत्ता और आवश्यकता को समझते हुए जोखिम प्रबंधन के लिए एक अलग प्रभाग और विभाग की स्थापना भी की है जोकि समय–समय पर बैंकिंग कारोबार में होने वाले विभिन्न प्रकार के जोखिमों जैसे ऋण जोखिम, बाजार जोखिम, परिचालन जोखिम, तरलता जोखिम, प्रतिष्ठा जोखिम, रणनीति जोखिम, अनुपालन जोखिम आदि पर परिपत्रों के माध्यम से हमारे बैंक के अंचल, मंडल तथा शाखा कार्यालयों के लिए आवश्यक दिशानिर्देश जारी करता रहता है ताकि बैंकिंग कारोबार में होने वाले सभी जोखिमों से समय रहते निपटा जा सके और हमारे बहुमूल्य ग्राहकों और बैंक को किसी भी प्रकार की क्षति न पहुँचे।

आज के बदलते परिवेश में ग्राहकों की जरूरतों और उनके अनुसार सेवाओं को प्रदान करना अति आवश्यक है और यह तभी संभव है जब हम अपने ग्राहकों के साथ सीधा संवाद कर उनसे अपनी सेवाओं के संबंध में समय–समय पर उनके फीडबैक लेते रहें और उसके अनुसार अपनी सेवाओं को और बेहतर बनाने के लिए उनमें सुधार करते रहें। इसके अलावा आज के डिजिटल युग में हमारा प्रयास है कि हम अपने ग्राहकों को घर बैठे ही सुरक्षित और त्वरित बैंकिंग सुविधायें उपलब्ध कराएं ताकि हमारे बैंक और ग्राहकों के मध्य एक अटूट विश्वास और संबंध कायम हो सके और यह तभी संभव है जब हम उन्हें हर प्रकार के जोखिमों से बचाएं और जोखिम रहित बैंकिंग का उपयोग करने हेतु उनका मार्गदर्शन करें। हमारे बैंक की टैगलाइन भी है "भरोसे का प्रतीक"।

हर प्रकार के कारोबार में जोखिम की संभावना अवश्य होती है परंतु बिना जोखिम लिए वह कारोबार लाभ भी नहीं कमा सकता है और जोखिम का प्रतिफल लाभ है, इसलिए कोई भी व्यवसाय जोखिम से अछूता नहीं है। परन्तु यह भी सच है कि एक सुदृढ़ और दूरदर्शी जोखिम प्रबंधन के माध्यम से इससे बचा जा सकता है और कारोबार के लाभ को कई गुना बढ़ाया भी जा सकता है। पिछले दो वर्षों से हम प्राकृतिक जोखिम अर्थात् कोरोना महामारी से भी जूझ रहें हैं बावजूद इसके इस जोखिम और संकटकालीन स्थिति का हमारे बैंक के सभी स्टाफ सदस्यों ने भली–भांति डटकर सामना किया है और सुदृढ़ जोखिम प्रबंधन और कर्मठता के द्वारा देश और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पूरी निष्ठा से निर्वहन किया है।

मुझे आशा है कि जोखिम प्रबंधन का यह विशेषांक स्टाफ सदस्यों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक होगा। मैं सभी स्टाफ सदस्यों से आशा करता हूँ कि वे बैंक की तिमाही गृह पत्रिका "पीएनबी प्रतिभा" में पूरे उत्साह और मनोयोग से यूँ ही अपना योगदान देते रहेंगे ताकि पत्रिका को और अधिक ज्ञानवर्धक और रुचिकर बनाया जा सके तथा सभी स्टाफ सदस्यों की सृजनशीलता और लेखन एवं बैंक में हिंदी में कार्य को बढ़ावा मिल सके।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित!

एस. के. दाश
(महाप्रबंधक – राजभाषा)

संपादकीय

प्रिय साथियो,

आप सभी स्टाफ सदस्यों तथा सुधि पाठकों से बैंक की तिमाही गृह पत्रिका "पीएनबी प्रतिभा" के इस नवीन अंक के माध्यम से पुनः जुड़कर मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। इस बार पीएनबी प्रतिभा का यह अंक "जोखिम प्रबंधन" विषय पर आधारित है जिसके माध्यम से हमने जोखिम और उसके निवारण हेतु प्रबंधन पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है ताकि हम सभी बैंकिंग कारोबार में होने वाले अनेक जोखिमों जैसे वित्तीय जोखिम, तरलता जोखिम, बाजार जोखिम, चूक अथवा ऋण जोखिम, परिचालन जोखिम, तकनीकी एवं प्राकृतिक जोखिम और सामाजिक जोखिमों से भली–भांति परिचित हो सकें तथा इसके निवारण हेतु स्वयं को और हमारे ग्राहकों को जागरूक बना सकें ताकि हमारा बैंक निर्बाध रूप से उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सके। बैंकिंग व्यवसाय में जोखिम की पहचान, मापन, स्वीकृति एवं प्रबंधन होता है अतः बैंक के वित्तीय प्रबंधन का केंद्र बिंदु कहीं न कहीं जोखिम प्रबंधन है। शेयरधारकों के मूल्य को अधिकतम करने के उद्देश्य से सभी संभावित जोखिमों की उपयुक्त व्यवस्था करने का एकीकृत और संरचनात्मक दृष्टिकोण जोखिम प्रबंधन है।

बैंक देश की अर्थव्यवस्था के विकास के इंजिन हैं। देश के संसाधनों का अभीष्टतम उपयोग करके उत्पादकता बढ़ाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। किन्तु हर प्रक्रिया में जोखिम निहित रहता है और जोखिम का सीधा सम्बन्ध लाभ से है – जोखिम न उठाना ही सबसे बड़ा जोखिम है। जो जोखिम नहीं उठा सकता वह अभीष्ट प्राप्त नहीं कर सकता इसलिए कहा भी गया है:–

'न संशयमनारूह्य नरो भद्राणि पश्यति"

अर्थात्–मनुष्य अपने को खतरे में डाले बिना विशिष्ट लाभ नहीं पा सकता"

कोई भी व्यवसाय लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है और उच्च लाभप्रदता लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, सफलता की कुंजी जोखिम प्रबंधन में निहित है।

पत्रिका के इस अंक के माध्यम से बैंकिंग कारोबार में होने वाले जोखिमों तथा उसके विविध आयामों को छूने और इससे निपटने के उपायों को बताने का प्रयास किया गया है साथ ही इससे जुड़े प्रबंधन और इसकी महत्ता से भी अवगत कराने की कोशिश भी की गई है। इसके अलावा हमने पत्रिका के इस अंक में जोखिम प्रबंधन से संबंधित विविध लेख, प्रधान कार्यालय सहित सभी कार्यालयों में इस तिमाही के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ, कॉरपोरेट गतिविधियाँ, उच्चाधिकारियों के दौरे, राजभाषा संबंधी विभिन्न गतिविधियाँ, कहानी, यात्रा वृत्तांत तथा कविता आदि शामिल किए हैं।

पत्रिका के पिछले अंक "डिजिटल बैंकिंग विशेषांक" हेतु आपसे प्राप्त हुई बहुमूल्य प्रतिक्रियाओं तथा सुझावों के लिए मैं आप सभी की हृदय से आभारी हूँ और यह आशा करती हूँ कि आपका स्नेह और प्रोत्साहन हमारी पत्रिका को आगे भी यूँ ही मिलता रहेगा। हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि हम आपके सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं के आधार पर अपनी पत्रिका को और भी बेहतर एवं संग्रहणीय बनाएं इस हेतु हमें आपकी प्रतिक्रियाओं और सुझावों की उत्सुकता से प्रतीक्षा रहती है। साथ ही पत्रिका को बेहतर बनाने में हमारे सभी स्टाफ सदस्यों का भी योगदान है जिन्होंने अपने उत्कृष्ट लेखन और सृजनशीलता से पत्रिका को आकर्षक और पठनीय बनाया है जिसके लिए वे साधुवाद और बधाई के पात्र हैं।

शुभकामनाओं सहित।

मनीषा शर्मा
(सहायक महाप्रबंधक – राजभाषा)

उच्चाधिकारियों के दौरे

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल के मंडल कार्यालय, नोएडा में आगमन पर तिलक लगाकर स्वागत करते हुए नोएडा मंडल कार्यालय के स्टाफ सदस्य। साथ में हैं मंडल प्रमुख, नोएडा, श्री बिक्रमजित सोम एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल के मंडल कार्यालय, नोएडा दौरे के दौरान पुष्पगुच्छ से उनका स्वागत करते हुए मंडल प्रमुख, नोएडा, श्री बिक्रमजित सोम एवं वरिष्ठ अधिकारीगण।

मंडल कार्यालय, नोएडा के एक दिवसीय दौरे पर बैंक के प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल। साथ में हैं मंडल प्रमुख, नोएडा, श्री बिक्रमजित सोम, उप मंडल प्रमुख, नोएडा तथा सहायक महाप्रबंधक, आई–रैम, नोएडा, श्री पी. सुनील ।

अहमदाबाद अंचल कार्यालय के दौरे के अवसर पर प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल को पौधा भेंट कर उनका स्वागत करते हुए अंचल प्रबंधक, अहमदाबाद, श्री बिनय कुमार गुप्ता।

कार्यपालक निदेशक, श्री स्वरुप कुमार साहा ने एक दिवसीय कोलकाता अंचल कार्यालय दौरे के दौरान सह–सभापति के रूप में एस.एल.बी.सी की बैठक में भाग लिया और पीएनबी द्वारा राज्य की प्रगति में दिए जा रहे योगदान से अवगत कराया। बैठक उपरांत उन्होंने पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव श्री हरि कृष्ण द्विवेदी और वित्त सचिव, श्री मनोज पंत से मुलाकात की। इस अवसर पर अंचल प्रबंधक, श्री नबीन कुमार दाश और महाप्रबंधक, श्री सुनील कुमार गोयल भी उपस्थित थे।

स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, पंचकूला–1 में 19वें प्रशिक्षण प्रमुख सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कार्यपालक निदेशक, श्री कल्याण कुमार। साथ में हैं महाप्रबंधक, श्रीमती रीता कौल एवं अंचल प्रबंधक, चंडीगढ़, श्री संदिप कुमार पाणिग्रही।

उच्चाधिकारियों के दौरे

कार्मिक प्रशिक्षण केंद्र, दिल्ली (उत्कृष्टता केंद्र) में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सम्मेलन में स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए कार्यपालक निदेशक, श्री कल्याण कुमार।

कार्मिक प्रशिक्षण केंद्र, दिल्ली (उत्कृष्टता केंद्र) में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सम्मेलन में स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री विजय कुमार त्यागी।

अहमदाबाद में आयोजित व्यावसायिक समीक्षा बैठक में अहमदाबाद अंचल के सभी मंडल प्रमुख, एमसीसी, पीएलपी, जेडआरएमसी, अंचल शस्त्र तथा एलसीबी एवं आंचलिक लेखा परीक्षा, कार्यालय प्रमुख के साथ प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल तथा अंचल प्रबंधक, श्री बिनय कुमार गुप्ता।

अंचल कार्यालय, आगरा के अंचल प्रमुख, श्री गणपत लाल के बरेली मंडल कार्यालय में आगमन पर पुष्प–गुच्छ से उनका स्वागत करते मंडल प्रमुख, श्री हरिमोहन मीना एवं एमसीसी बरेली प्रमुख, श्री डी.के. साह।

मंडल कार्यालय, मालदा के दौरे पर आए उप अंचल प्रबंधक, श्री निशिकांत नायक का स्वागत करते हुए मंडल प्रमुख, श्री दीपंकर चक्रबर्ती। साथ में है मुख्य प्रबंधक, श्री संतोष कुमार भगत।

अंचल कार्यालय, दुर्गापुर से उप महाप्रबंधक सह उप अंचल प्रबंधक, श्री निशिकांत नायक द्वारा मंडल कार्यालय, पुरुलिया का दौरा किया गया। मंच पर उपस्थित हैं–दाहिने से श्री निशिकांत नायक, मंडल प्रमुख, श्री लिंगराज मोहंती एवं वरिष्ठ प्रबंधक, श्रीमती अंजलि दुबे। इस मौके पर मंडल कार्यालय के सभी स्टाफ उपस्थित रहे।

बैंक को प्राप्त पुरस्कार

पंजाब नैशनल बैंक ने एसोचैम द्वारा 8वें एमएसएमई उत्कृष्टता पुरस्कार के तहत 09.03.2022 को सर्वश्रेष्ठ एमएसएमई बैंक (पीएसयू) का पुरस्कार जीता। माननीय एमएसएमई मंत्री श्री नारायण तातु राणे से बैंक की ओर से पुरस्कार प्राप्त करते महाप्रबंधक, एमएसएमई, श्री अशोक कुमार गुप्ता।

ट्रांसयूनियन सिबिल लिमिटेड द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह में सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों में 2021 हेतु ''बेस्ट डेटा क्वॉलिटी इंप्रूवमेंट अवार्ड'' हेतु पंजाब नैशनल बैंक को चुना गया है। इस अवसर पर आईबीए के मुख्य कार्यकारी श्री सुनील मेहता और ट्रांसयूनियन सिबिल के एमडी एवं सीईओ, श्री राजेश कुमार से बैंक की ओर से पुरस्कार ग्रहण करते हुए उप महाप्रबंधक, एमआईएस, श्री राजेश कुमार।

प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के शुभ अवसर पर, प्रधान कार्यालय, द्वारका में एक सम्मान समारोह का आयोजन कर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया और महिला केंद्रित स्वास्थ्य बीमा पॉलिसियों का शुभारंभ किया गया। बैंक ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफल महिलाओं को सम्मानित किया और समारोह में महिला कर्मचारियों के एक विशाल समूह को प्रेरित करते हुए समाज में अपना मजबूत स्थान बनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर **विशिष्ट अतिथि डॉ साधना शंकर–प्रधान आयकर महानिदेशक (नई दिल्ली)**, श्री अतुल कुमार गोयल–प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री कल्याण कुमार –कार्यपालक निदेशक और श्री सुनील सोनी–मुख्य महाप्रबंधक के साथ पीएनबी प्रेरणा की अध्यक्षा श्रीमती पूनम गोयल और उपाध्यक्षाएं श्रीमती संगीता कुमार, श्रीमती अंजना दुबे और श्रीमती साधना कुमारी तथा पीएनबी प्रेरणा के अन्य वरिष्ठ सदस्य और बैंक की महिला अधिकारी उपस्थित रहीं।

पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में महिला केन्द्रित स्वास्थ्य बीमा उत्पाद का आरंभ करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल, मुख्य अतिथि प्रधान आयकर महानिदेशक (नई दिल्ली), डॉ. साधना शंकर, कार्यपालक निदेशक श्री कल्याण कुमार तथा पीएनबी प्रेरणा की अध्यक्षा, श्रीमती पूनम गोयल सहित पीएनबी प्रेरणा के वरिष्ठ सदस्यगण

समारोह के अवसर पर, हमारे बैंक ने चोलामंडलम् एमएस जनरल इंश्योरेंस और बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस के सहयोग से महिला–केन्द्रित स्वास्थ्य बीमा पॉलिसियों का शुभारंभ किया। इस पहल का उद्देश्य भारतीय महिलाओं को एक समर्पित और व्यापक पॉलिसी प्रदान करना है जो विभिन्न आकस्मिक स्वास्थ्य स्थितियों के विरूद्ध उनके भविष्य को सुरक्षित करता है।

इसके अतिरिक्त, हमारे बैंक ने महिलाओं को समर्पित **9000** से अधिक पीएनबी पॉवर सेविंग्स खाते खोले जो उन्हें कई लाभ और रियायतें प्रदान करते हैं।

इस विशेष अवसर पर हमारे बैंक के एमडी एवं सीईओ, श्री अतुल कुमार गोयल ने डॉ साधना शंकर की पुस्तक 'आरोहण' का विमोचन किया। उनकी पुस्तक तेईसवीं सदी की पृथ्वी की एक महिला की चेतना पर विज्ञान कथा है जो दूर भविष्य में एक अलग ग्रह पर रहने वाली है।

महिला बैंकरों के अपरिहार्य योगदान को स्वीकार करते हुए, डॉ साधना शंकर ने कहा कि "हाल ही में विश्व आर्थिक मंच की एक रिपोर्ट ने चेतावनी दी थी कि कोविड–19 महामारी के प्रभाव ने वैश्विक लिंग अंतर को लगभग 99 वर्ष से बढ़ाकर 135 वर्ष कर दिया है। इस महामारी में महिलाओं को आर्थिक बाधाओं, राजनीतिक भागीदारी में गिरावट और कार्यस्थल की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इसलिए, हमें इस मुद्दे को हल करने के लिए त्वरित रणनीतियाँ और नीतियाँ बनाने की आवश्यकता है।

समारोह, को संबोधित करते हुए, हमारे बैंक के एमडी एवं सीईओ श्री अतुल कुमार गोयल ने कहा, "महिलाएं पेशेवर और व्यक्तिगत दोनों मोर्चों पर किले को मजबूती से पकड़े हुए कई क्षमताओं में अनेक भूमिकाएँ निभाती हैं। वे देश के आर्थिक विकास में समान भागीदार हैं और परिवार की मूल्यवान संपत्ति हैं। इसलिए, आइए हम ''ब्रेक द बायस'' विषय का पूरा समर्थन करें और पूर्वाग्रह, रूढ़ियों और भेदभाव से मुक्त दुनिया को सुदृढ़ करें। "इस अवसर पर संबोधित करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री कल्याण कुमार ने कहा, "भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी के अमृत महोत्सव के एक हिस्से के रूप में, हम अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस बहुत धूमधाम और जोश के साथ मनाते हैं। लेकिन, हम केवल तभी पूर्वाग्रह को तोड़ सकते हैं जब हमारे साथ और परिवार के भीतर बदलाव शुरू करेंगे।"

महिला दिवस पर सीएसआर गतिविधियाँ:

महिला सशक्तिकरण के लिए बैंक की चल रही प्रतिबद्धताओं के तहत, हमारे बैंक ने महिला दिवस पर विभिन्न सीएसआर गतिविधियों की शुरुआत की। बैंक ने मुकुल फाउंडेशन को सिलाई मशीन, पेडल अगरबत्ती बनाने और कप बनाने की मशीन प्रदान करते हुए, महिलाओं को आजीविका के लिए समर्थन और आत्मनिर्भरता और उद्यमिता को बढ़ावा दिया। इसके अलावा, बैंक ने एसडीएमसी प्राइमरी स्कूल (दिल्ली)

और गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल (दिल्ली) को सीलिंग फैन, रेफ्रिजरेटर, एग्जॉस्ट फैन, आरओ सिस्टम जैसी आवश्यक वस्तुएं प्रदान कर योगदान दिया। ये स्कूल सक्रिय रूप से 3400 से अधिक छात्राओं को प्राथमिक शिक्षा प्रदान करते हैं।

महिला केंद्रित बीमा पॉलिसी की शुरुआत :

महिला दिवस के शुभ अवसर पर बैंक ने चोला सर्व शक्ति पॉलिसी की शुरुआत की, जो एक ऑल–इन–वन उत्पाद है और यह उत्पाद चोला मंडलम् एमएस जनरल इंश्योरेंस के सहयोग से **2 करोड़ रुपये** तक का बीमा प्रदान करता है। इस पॉलिसी के लाभों में व्यक्तिगत दुर्घटना, गंभीर बीमारी, स्वास्थ्य कवर, गर्भावस्था की चिकित्सा समाप्ति, आनुवंशिक परीक्षण, नौकरी छूटने पर ईएमआई लाभ, सहायता कवर और भी बहुत कुछ इसमें शामिल हैं।

दूसरी ओर, बजाज आलियांज की महिला–विशिष्ट गंभीर बीमारी योजना एक पॉकेट–फ्रेंडली उत्पाद है जो रुपये **0.5 लाख से रु. 2** लाख तक का बीमा प्रदान करता है। भारतीय महिलाओं को अच्छे स्वास्थ्य और वित्त के साथ सशक्त बनाने के लिए दोनों स्वास्थ्य बीमा पॉलिसियाँ शुरू की गई हैं।

इस पर हमारे एमडी एवं सीईओ श्री अतुल कुमार गोयल ने अपने विचार रखते हुए कहा कि "महिलाओं के लिए बीमा निर्णय लेने पर अधिक नियंत्रण रखना महत्वपूर्ण है। बैंक ने अपने बीमा भागीदारों के साथ मिलकर वर्षों से महिलाओं द्वारा बेहतर बीमा अपनाने और उनकी विशिष्ट जरूरतों को पूरा करने वाले उत्पादों को तैयार करने के लिए मिलकर काम किया है। महिलाओं के लिए बीमा प्रवृत्तियाँ समय के साथ विकसित हुई हैं और हमें आशा है कि इस अंतर को हम और कम कर पायेंगे"

पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि प्रधान आयकर महानिदेशक (नई दिल्ली), डॉ. साधना शंकर।

पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित प्रधान आयकर महानिदेशक (नई दिल्ली), डॉ. साधना शंकर को शाल भेंट कर सम्मानित करतीं हुईं महाप्रबंधक (आईबीडी), श्रीमती विभा एरन तथा महाप्रबंधक (एलकेएमसी), श्रीमती रीता कौल।

पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में पीएनबी प्रेरणा की अध्यक्षा श्रीमती पूनम गोयल को शाल भेंट कर सम्मानित करतीं हुईं महाप्रबंधक (आईबीडी), श्रीमती विभा एरन तथा महाप्रबंधक (एलकेएमसी), श्रीमती रीता कौल।

पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित पीएनबी प्रेरणा कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित प्रधान आयकर महानिदेशक (नई दिल्ली), डॉ. साधना शंकर द्वारा लिखित पुस्तक ''आरोहण'' के हिंदी में अनूदित संस्करण का विमोचन करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल। साथ में हैं मुख्य महाप्रबंधक (सीसीडी), श्री सुनील सोनी, अध्यक्षा, पीएनबी प्रेरणा, श्रीमती पूनम गोयल तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान पीएनबी परिवार को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रधान आयकर महानिदेशक (नई दिल्ली), डॉ. साधना शंकर।

पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान पीएनबी परिवार को संबोधित करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल।

पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान पीएनबी परिवार को संबोधित करते हुए कार्यपालक निदेशक, श्री कल्याण कुमार।

पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मुकुल फाउंडेशन, एनजीओ की ट्रस्टी, श्रीमती प्रिया गुप्ता को पौधा भेंट करते हुए पीएनबी प्रेरणा की अध्यक्षा, श्रीमती पूनम गोयल। साथ में हैं मुख्य अतिथि प्रधान आयकर महानिदेशक (नई दिल्ली), डॉ. साधना शंकर तथा पीएनबी प्रेरणा के अन्य सदस्यगण।

पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत मंच पर अपनी प्रस्तुति देतीं महिला स्टाफ सदस्याएं।

पंजाब नैशनल बैंक के प्रधान कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला सशक्तिकरण के लिए पीएनबी की चल रही प्रतिबद्धताओं के तहत मुकुल फाउंडेशन को सिलाई मशीन, अगरबत्ती बनाने और कप बनाने की मशीन तथा एसडीएमसी प्राइमरी स्कूल (दिल्ली) और गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल (दिल्ली) को सीलिंग फैन, रेफ्रिजरेटर, एग्जॉस्ट फैन, आरओ सिस्टम जैसी आवश्यक वस्तुएं प्रदान करते हुए मुख्य अतिथि प्रधान आयकर महानिदेशक (नई दिल्ली), डॉ. साधना शंकर तथा पीएनबी प्रेरणा के सदस्यगण।

अंचल और मंडल कार्यालय में आयोजित महिला दिवस की झलकियाँ

कार्मिक प्रशिक्षण केंद्र, दिल्ली (उत्कृष्टता केंद्र) में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सम्मेलन में दीप प्रज्ज्वलित करती श्रीमती रीता कौल, मुख्य अध्ययन अधिकारी एवं महाप्रबंधक। मंच पर उपस्थित हैं कार्यपालक निदेशक श्री संजय कुमार तथा कार्मिक प्रशिक्षण केंद्र के स्टाफ सदस्यगण।

दिनांक 08.03.2022 को मंडल कार्यालय, मालदा द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन के अवसर पर मंडल कार्यालय में उपस्थित महिला स्टाफ सदस्याओं का समूह चित्र।

महिला दिवस के अवसर पर मोहाली, मंडल कार्यालय प्रमुख, श्रीमती रीटा जुनेजा और मुख्य अतिथि, श्रीमती गरिमा सिंह, सचिव–वित्त विभाग, पंजाब सरकार द्वारा पौधा रोपण किया गया। साथ में हैं लुधियाना अंचल प्रबंधक, श्री सुमन्त महान्ती एवं उच्च अधिकारीगण।

महिला दिवस पर आयोजित समारोह में महिला स्टाफ सदस्यों को उपहार वितरित करते हुए मंडल प्रमुख, उत्तरी दिल्ली, श्री दीपक शर्मा तथा उप मंडल प्रमुख, श्री अनिल आहलुवालिया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मंडल प्रमुख, नोएडा, श्री बिक्रमजित सोम, उप महाप्रबंधक, एमसीबी, नोएडा, सुश्री मौसमी मजूमदार, उप महाप्रबंधक, आई–रैम, नोएडा, श्री पी. सुनील तथा मंडल कार्यालय, नोएडा व आई–रैम, नोएडा के स्टाफ सदस्य।

दिनांक 8 मार्च 2022 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मंडल कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली कार्यालय में एनजीओ, टोटल ई–एजुकेशन की एसिड अटैक पीड़िता महिलाओं के साथ केक काटते हुए सभी महिला स्टाफ सदस्य।

अंचल और मंडल कार्यालय में आयोजित महिला दिवस की झलकियाँ

दिनांक 8 मार्च 2022 को कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मंडल प्रमुख, पश्चिमी दिल्ली, श्री एस.पी. गोस्वामी एनजीओ टोटल ई–एजुकेशन की एसिड अटैक पीड़िता महिलाओं को कम्प्यूटर भेंट करते हुए।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मंडल कार्यालय, नई दिल्ली के अंतर्गत आने वाली समस्त शाखाओं की महिलाओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने जैसे कार लोन, सीकेवाईसीआर को शून्य करने, पीएनबी वन ऐप डाउनलोड करने आदि पर उन्हें मंडल प्रमुख, श्री गिरिवर कुमार द्वारा सम्मानित किया गया तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

मंडल कार्यालय, धर्मशाला द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला आईटीआई, धर्मशाला को वॉटर कूलर भेंट किया गया। इस अवसर पर छात्राओं के साथ समूह छायाचित्र खिंचवाते हुए मंडल प्रमुख, श्री अमरेंद्र कुमार एवं वरिष्ठ प्रबंधक, श्री बिजेंद्र शर्मा।

अंचल कार्यालय, मेरठ व मंडल कार्यालय, मेरठ (पश्चिम) द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर संयुक्त रूप से विशेष समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में मनोचिकित्सक व प्रेरक वक्ता डा. रितु केला मुख्य अतिथि तथा श्रीमती बलजीत कौर, अध्यक्षा–"पीएनबी प्रेरणा" मेरठ अंचल कार्यालय से विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में श्री एस.पी.सिंह, अंचल प्रबंधक मेरठ, श्री संजीव श्रीवास्तव, उप अंचल प्रबंधक, मेरठ तथा श्री निलेश कुमार, मंडल प्रमुख, मेरठ पश्चिम सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण भी उपस्थित रहे।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर राजकोट की उप महापौर डॉ दर्शता शाह को सम्मानित करते हुए मंडल प्रमुख, राजकोट, श्री एस के राघव एवं अन्य स्टाफ सदस्य।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर उपमहाप्रबंधक, एमसीबी, नोएडा, सुश्री मौसमी मजूमदार महिला स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए।

विविध – होली मिलन समारोह

प्रधान कार्यालय में रंगों के त्यौहार होली की पूर्व संध्या और होली मिलन के अवसर पर प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री अतुल कुमार गोयल। साथ में हैं कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री स्वरुप कुमार साहा तथा श्री कल्याण कुमार।

प्रधान कार्यालय में होली की पूर्व संध्या पर प्रबंधक निदेशक तथा मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशक, श्री विजय दुबे को रंग लगा कर होली की शुभकामनाएं देते हुए। साथ में हैं कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार, श्री कल्याण कुमार और अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

प्रधान कार्यालय में होली की पूर्व संध्या पर प्रबंधक निदेशक तथा मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशक, श्री स्वरुप कुमार साहा को रंग लगा कर होली की शुभकामनाएं देते हुए। साथ में हैं कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे।

प्रधान कार्यालय में होली की पूर्व संध्या पर प्रबंधक निदेशक तथा मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशक, श्री कल्याण कुमार को रंग लगा कर होली की शुभकामनाएं देते हुए। साथ में हैं कार्यपालक निदेशक, श्री विजय दुबे।

होली की पूर्व संध्या पर सभी उच्चाधिकारियों के साथ होली मिलन समारोह के दौरान सभी स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए प्रबंधक निदेशक तथा मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल। साथ में हैं कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री स्वरुप कुमार साहा तथा श्री कल्याण कुमार।

बैंकों में जोखिम प्रबंधन के विविध आयाम

"अपराजिता गुप्ता, प्रबंधक, मंडल कार्यालयः हल्द्वानी"

*वर्ष 2008 ने समस्त विश्व में सब प्राइम बंधक उफान के कारण 405 बैंकों की विफलता/परिसमापनधीनता का दृश्य देखा। फेडरल सरकार की 'लेहमन ब्रदर्स' जैसी विशाल वित्तीय संस्थाओं को उबारने के सभी प्रयास विफल रहे। कारण **''जोखिम प्रबंधन की विफलता''!!***

वित्तीय स्थिरता तथा वित्तीय क्षेत्र की सुदृढ़ता सभी नीति–निर्माताओं तथा विश्लेषकों के लिए गंभीरता का विषय है। वैश्विक वित्तीय प्रणाली में तकनीकी विकास, व्यावसायिक प्रगति, वैश्वीकरण, बढ़ती वित्तीय जटिलता तथा अनेक नकारात्मक कारकों द्वारा जोखिम की बारंबारता ने गंभीर समस्या उत्पन्न की है। इससे बैंकिंग प्रणाली में नए प्रकार के जोखिम उजागर हुए हैं। वित्तीय संस्थाओं में अनेक लेनदेन के कार्य किये जाते हैं और किसी भी गतिविधि में मानदंडों से पृथक कार्य करना घातक सिद्ध हो सकता है। जोखिम तथा प्रतिफल में प्रत्यक्ष संबंध होता है परंतु अत्यधिक जोखिम घातक सिद्ध हो सकता है। वर्तमान में परिकलित जोखिम की धारणा को आधार बनाना आवश्यक हो गया है क्योंकि लाभप्रदता के साथ बैंकों का अस्तित्व भी खतरे में है। अतः जोखिम प्रबंधन द्वारा जोखिम को कम कर धारणीय विकास निश्चित करना बैंकों के लिए मूल मंत्र बन सकता है।

बैंकों में जोखिम प्रबंधन की आवश्यकता

जोखिम योजनारहित गतिविधि है जिसके कारण हानि या उपार्जन में गिरावट जैसे घातक वित्तीय परिणाम हो सकते हैं। जोखिम का तात्पर्य किसी निर्धारित परिणाम के अवांछनीय रूप से घटित होने से है जिसमें हानि होने या न होने की संभाव्यता होती है। जोखिम प्रबंधन का उद्देश्य मानदंडों का अनुपालन या जोखिम को कम करना नहीं अपितु अनुकूलित जोखिम की अवधारणा गठित करना है। निम्न कारकों द्वारा बैंकों में जोखिम प्रबंधन की आवश्यकता की अनुभूति हुई है।

- **अविनियमनः** सन् 1990 में अर्थव्यवस्था के उदारीकरण से बैंकिंग प्रणाली में विशाल परिवर्तन आया है। इससे पूर्व राष्ट्रीयकृत बैंक विद्यमान थे किन्तु वैश्वीकरण के पश्चात् नए निजी एवं विदेशी बैंकों को लाइसेंस प्राप्त हुआ तथा सरकार द्वारा विनियमित प्रणाली का भी अविनियमन हुआ। वैश्वीकरण के कारण देश जोखिम, प्रणालीगत जोखिम जैसे कारक बैंकिंग क्षेत्र को प्रभावित करने का स्रोत बने।

- **तकनीकी नवोन्मेषः** तकनीकी नवोन्मेष के कारण बैंकों में नवीन उत्पादों का सृजन हुआ है तथा बैंकिंग प्रणाली 'शाखा' बैंकिंग से उन्नत होकर 'समय–रहित' तथा 'शाखा–रहित' हो रही है। डेबिट/क्रेडिट/एटीएम कार्ड, मोबाईल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग ने बैंकिंग को जन–जन तक अभिगम करने का अनूठा पथ प्रदर्शित किया है किन्तु साईबर अपराध जैसे नकारात्मक कारक ने भी जन्म लिया है जिसने जनता को इन उत्पादों का प्रयोग करने से अवरुद्ध किया है। वर्ष 2016 में भारत में लगभग 3.2 मिलियन एटीएम कार्ड का सुरक्षा कारणों द्वारा अवरुद्ध होना साईबर अपराध की गंभीरता का प्रमाण है। इससे न केवल परिचालन हानि होती है अपितु बैंकों की पूँजी एवं प्रतिष्ठा को भी आघात पहुँचता है। अनेक अनुसंधानों ने पुष्टि की है कि अर्थव्यवस्था में होने वाले अपराधों में 32% अपराध साईबर द्वारा होते हैं।

बैंकिंग क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले जोखिम

बैंकों में विभिन्न प्रकार के जोखिम उत्पन्न होते हैं जिनमें प्रमुख जोखिम निम्न प्रकार हैं–

1. **तरलता जोखिम** – तरलता जोखिम बैंकों की अल्पावधि देयताओं द्वारा दीर्घावधि देयता का निधियन करने से उत्पन्न होता है। इसका अर्थ है कि संस्था अवधिपूर्ण वचनबद्धताओं को पूर्ण करने में असमर्थ है या अन्य स्रोतों से धन अर्जित करके ही उन वचनबद्धताओं को पूर्ण कर सकती हैं। तरलता जोखिम के निम्न प्रकार होते हैं–

- **निधियन जोखिम**– इसका तात्पर्य है कि बैंक निधि अर्जित कर नकदी प्रवाह दायित्व निभाने में असमर्थ है। यह अप्रत्याशित आहरण या जमा राशि के अनवीकरण द्वारा उत्पन्न होता है।

- **समय जोखिम**– समय जोखिम प्रत्याशित पूँजी आगम की गैर प्राप्ति की प्रतिपूर्ति करने से उत्पन्न होता है अर्थात् समय जोखिम मानक आस्ति के अनर्जक आस्ति में तब्दील होने पर उत्पन्न होता है।

2. **ब्याज दर जोखिम**– ब्याज दर जोखिम तब उत्पन्न होता है जब ब्याज दर परिवर्तित होने से निवल ब्याज मार्जिन या संस्था की इक्विटी की बाजार दर प्रभावित होती है। ब्याज दर जोखिम के निम्न प्रकार होते हैं:

- **बेमेल जोखिम**: यह जोखिम भिन्न मूलधन राशि या भिन्न परिपक्वता तारीख वाली आस्ति, देयताएं या तुलन–पत्रेतर को धारित करने से उत्पन्न होता है जिससे बाजार ब्याज दर में अनापेक्षित परिवर्तन द्वारा बैंक का तुलन–पत्र प्रभावित होता है।

- **आधार जोखिम**: आधार जोखिम भिन्न आस्तियों, देयताओं तथा तुलन–पत्र से इतर में भिन्न मात्रा के परिवर्तन द्वारा उत्पन्न होता है। उदाहरण–ब्याज दर में वृद्धि होने पर आस्ति का ब्याज दर देयताओं की ब्याज दर की तुलना में भिन्न स्तर से विस्तृत होता है जिससे निवल ब्याजेतर आय में विचरण होता है।

- **पुनर्निवेश जोखिम**: यह जोखिम भविष्य में नकदी प्रवाह के पुनर्निवेश ब्याज दर में अनिश्चितता के कारण उत्पन्न होता है। नकदी प्रवाह में बेमेल होने से बैंक के निवल ब्याजेतर आय में विचलन होता है क्योंकि ऋण पर प्राप्त होने वाला ब्याज तथा जमा–राशि पर प्रदान किया जाने वाला ब्याज भिन्न दिशाओं में प्रभावित होते हैं।

1 **बाजार जोखिम**: बाजार जोखिम का तात्पर्य वित्तीय बाजार के समग्र निष्पादन को प्रभावित करने वाले कारकों द्वारा उत्पन्न हुई हानि से है। बाजार जोखिम निम्न रूप में उत्पन्न हो सकता है:

- **विदेशी मुद्रा जोखिम**: यह एक विशेष प्रकार का जोखिम है जिसमें विदेशी मुद्रा के लेनदेन में प्रतिकूल विनिमय दर विषमता उत्पन्न होती है जिससे बैंक को हानि होने की संभावना होती है।

- **बाजार तरलता जोखिम**: यह जोखिम तब उत्पन्न होता है जब बैंक वर्तमान बाजार दर पर किसी निर्धारित लिखत द्वारा विशाल लेनदेन पूर्ण करने में असमर्थ हो।

2 **ऋण जोखिम**: ऋण जोखिम का तात्पर्य किसी लेनदार या ग्राहक के ऋण का सामयिक अर्थात् समय से भुगतान न करने से है। ऋण जोखिम के निम्न रूप हैं:

- **प्रतिपक्षी जोखिम**: यह जोखिम सहभागीदार या प्रतिपक्षी के अपेक्षित निष्पादन प्रदर्शित करने की असमर्थता से उत्पन्न होता है।

- **देश जोखिम**: यह जोखिम किसी देश पर लगाए गए प्रतिबंध से उस राष्ट्र के ग्राहकों के निष्पादन में असमर्थता से उत्पन्न होता है। यहाँ असमर्थता का कारण बाहरी कारक होते हैं जो ग्राहक की इच्छा के प्रतिकूल होते हैं।

3 **परिचालन जोखिम**: बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति ने परिचालन जोखिम को आंतरिक प्रक्रियाओं, प्रणाली या मानव–पूँजी के विफल होने पर उत्पन्न हुए जोखिम से परिभाषित किया है। परिचालन जोखिम के निम्न रूप होते हैं:

- **लेनदेन जोखिम**: लेनदेन जोखिम आतंरिक एवं बाहरी धोखाधड़ी, व्यावसायिक प्रणाली की विफलता व्यवसाय की निरंतरता निश्चित करने की असमर्थता के कारण उत्पन्न होता है।

- **अनुपालन जोखिम**: यह जोखिम बैंक के कानूनी एवं विनियामक तंत्रों, अन्य लागू होने वाले नियमों तथा सर्वश्रेष्ठ प्रथाओं के अनुपालन न करने से उत्पन्न होता है।

जोखिम प्रबंधन प्रणाली की रूपरेखा

जोखिम प्रबंधन निम्न तथ्यों पर आधारित है:

❖ जोखिम दर्शनशास्त्र यह दर्शाता है कि बैंकों को कितना जोखिम उठाना चाहिए।

❖ जोखिम सहन क्षमता यह दर्शाती है कि बैंकों में जोखिम सहने की कितनी क्षमता है।

❖ जोखिम–वहन क्षमता बैंकों के जोखिम प्रबंधन हेतु उठाए गए कदम दर्शाता है।

जोखिम प्रबंधन का समुचित निवारण संभव न हो किन्तु जोखिम को स्वीकृत स्तर पर बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है। जोखिम प्रबंधन के निम्न कार्य हैं:

- **जोखिम की पहचान:** जोखिम की पहचान में भिन्न प्रकार के जोखिमों तथा जोखिम उत्पन्न करने वाले कारकों से अवगत होना आवश्यक है।
- **जोखिम का मूल्यांकन:** जोखिम के मूल्यांकन द्वारा यह ज्ञात होता है कि कोई विशिष्ट गतिविधि किस स्तर तक जोखिम–भारित है। जोखिम मूल्यांकन विभिन्न जोखिम दर निर्धारण मॉडल द्वारा किया जाता है।
- **जोखिम नियंत्रण:** जोखिम नियंत्रण में विभिन्न तंत्रों द्वारा जोखिम कम करने की चेष्टा की जाती है। बैंकिंग में जोखिम नियंत्रण में निम्न तंत्रों का उपयोग होता है:
  - व्यवसाय का विविधीकरण।
  - बीमा एवं बचाव–व्यवस्था।
  - जोखिम स्तर का निर्धारण।
  - जोखिम का उचित समय पर अन्य पक्ष को अंतरण।
  - प्रतिभूतीकरण एवं पुनर्निर्माण।
- **जोखिम निगरानी:** जोखिम निगरानी में बैंकों को लेनदेन में मापदंड निर्धारित करना होता है जिससे बैंक की ईकाईयों तथा निवेश में कोई जोखिम उत्पन्न न हो तथा जोखिम का सामयिक ज्ञान हो।

जोखिम प्रबंधन में बासेल मानदंड की भूमिका

बैंकिंग प्रणाली के उदारीकरण एवं वैश्वीकरण से राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार एकीकृत हुआ है किन्तु इसने सशक्त निगरानी तथा प्रणालीगत जोखिम बचाव की दिशा में नीति निर्माताओं के लिए विशाल चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। जटिल वित्तीय बाजारों में जोखिम कम करने हेतु बैंकों ने अन्तरराष्ट्रीय बैंकिंग गतिविधियों द्वारा अपनी आय विविध की है। व्याप्त और विविध बैंकिंग परिचालन को समान निगरानी एवं विनियामक मानदंडों का अनुपालन करने की आवश्यकता होती है। इसी सन्दर्भ में बासेल रूपरेखा की महत्ता है जिसका गठन सन् 1947 में अनेक विदेशी बैंकों के वित्तीय विपदा का सामना करने में असमर्थ होने के कारण किया गया। इसे बैंकिंग विनियमन एवं निगरानी प्रणाली समिति का नाम दिया गया जो आगे चलकर बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति नाम से जानी गई। बासेल समिति ने अब तक 3 बासेल समझौते गठित किये हैं।

बासेल–I मानक

सन् 1987 में अमेरीकी एवं यूरोपियन स्टॉक बाजार में मंदी का दौर आया जिसके पश्चात् बासेल समिति ने वित्तीय संस्थाओं की पूँजी पर्याप्तता सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित किया। सन् 1988 में बासेल समिति ने पूँजी पर्याप्तता पर आधारित मानदंड जारी किए जिन्हें पूँजी पर्याप्तता पर बासेल समझौता नाम से जाना गया। बासेल–I के अनुसार बैंकों को जोखिम–भारित आस्तियों पर 8% न्यूनतम पूँजी पर्याप्तता अनुरक्षित करनी होगी। बासेल ने प्रत्येक परिसंपत्ति पर उचित जोखिम भार निर्धारित किया। उदाहरण–आवास ऋण को 50% जोखिम भार अंतरित किया गया तथा कॉरपोरेट ऋण को 100% जोखिम भार सौंपा गया।

बासेल–II मानक

वर्ष 2004 में रचित बासेल–II मानक 3 स्तंभों पर आधारित थे–न्यूनतम पूँजीगत अपेक्षाएं, पर्यवेक्षी समीक्षा प्रक्रिया तथा बाजार अनुशासन जिनका विस्तृत ब्योरा निम्न प्रकार है:

➢ **स्तंभ–I: न्यूनतम पूँजीगत अपेक्षाएं :**

बासेल–II के अंतर्गत बैंकों को जोखिम–भारित आस्तियों पर 8% न्यूनतम पूँजी अपेक्षा निश्चित करनी होगी। यहाँ जोखिम–भारित आस्तियों का निर्धारण 3 प्रमुख जोखिमों के आधार पर होगा–ऋण जोखिम, बाजार जोखिम, परिचालन जोखिम।

ऋण जोखिम हेतु अनुमानित पूँजी

ऋण जोखिम हेतु पूँजी निर्धारित करने के लिए **मानकीकृत दृष्टिकोण, प्रतिष्ठान आतंरिक रेटिंग तथा उन्नत आतंरिक रेटिंग आधारित दृष्टिकोण** निर्धारित किए गए हैं।

- मानकीकृत दृष्टिकोण के अंतर्गत आस्तियों को 0% से 150% तक अधिमानी दर प्रदान की जाएगी। अधिमानी दर बाहरी साख निर्धारण एजेंसी द्वारा प्रदत्त रेटिंग पर निर्भर होगी।

- आतंरिक रेटिंग के अंतर्गत बैंकों को मानकीकृत प्रतिशतों की अपेक्षा स्वयं की चूक की संभावना का अनुमान लगाना होगा। इसके लिए 2 दृष्टिकोण प्रस्तुत किये गए हैं, प्रतिष्ठान आतंरिक रेटिंग तथा उन्नत आतंरिक रेटिंग दृष्टिकोण। प्रतिष्ठान आतंरिक रेटिंग दृष्टिकोण के भीतर भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित नियमानुसार बैंकों को चूक पर हानि तथा चूक पर एक्सपोजर का मूल्य निर्धारित करना होगा। उन्नत आतंरिक रेटिंग के अंतर्गत बैंकों को अपने निर्धारित नियमों द्वारा उपरोक्त दोनों तथ्यों का मूल्य निर्धारित करना होगा। प्रतिष्ठान तथा उन्नत आतंरिक रेटिंग दृष्टिकोण 3 तथ्यों पर आधारित हैं:
  - चूक की संभाव्यता।
  - चूक पर हानि।
  - संपरिवर्तन कारक।

परिपक्वता की अवधि के संग चूक की संभाव्यता तथा चूक पर हानि जोखिम–भार निर्धारित करने के सूत्र में उपयोग होते हैं। प्रत्येक एक्सपोजर पर जोखिम भार का चूक पर एक्सपोजर से गुणा कर बैंक की जोखिम भारित आस्ति तथा बैंक की पूँजी आवश्यकता को निर्धारित किया जाता है।

बाजार जोखिम हेतु अनुमानित पूँजी

बैंकिंग सुधार हेतु गठित नरसिंहम समिति–II ने निवेश संविभाग में बाजार जोखिम के मूल्यांकन हेतु सरकारी तथा अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में 5% जोखिम–भार निर्धारित करने की सिफारिश की। भारतीय रिज़र्व बैंक ने मार्च 2000 से सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) पर तथा मार्च 2001 से गैर–सांविधिक चलनिधि अनुपात पर पूँजी पर्याप्तता पर 2.5% जोखिम भार निश्चित करने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही भारत में बैंकों को समस्त निवेश प्रतिभूतियों पर बाजार जोखिम के पूँजी प्रभार पर 2.5% जोखिम भार तथा खुले स्वर्ण एवं अंतरराष्ट्रीय सीमा पर 100% जोखिम भार लागू करना होता है।

परिचालन जोखिम हेतु अनुमानित पूँजी

परिचालन जोखिम हेतु मूल संकेतक दृष्टिकोण, प्रतिष्ठान तथा आतंरिक मापन दृष्टिकोण प्रस्तुत किए गए हैं। मूल संकेतक दृष्टिकोण के अनुसार बैंकों को परिचालन जोखिम हेतु पिछले 3 वर्षों की सकल वार्षिक आय के स्थिर प्रतिशत के अनुकूल निर्धारित करनी होगी। वास्तविक रूप में इस दृष्टिकोण के अनुसार परिचालन जोखिम हेतु अतिरिक्त पूँजी न्यूनतम विनियामक पूँजी की तुलना में 20% अधिक है।

प्रतिष्ठान दृष्टिकोण बैंकों की गतिविधियों को 8 व्यावसायिक कारकों में विभाजित करता है। कॉरपोरेट वित्त, व्यापार एवं बिक्री, खुदरा बैंकिंग, वाणिज्यिक बैंकिंग, भुगतान एवं निपटान, एजेंसी सेवा, आस्ति प्रबंधन तथा खुदरा दलाली।

आतंरिक दृष्टिकोण बैंकों को स्वयं के मानकों द्वारा जोखिम प्रबंधन की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

➢ **स्तंभ II: पर्यवेक्षी समीक्षा प्रक्रिया:**

इसके अंतर्गत पर्यवेक्षण द्वारा बैंकों के समुचित जोखिम का आतंरिक निर्धारण करना है जिससे जोखिम हेतु पर्याप्त पूँजी की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। इसमें पर्यवेक्षक बैंकों की गतिविधियों तथा उनके जोखिम–भार का विश्लेषण करेंगे जिससे यह ज्ञात होगा कि बैंक को स्तंभ–I में निर्धारित पूँजी स्तर से अधिक पूँजी की आवश्यकता होगी या नहीं तथा कोई सुधारात्मक कार्यवाही संभव है या नहीं। इस प्रक्रिया का तात्पर्य बैंकों में जोखिम हेतु पर्याप्त पूँजी की उपलब्धता सुनिश्चित करना ही नहीं अपितु बैंकों को जोखिम प्रबंधन तथा निगरानी हेतु उच्च जोखिम प्रबंधन तंत्र के उपयोग हेतु प्रेरित करना भी है।

➢ **स्तंभ III: बाजार अनुशासन**

इस स्तंभ का उद्देश्य बैंकों के परिचालन में पारदर्शिता लाना है जिससे बैंकों के जोखिम की तुलना में पूँजी पर्याप्तता का ज्ञान हो सके। बासेल समिति ने सभी परिचालित सदस्य बैंकों को अपनी मूल एवं अनुपूरक गतिविधियों का प्रस्तुतीकरण करने की सिफारिश की है जिससे वित्तीय क्षेत्र में सुरक्षा एवं धारणीयता विकसित हो।

बासेल–III मानक

बासेल–II के सभी कारकों को ध्यान में रखते हुए बासेल समिति ने दिसंबर 2010 (जून 2011 में परिशोधित) में बासेल–III मानकों का गठन किया। बासेल–3 मानकों के 2 प्रमुख उद्देश्य हैं–

- वैश्विक पूँजी तथा चलनिधि विनियमावली को दृढ़ बनाना जिससे बैंकिंग जगत की अघात–सहनीयता प्रबल हो।

- बैंकिंग क्षेत्र की वित्तीय एवं आर्थिक तंगी के कारण अघात सहने की क्षमता को बढ़ाना।

बासेल–III मानकों की विशेषता :

बासेल–III मानक को अधिक प्रभावशाली माना जाता है। बासेल–III मानकों के कार्यान्वयन से बैंकों को निम्न प्रकार से लाभ होगाः

- **पूँजी की मात्रा एवं गुणवत्ता में वृद्धि :** बासेल–III के अंतर्गत न्यूनतम पूँजी पर्याप्तता को 8% ही निर्धारित किया गया है किन्तु स्तर–1 पूँजी अनुपात को बढ़ाकर 6% किया गया है जिसमें इक्विटी घटक को 4.5% निर्धारित किया गया है। बासेल–III में पूँजी रूपांतरण सुरक्षा एवं प्रतिचक्रिय पूँजी सुरक्षा जैसे विषय सम्मिलित किये गए हैं। पूँजी रूपांतरण सुरक्षा यह सुनिश्चित करता है कि बैंक न्यूनतम पूँजी अपेक्षा का स्तर भंग किये बिना अघात सहने में समर्थ हों। बासेल–III बाजार जोखिम लिखतों में प्रतिपक्षकार ऋण जोखिम रूपरेखा को प्रबल बनाता है।

- **लघु–अवधि की तरलता व्याप्ति में बढ़ोतरीः** बासेल समिति ने तरलता रूपरेखा को प्रबल बनाने के लिए 2 न्यूनतम मानकों का गठन किया है। चलनिधि व्याप्ति अनुपात तथा निवल स्थिर निधियन अनुपात। चलनिधि व्याप्ति अनुपात का उद्देश्य बैंक की भार–रहित उच्च गुणवत्ता वाली तरल आस्तियों की संख्या को अधिकतम बनाना है जिन्हें 30 कैलेंडर दिनों के भीतर तरल बनाया जा सके। निवल स्थिर निधियन अनुपात का उद्देश्य बैंकों को अपनी गतिविधियों के वित्तपोषण में स्थिर सूत्रों का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

- **बैकस्टॉप लिवरेज अनुपात की रचनाः** लिवरेज अनुपात बैंक तथा समस्त वित्तीय प्रणाली में अत्यधिक लिवरेज से बचने का जोखिम–रहित संवेदनशील उपाय है। बासेल–III ने कम से कम 3% स्तर–1 लिवरेज की सिफारिश की है।

- **प्रावधानीकरण मानकों को प्रबल बनाना :** वर्तमान समय में प्रावधानीकरण के लिए मानकीकृत दृष्टिकोण प्रचलित है जिसके अनुसार बैंकों को हुई उपगत हानि के आधार पर प्रावधानीकरण किया जाता है किन्तु **बासेल–III ने 'प्रत्याशित हानि' के आधार पर प्रावधानीकरण करने पर विचार किया है।** भारतीय रिज़र्व बैंक इस दिशा में भारतीय बैंकों के लिए नीति निर्मित कर रहा है जिससे बैंकिंग क्षेत्र को प्रावधानीकरण के घटकों से मुक्त किया जा सके।

- **वर्धित प्रकटीकरण :** बासेल–II का दूसरा स्तंभ–बाजार अनुशासन प्रकटीकरण को महत्त्व देता है। बैंकों द्वारा प्रकटीकरण बाजार में सहभागियों के लिए निर्णय लेने में सहयोग करता है। बासेल–III प्रकटीकरण को और प्रबल बनाता है क्योंकि इसके अनुसार बैंकों को विनियामक पूँजी की संरचना तथा उसमें हुआ समायोजन भी प्रकट करना पड़ता है।

अन्य जोखिम प्रबंधन तंत्र

बैंकों में जोखिम प्रबंधन में निम्न घटकों का योगदान हैः

- **अंतर–बैंक एक्सपोजर में ऋण जोखिम का मापनः** ऋण के अंतर–बैंक एक्सपोजर के मापन हेतु भारतीय रिज़र्व बैंक ने कैमल्स (CAMELS) नामक पर्यवेक्षी मापदंड गठित किए हैं.
  - C: Capital Adequacy - पूँजी पर्याप्तता।
  - A: Asset Quality - आस्ति गुणवत्ता।
  - M: Management - प्रबंधन।
  - E: Earnings - उपार्जन।
  - L: Liquidity - तरलता
  - S: Sensitivity - जोखिम की संवेदनशीलता।

रेटिंग का निर्धारण वित्तीय विवरण के अनुपात विश्लेषण द्वारा किया जाता है जिससे बैंकों में व्याप्त जोखिम का बोध होगा।

- **ऋण जोखिम प्रबंधन समिति एवं विभागः** बैंकों में ऋण जोखिम प्रबंधन का विशेष विभाग नियोजित होता है जो प्रमुख तौर पर ऋण जोखिम प्रबंधन के कार्य–कलापों तथा समुचित ऋण जोखिम प्रबंधन के निरीक्षण में शामिल होता है। यह समिति बोर्ड द्वारा अनुमोदित जोखिम प्रबंधन की नीति का कार्यान्वयन करती है, विशाल ऋण एक्सपोजर का स्तर निर्धारित करती है, ऋण समीक्षा प्रणाली का गठन करती है, जोखिम की निगरानी एवं मूल्यांकन करती है, प्रावधानीकरण तथा विनियामक तंत्रों का अनुपालन सुनिश्चित करती है तथा ऋण संबंधी समस्या होने पर यह सुधारात्मक कार्यवाही भी करती है।

- **आंतरिक लेखापरीक्षा एवं नियंत्रण:** आंतरिक लेखापरीक्षा द्वारा ऋण गतिविधियों का निर्धारित ऋण एवं लेखा नीतियों के अनुकूल होना, अनियमित खातों की सामयिक पहचान तथा ऋण हानि का पर्याप्त प्रावधानीकरण सुनिश्चित किया जाता है।

उपसंहार

बैंकों में बढ़ते जोखिम के सभी तथ्यों से बैंकों में जोखिम प्रबंधन को लागू और शामिल करने तथा उसे सुदृढ़ बनाने की महत्ता ज्ञात होती है। *सुप्रसिद्ध अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने कहा है ''यदि मेरे पास एक वृक्ष गिराने के लिए 8 घंटे हैं, तो मैं 6 घंटे अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज करने में निवेश करूँगा।''* भारतीय अर्थव्यवस्था तीव्रतापूर्वक उन्नति की राह पर सजग हो रही है। ऐसे में आर्थिक उन्नति को सुगम बनाने वाली संस्था को सशक्त बनाना नीति निर्माताओं का कर्त्तव्य है। वर्तमान समय में बैंकिंग क्षेत्र में अनेक नकारात्मक कारकों तथा जोखिमों का बीज अंकुरित होकर विशाल वृक्ष बनने का प्रयास कर रहा है। ऐसे में जोखिम प्रबंधन को अनिवार्य बनाना कुल्हाड़ी की धार को तेज बनाने के समान होगा जिससे जोखिम के वृक्ष को जड़ से समाप्त किया जा सके तथा ऐसी गंभीर समस्याओं का समय पर एवं सम्पूर्ण निवारण हो सके। बैंकों को विभिन्न जोखिमों द्वारा होने वाली समस्या सभी हितधारकों को निराश करती है। बैंकों की हानि का प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ता है अतः वर्तमान युग में निरंतर तथा निर्बाध आर्थिक उन्नति के लिए जोखिम प्रबंधन की सुदृढ़ता को आधार बनाना आवश्यक है जिससे बैंक सहित समस्त अर्थव्यवस्था को जोखिम जैसी घातक समस्याओं से सुरक्षित किया जा सके।

स्वच्छता पखवाड़ा

स्वच्छता पखवाड़ा के अवसर पर अंचल कार्यालय, मेरठ परिसर में अंचल प्रबंधक, श्री एस.पी.सिंह, उप अंचल प्रबंधक, श्री संजीव श्रीवास्तव, अंचल शस्त्र प्रमुख, श्री राज कुमार अग्रवाल, मंडल प्रमुख, मेरठ पश्चिम, श्री निलेश कुमार और अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण स्वच्छता अभियान के तहत श्रमदान करते हुए।

स्वच्छता पखवाड़ा के उपलक्ष्य में पंजाब नैशनल बैंक, अहमदाबाद अंचल कार्यालय के परिसर चाणक्य बिल्डिंग में सफाई अभियान चलाया गया, इस दौरान अंचल प्रबंधक, श्री बिनय कुमार गुप्ता, सहित सभी स्टाफ कर्मचारियों ने इसमें उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

मंडल कार्यालय, कोलकाता (उत्तर) द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा–2022 का आयोजन किया गया। इस दौरान साल्ट लेक सिटी सेंटर क्षेत्र में श्रमदान करते हुए मंडल प्रमुख, श्री पुष्कर तराई, उपमंडल प्रमुख, श्री सुनील कुमार मिश्र, सहायक महाप्रबंधक एमसीसी– कोलकाता, श्री रतन यादव एवं अन्य अधिकारीगण।

मंडल कार्यालय, होशियारपुर द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा के तहत स्वच्छता अभियान के अंतर्गत श्रमदान देते हुए मंडल प्रमुख, डॉ राजेश प्रसाद और उपमंडल प्रमुख, श्री आलोक कुमार गुप्ता एवं अन्य स्टाफ सदस्य।

उद्घाटन

लार्ज कॉरपोरेट शाखा, अहमदाबाद के नये परिसर का फीता काट कर उद्घाटन करते हुए पंजाब नैशनल बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल। साथ में हैं श्री बिनय कुमार गुप्ता, अंचल प्रबंधक, अहमदाबाद तथा श्री संजय गर्ग, उप महाप्रबंधक, एलसीबी शाखा।

जयपुर–सीकर, मंडल कार्यालय की शाखा कृषि उपज मंडी, सीकर के नवीन परिसर का फीता काटकर उद्घाटन करते हुये जयपुर अंचल प्रबंधक, श्री आर. के. वाजपेयी। साथ में हैं जयपुर–सीकर, मंडल कार्यालय के मंडल प्रमुख, श्री दीपक माथुर एवं मुख्य प्रबंधक, सुश्री नेहा मेड़तिया।

नोएडा मंडल के सेक्टर – 162 में बैंक के नव–स्थापित एटीएम का फीता काट कर उद्घाटन करते हुए अंचल प्रबंधक, दिल्ली, श्री समीर बाजपेयी। साथ में हैं मंडल प्रमुख, नोएडा, श्री बिक्रमजित सोम।

नवनिर्मित शाखा, बारकोट के उद्घाटन समारोह के अवसर पर अंचल प्रबंधक, भुवनेश्वर, श्री संजीव भारद्वाज, मंडल प्रमुख, संबलपुर, श्री अरबिंद पंडा एवं उप मंडल प्रमुख, संबलपुर, श्री रजनीकांत बेहेरा।

सिरसा मंडल की पीएनबी ग्रामीण शाखा में एटीएम मशीन का बटन दबा कर विधिवत उद्घाटन करते हुए मंडल प्रमुख, सिरसा, श्री सतपाल मेहता। साथ में हैं शाखा अबूब शहर के शाखा प्रबंधक एवं अन्य स्टाफ सदस्य।

एसएएस नगर (मोहाली), मंडल कार्यालय के अंतर्गत शाखा कार्यालय, लालडू मेन के एटीएम का फीता काट कर उद्घाटन करते अंचल प्रबन्धक, लुधियाना, श्री सुमंत महान्ती और मंडल प्रमुख, मोहाली, श्रीमती रीटा जुनेजा। साथ में हैं अन्य अधिकारी और स्टाफ सदस्यगण।

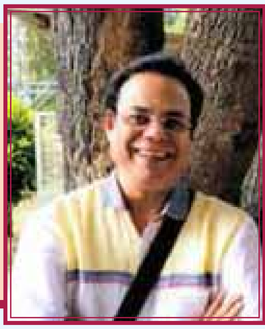

स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर को भावभीनी श्रद्धांजली

शशांक दुबे, महाप्रबंधक (राजभाषा), आईडीबीआई बैंक लिमिटेड

लता जी की आवाज रच देती थी नायिकाओं का किरदार

आज लता जी का नाम किसी के लिए नया, अनसुना या अनजाना नहीं है। वह संगीत जगत के क्षितिज का वो सितारा हैं जो कई पीढ़ियों तक आसमान की बुलदियों पर सदा चमकता रहेगा और संगीत जगत में उनका नाम हमेशा बड़े आदर और सम्मान से लिया जाता रहेगा। आज भले ही वे हमारे बीच जीवित नहीं हैं परन्तु अपनी आवाज के माध्यम से वे सदा हमारे हृदय में अमर रहेंगी। शायद ही कोई हो जो उनकी आवाज के जादू से अछूता रहा हो जिसने भी उनकी आवाज सुनी वो सीधे उसके दिल में उतर गईं कभी न भूलने के लिए। उन्हीं से जुड़े कुछ अनछुए पहुलओं से रूबरू करा रहे हैं हमारे अतिथि लेखक श्री शशांक दुबे जी। याद करते है स्वर कोकिला लता मंगेशकर जी को और आइये चलते हैं एक अविस्मर्णीय यात्रा पर श्री दुबे जी के साथ और जानते हैं लता जी से जुड़े कुछ अनछुए पहलुओं को।

लता जी को 'संपूर्ण पार्श्व गायिका इसलिए कहा जाता रहा है क्योंकि उन्होंने अपने दौर की जितनी भी प्रमुख नायिकाओं के लिए गाया, अपनी ओर से उस नायिका के व्यक्तित्व को भी इतनी संपूर्णता के साथ समाहित किया कि सुधि श्रोता गीत सुनते ही ताड़ जाते थे कि यह गीत अमुक नायिका पर फिल्माया गया होगा। उनकी इस विशिष्टता को कई नायिकाओं के लिए गाए गीतों से समझा जा सकता है। लताजी की आवाज में वह जादू, वह गरिमा और वह विश्वास था कि वे नायिकाओं के किरदार को अपनी आवाज से रच देती थीं।

मीना कुमारी के व्यक्तित्व में दर्द, सहिष्णुता, गरिमा और मादकता का समन्वय था। लता जी ने मीना कुमारी के इस जटिल व्यक्तित्व को 'दिल अपना और प्रीत पराई' फिल्म के शीर्षक गीत में तो थामा ही, इसी फिल्म के सदाबहार गीत 'अजीब दास्तां है ये, कहाँ शुरू कहाँ खत्म' में तो जैसे संपूर्ण मीना कुमारी को ही साकार कर दिया। मीना कुमारी के बारे में यह भी कहा जाता था कि प्रेम के प्रति उनका समर्पण अलौकिक है। लताजी मीना की इस अलौकिकता को 'हम तेरे प्यार में सारा आलम खो बैठे, तुम कहते हो कि ऐसे प्यार को भूल जाओ' में लौकिक रूप में प्रस्तुत करती हैं।

नूतन अपने समय की महान् नायिका थीं। नूतन की मुस्कान में चुम्बकीय आकर्षण था और समग्र व्यक्तित्व में दर्द भरी सादगी। लताजी ने सादगी भरे दर्द को तो 'छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए, ये मुनासिब नहीं आदमी के लिए (सरस्वतीचंद्र) और 'तेरा जाना...दिल के अरमानों का लुट जाना (अनाड़ी) में बताया ही, उनकी मुस्कान भी 'तेरे घर के सामने के 'ये तन्हाई हाए रे हाए जाने फिर आए ना आए, थाम लो बाहें में बड़े दिलचस्प तरीके से दर्शाई। दरअसल इस गीत में एक पंक्ति आती है– 'आज समय आया, मैंने तुझे पाया, मैं लता हूँ तेरे प्यार की। अब लता जी जैसी अंतर्मुखी गायिका को गीत में खुद अपना नाम लेना पड़े, तो वे मुस्कुराएंगी कि नहीं? उनकी यही सहज मुस्कान नूतन के चेहरे पर हूबहू चस्पा हो ही जाती है।

साठ के दशक की प्रमुख नायिका सायरा बानो के लिए उनके द्वारा गाये गए कुछ गीत जैसे 'काश्मीर की कली हूँ मैं गीत से लेकर 'तुम्हें और क्या दूं मैं दिल के सिवाए, तुमको हमारी उमर लग जाए (आई मिलन की बेला), 'दिल विल प्यार व्यार मैं क्या जानूं रे (शागिर्द), 'उनसे मिली नजर के मेरे होश उड़ गए (झुक गया आसमान) और 'भाई बत्तुर भाई बत्तुर अब जाएंगे कितनी दूर (पड़ोसन) तक के माध्यम से दर्शकों के सामने साक्षात् उपस्थित कर दिया।

हालांकि रेखा पर फिल्माए गानों में अक्सर लोग 'उमराव जान में आशा जी द्वारा गाए कुछ महत्वपूर्ण लोकप्रिय गानों (दिल चीज क्या है और ये क्या जगह है दोस्तों) को याद करते हैं, लेकिन लता जी ने 'घर फिल्म में रेखा की सुंदरता, चंचलता और गंभीरता जैसे बहु–विध किरदारों को 'तेरे बिना जिया जाए ना और 'आजकल पाँव जमीं पर नहीं पड़ते मेरे जैसे गीतों में उसी अंदाज में प्रस्तुत किया। यही नहीं, लताजी ने नर्गिस की अल्हड़ता 'पंछी बनूं, उड़ती फिरूं, मस्त गगन में (चोरी चोरी), हेमा मालिनी की शोखी 'ए बी सी डी छोड़ो (राजा जानी), श्रीदेवी का जोश 'मैं तेरी दुश्मन, दुश्मन तू मेरा (नगीना), डिम्पल की मासूमियत 'अक्सर कोई लड़की इस हाल में (बॉबी) दर्शाने में कहीं चूक नहीं की।

प्रसंगवश यह बताना भी गैरजरूरी न होगा कि सत्तर के दशक की प्रखर अभिनेत्री जया भादुड़ी को जब 'अभिमान में एक गायिका का रोल मिला, तो शूटिंग से पहले वे लताजी की रिकॉर्डिंग देखने गईं और वहाँ उन्होंने यह नोट किया कि लता जी गाते समय कैसी दिखती हैं, क्या पहनती हैं और उनके हाव–भाव कैसे हैं। उसके बाद जया ने लता जी की ही तरह सफेद साड़ी पहनी, लता जी की ही तरह लंबी चोटी बनाई और एक गायिका के रूप में दर्शकों के समक्ष उतनी ही गरिमा से उपस्थित हुईं। फिल्म के 'पिया बिना, 'अब तो है तुमसे और 'तेरे मेरे मिलन की ये रैना गीतों में यह तय कर पाना मुश्किल हो जाता है कि लता जी जया के लिए गा रही हैं या जया लता जी के लिए अभिनय कर रही हैं।

हिंदी सिनेमा के इतिहास में अच्छा गाने वाली गायिकाएं तो बहुत आई हैं, लेकिन सही अर्थों में यदि सर्वकालीन सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका का खिताब किसी को देना होगा, तो वे लता जी ही होंगी। शायद इसीलिए अनिल बिश्वास जैसे अग्रज संगीतकार उनके गीत सुनते हुए यही कहते थे कि लता तो लता है।

अनुरोध

यदि आप अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराएंगे तो हम इसके लिए आपके आभारी होंगे। निःसंदेह इससे पत्रिका के आगामी अंकों को और सुन्दर तथा सुरुचिपूर्ण बनाने में हमें सहायता मिलेगी। आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी। पत्रिका में सभी स्टाफ सदस्यों, उनके परिवारजनों तथा सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्यों की रचनाएँ भी स्वीकार्य हैं। आप सभी के सहयोग से हम इस पत्रिका को एक पारिवारिक पत्रिका बनाने की ओर अग्रसर रहेंगे।

अंचल कार्यालयों में नियुक्त पीएनबी स्टाफ जर्नल के प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि वे अपने संबंधित मंडल कार्यालयों में नियुक्त अधिकारियों से पत्रिका में प्रकाशन योग्य सामग्री एकत्रित करके ई–मेल pnbstaffjournal@mail.pnb.co.in पर या सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, द्वारका, नई दिल्ली को भिजवाना सुनिश्चित करें।

पीएनबी प्रतिभा के आगामी दो अंक बैंकिंग और ग्राहक संबंध (अप्रैल–जून 2022), राजभाषा विशेषांक (जुलाई–सितंबर 2022), के रूप में प्रकाशित किये जाएंगे।

बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन की आवश्यकता

हरगोविंद सी. मकवाना, अधिकारी, क्षेत्रीय वसूली केंद्र, अहमदाबाद

प्रस्तावना:

एक कहावत है ''जितना अधिक जोखिम उतना अधिक लाभ अथवा कम जोखिम कम लाभ।'' बैंकों का तो प्रमुख कार्य ही वित्त प्रदान करना है। जहाँ वित्त होगा वहाँ जोखिम भी अधिक होगा। अतएव अधिक जोखिम लेना कभी–कभी तो इतना अहितकर हो जाता है कि संस्था को अपनी ही बलि देने की नौबत आ जाती है। इस प्रकार विगत वर्षों में एक सफल बैंक के साथ असफल बैंकों का समामेलन किया जा रहा है, यही ''जोखिम प्रबंधन'' की आवश्यकता का जीवंत उदाहरण है।

बैंकिंग क्षेत्र में जोखिम हमेशा ही बने रहते हैं। जोखिम के प्रबंधन पर ही बैंकों का लाभ–हानि निर्भर करता है। जोखिमों का पूर्वानुमान लगाकर उसके अनुसार ही बैंकों के ऋण–अग्रिम दिए जाएं, उनके लिए प्रावधान की क्षमता का आंकलन करना अत्यावश्यक एवं अनिवार्य भी है अथवा संभावित जोखिम बैंक की क्षमता से अधिक हो तो उसमें परिचालन करने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार प्रबंधन तंत्र की दूरदर्शिता और शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता के अनुसार जोखिम का प्रबंधन किया जा सकता है। ''किसी घटना के घटित होने या न होने के कारण होने वाली संभाव्य हानि को जोखिम कहते हैं।'' बैंकिंग में जोखिम एक अंतर्निहित और अपरिहार्य तत्व होता है।

जोखिम प्रबंधन की परिभाषाएं:

''जोखिम प्रबंधन का तात्पर्य यह है कि बैंकिंग में भावी जोखिम की पहचान, मूल्यांकन और प्राथमिकीकरण के साथ–साथ संसाधनों का समय पर उचित रूप से समन्वित एवं आर्थिक प्रयोग करके भावी हानिकारक/नुकसानदायक घटनाओं की संभाव्यता अथवा असर को अधिक से न्यूनतम करना, उचित समय पर इनको परखना एवं इनका नियंत्रण करना शामिल है।''

''जोखिम प्रबंधन का दूसरा अर्थ भावी जोखिम वित्तीय बाजारों में अनिश्चितता, ऋण जोखिम, बैंकिंग रोजमर्रा के कार्यों में घटती घटनाएं/दुर्घटनाएं, प्राकृतिक कारणों एवं आपदाओं तथा जानबूझकर बैंक ऋण फंसाने वाले (जानबूझकर ऋण भुगतान चूककर्ता) तत्वों को तथा संभाव्य हानियों पर काबू पाकर सुचारु रूप से नियंत्रण करना।''

जोखिम प्रबंधन बैंकिंग में हो रहे कार्यों पर उचित रूप से प्रबंध एवं निगरानी रखना तथा सुरक्षा, अभियांत्रिकी, वित्तीय प्रक्रियाओं, वित्तीय विभागों, बीमाकृत आस्तियों का आकंलन करना, सूचना प्रौद्योगिकी के तहत सृजित उत्पादों के दुरूपयोग पर कड़ी नजर रखना तथा बैंकिंग में हो रहे साईबर–अपराधों को रोकना तथा स्टाफ सदस्यों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का ध्यान रख कर बैंकिंग को ऐसे जोखिमों से बचाना ही ''जोखिम प्रबंधन'' का कार्य है।

बैंकिंग जगत में जोखिम प्रबंधन संभावित वित्तीय जोखिमों/हानियों की अग्रिम रूप से पहचान करने, उनका विश्लेषण करने तथा जोखिम/हानियों को कम करने तथा जोखिमों को रोकने या नियंत्रण के लिए प्रभावी कदम उठाने के अभ्यास को प्रदर्शित करता है। अतः जोखिम प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य अनिश्चितता को सुनिश्चित करना है।

उपरोक्त जोखिम प्रबंधन की परिभाषाओं से फलीभूत होता है कि बैंकिंग प्रणाली में एक आदर्श जोखिम प्रबंधन में यह निश्चित करना होगा कि सबसे बड़ी हानि और सबसे पहले होने वाली हानि को सबसे बड़ी संभावना और अवसर तथा बाद वाले जोखिम और कम नुकसान की कम संभावना के साथ अवरोही कर्म में बदलना है। संसाधनों को आबंटित करने में जोखिम प्रबंधन भी शामिल है। यह अवसर लागत का विचार है कि जोखिम प्रबंधन पर खर्च किये गए संसाधन अधिक लाभकारी गतिविधियों पर खर्च कर सकते हैं। आदर्श जोखिम प्रबंधन के अधिक खर्च को कम करता है और जोखिम के नकारात्मक प्रभाव को भी कम करता है।

जोखिम प्रबंधन के अनुसार जोखिमों के प्रकार:

बैंकिंग में जिन जोखिमों का सामना करना पड़ता है, उन्हें हम कई प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं। जैसे वित्तीय जोखिम

एवं गैर–वित्तीय जोखिम, अपरिहार्य जोखिम एवं परिहार्य जोखिम, सुव्यवस्थित जोखिम एवं अंतरस्थ जोखिम। बैंकिंग में अंतर्निहित प्रमुख जोखिम निम्नलिखित हैः–

1. **ऋण जोखिमः** बैंकों की आय में प्रमुख स्रोत बैंक द्वारा दिए गए ऋण होते हैं। ऋण दिए जाने के बाद ऋण एनपीए होने की संभावनाएं हमेशा बनी रहती हैं। अतः ऋणों में किये गए निवेश का जोखिम, बैंकों के लिए सबसे बड़ा जोखिम हैं क्योंकि ऋणों के एनपीए श्रेणी में तब्दील होने से हम बैंकर न तो एनपीए ऋण की किस्त की वसूली कर सकते हैं और न तो उस पर ब्याज के रूप में आय अर्जित कर सकते हैं। अतः ऋण एनपीए होने से बैंकों को दो प्रकार का जोखिम उठाना पड़ता है। इसलिए बैंकिंग में 'जोखिम प्रबंधन' की अहम् भूमिका है। जिसका उद्देश्य ऋण खातों को एनपीए श्रेणी में तब्दील होने से बचाना है।

2. **मूल्य जोखिमः** बैंक ग्राहकों से जमा राशियों को प्राप्त करके उन्हें सावधि जमा के रूप में रखते हैं। अतः ये सावधि जमा की राशियों पर ग्राहकों को बैंकों द्वारा ग्राहकों की आवश्यकता अनुसार ऋण प्रदान करते हैं। जमाराशियों पर दिए जाने वाले ब्याज तथा ऋणों पर लिए जाने वाले ब्याज का अंतर ही बैंक का लाभ होता है। यदि लंबी अवधि के लिए ली गई सावधि जमा राशियों पर उच्च ब्याज दर निर्धारित होती है और ऋण पर प्राप्त ब्याज दर के मार्जिन में बहुत कम फर्क पड़ता है, तो बैंक को ज्यादा फायदा नहीं मिलता है। इसके परिणामस्वरूप बैंक के लिए आस्तियों और देयताओं की कीमत में होने वाले परिवर्तन के कारण जोखिम बढ़ जाता है। अतः ज्यादा ब्याज (आय) अर्जित करने के लिए 'जोखिम–प्रबंधन' की आवश्यकता पड़ती है। अतएव, बैंकों द्वारा एनएससी, किदिप तथा इसमें 'जोखिम' की मात्रा भी बिल्कुल नही होती है और बैंक के लिए चिंता का विषय नहीं बनता है क्योंकि ये ऋण 100% सुरक्षित है तथा 'एनपीए' की श्रेणी से मुक्त भी होते हैं।

3. **तरलता जोखिमः** मूल्यों में उतार–चढ़ाव के कारण बाजार में आस्तियों का हस्तांतरण करते समय बैंकों को हानि हो सकती है, इसको तरलता जोखिम कहा जाता है। तरलता जोखिम को दूसरे अर्थ में 'ब्याज दर जोखिम' भी कहते हैं। ब्याजदर जोखिम निवल ब्याज आमदनी की अति संवेदनशीलता से जुड़ा है और ऋण एवं निवेश ब्याज दरों में परिवर्तनों से उत्पन्न स्थिति को दर्शाता है। यह परिपक्वता का जोखिम परिपक्वता और ब्याज दर संरचना के बीच तालमेल न होने के कारण उत्पन्न होता है। ब्याज दर में उच्च वचनबद्धता वाली ब्याज दरों से तरलता संकट पैदा हो सकता है, इसलिए ऐसी स्थिति या जोखिम से बचने के लिए 'जोखिम प्रबंधन' एक महत्वपूर्ण साधन है।

4. **परिचालन जोखिमः** बैंकों को अपना कार्य संचालित करने के लिए अपने व्यवसाय से संबंधित परिचालन–कार्य करने होते हैं। कभी–कभी अपेक्षा के अनुसार कार्य न होने या लक्ष्य प्राप्त न होने पर अपेक्षित लाभ प्राप्त नहीं हो पाते। इसमें प्रौद्योगिकी, श्रम–शक्ति, क्रियाविधियों, आदि सहित परिचालनगत प्रक्रियाओं से उत्पन्न जोखिम शामिल होता है।

5. **प्राकृतिक जोखिमः** प्राकृतिक जोखिम प्राकृतिक घटनाओं के घटित होने से उत्पन्न होता हैं। अतः प्राकृतिक जोखिम आमतौर पर बैंकों के नियंत्रण से बाहर है। जैसे अतिवृष्टि, बाढ़, तूफान, सूखा, भूकंप, बिजली तथा अत्यधिक ठण्ड के कारण होने वाले जोखिम/हानियाँ प्राकृतिक जोखिम हैं। इसके अंतर्गत किसानों की फसलों का विनाश होता है, भूकंप से मकान तथा अन्य स्थायी एवं अस्थायी आकस्मिकताओं से मनुष्यों का जीवन भी समाप्त हो जाता है। सूखा पड़ने से पशुपालन, डेयरी फार्म अन्य कृषि से सम्बंधित गतिविधियों/कार्यकलापों का विध्वंस हो जाता है ऐसी भयावह प्राकृतिक आपदाओं में बैंक द्वारा दिए गए विभिन्न प्रकार के ऋणों की वसूली में बहुत कठिनाइयाँ/जोखिम आते हैं। लेकिन वर्तमान सुविधाओं जैसे फसल बीमा, वाहन बीमा, मकान बीमा यानि की बीमा का सहारा लेकर जोखिम को कम एवं नियंत्रित किया जा सकता है। जोखिम का प्रभाव कम हो सकता है जोकि एक सफल जोखिम प्रबंधन में अच्छी भूमिका अदा कर सकते हैं।

6. **निर्गमकर्ता जोखिमः** निर्गमकर्ता जोखिम को बाजार जोखिम भी कहते हैं। लिखत जारी करने वाली बैंक की वित्तीय स्थिति और स्थायित्व इसके मूल्यों तथा वसूली की स्थिति पर प्रभाव डाल सकते हैं। बैंकों द्वारा जारी लिखतों में निहित जोखिम इसका उदाहरण है। यदि किसी भी बैंक के शेयरों में निवेश करने के बाद उस पर अपेक्षित लाभ प्राप्त नहीं होता या वृद्धि प्राप्त नहीं होती तो बैंक को हानि का जोखिम हो सकता है। इसी तरह, सारे बाजार को प्रभावित करने वाली घटनाओं के कारण मूल्य में कमी वाले निवेश का जोखिम बाजार जोखिम

कहलाता है। इसका उदाहरण निम्न हैं: 1. इक्विटी (शेयर) जोखिम (2) ब्याज दर जोखिम (बांड) और मुद्रा जोखिम (विदेशी–मुद्रा निवेश) आदि। इस प्रकार के जोखिम मूल रूप से समय और स्थान के संबंध में मूल्य में उतार–चढ़ाव के कारण होते हैं। ऐसे जोखिमों के सामने सुरक्षा प्राप्त करने में तथा निर्गमकर्ता/बाजार जोखिम में कमी लाने में 'जोखिम प्रबंधन' की बड़ी आवश्यकता है।

7. **विनिमय दर जोखिम:** बैंकों द्वारा विदेशी मुद्रा विनिमय कारोबार किये जाते हैं। यदि फॉरवर्ड कांट्रेक्ट किसी निर्धारित दर पर किये जाने पर उसकी दर बाद में कम हो गई तो बैंक को बड़ी हानि का जोखिम हो सकता है। यह विनिमय दरों के परिवर्तन से प्रभावित होता है। ऐसी परिस्थितियों में जोखिम को कम करने के लिए 'जोखिम प्रबंधन' की आवश्यकता और उसके मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ती है, जो एक महत्वपूर्ण बात है।

8. **प्रौद्योगिकी जोखिम:** प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नित्य नवीन खोजों तथा अन्वेषणों से प्रौद्योगिकी अप्रासंगिक हो जाती है जिसके कारण उसमें अप्रचलन, बेमेल होने, व्यवधान आदि का जोखिम उत्पन्न हो जाता है। अतएव बैंकों द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी के तहत अनेक इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों का सृजन किया गया है, जिनकों 'वैकल्पिक डिलीवरी चैनल' के शीर्षक के अंतर्गत समाविष्ट किया गया है। लेकिन वर्तमान में नए–नए साइबर अपराध के जोखिम सामने आ रहे हैं, जैसे एटीएम (क्लोन) द्वारा तथा अनजान व्यक्ति स्वयं को निश्चित बैंक का प्रबंधक/अधिकारी/मार्केटिंग अधिकारी बता कर ग्राहकों के एटीएम का नंबर, सीवीवी नंबर, देय तिथि, जन्म तारीख, खाता संख्या जैसी अनेक बातें जो ग्राहक को गोपनीय रखनी होती है, इनकी जानकारी ग्राहक से सरलता से प्राप्त करके ग्राहकों के खातों से लाखों रुपये निकाल लेते हैं। बाद में ग्राहक को पता चलता है कि उसके साथ धोखा–धड़ी हुई है। दिन–प्रतिदिन 'साइबर अपराध' की संख्या में बहुत वृद्धि हो रही है। अतः साइबर–अपराधों के जोखिमों में नियंत्रण के लिए 'जोखिम प्रबंधन' आवश्यक है।

9. **समामेलन/विलय का जोखिम:** वर्तमान प्रतियोगिता के युग में छोटे बैंकों का परिचालन छोटे पैमाने पर होता है और कुछ परिचालनों में हानि होने पर उनके अस्तित्व को खतरा हो सकता है। वर्तमान में कुछ बैंकों द्वारा अपनी पूँजी और आकार में वृद्धि किये जाने के कारण अधिकाधिक समामेलन/ विलयन और अधिग्रहण जैसी गतिविधियों को बल मिला है, जिससे छोटे आकर के / घाटे में चल रहे बैंकों के बंद हो जाने का जोखिम उत्पन्न हो सकता है। अतः बैंकों को समामेलन/ विलय/हानियों से बचाने के लिए 'जोखिम प्रबंधन' की बड़ी आवश्यकता है। यह एक निर्विवाद सत्य है।

10. **मानव संसाधन जोखिम:** किसी भी बैंक के परिचालन और लाभ–हानि में उसके कर्मियों यानि कर्मचारीगण का महत्वपूर्ण योगदान होता है। कई बार श्रमिक अशांति, हड़ताल, बीमारी, तालाबंदी, शीर्ष कार्यपालकों द्वारा सामूहिक रूप से त्यागपत्र, आदि के कारण मानव संसाधन जोखिम उत्पन्न हो सकता है। इसलिए बैंक प्रबंधन एवं कर्मचारियों के बीच अच्छा संबंध बनाये रखने में 'जोखिम प्रबंधन' अहम् भूमिका अदा करता है।

11. **प्रत्ययी जोखिम और विधिक जोखिम:** भावी आकस्मिक देयताओं के भुगतान का आदेश मिलता है तो यह आकस्मिक देयताएं कोर्ट–कचहरी द्वारा उक्त देयताओं का बैंक को भुगतान करना पड़ता है, इन देयताओं से उत्पन्न होने वाला जोखिम प्रत्ययी जोखिम कहलाता है। इसी तरह कानून में किसी परिवर्तन के किए जाने के कारण उत्पन्न जोखिम को विधिक जोखिम कहते हैं। अतः प्रत्ययी जोखिम और विधिक जोखिमों में कमी करने हेतु "जोखिम प्रबंधन" की बहुत आवश्यकता है।

जोखिम प्रबंधन प्रक्रियाः–

जोखिम प्रबंधन की प्रक्रिया में निम्नलिखित शामिल हैः–

1. **जोखिम की पहचान:** बैंकों को बड़ी इकाइयों को ऋण देते समय या उनमें निवेश करते समय उनमें संभावित जोखिम का भी आंकलन करना चाहिए और जोखिम ले सकने की क्षमता तक ही उनमें निवेश किया जाना चाहिए। किसी जोखिम को हानिकारक सिद्ध होने से पूर्व ही उसका पता लगाने के लिए समुचित जोखिम नेटवर्क की पहचान करना और प्रक्रिया को निरंतर जारी रखना आवश्यक है।

2. **जोखिम मापनः–** किसी निवेश या परिचालन में कितना जोखिम हो सकता है, इसका भी आंकलन किया जाना चाहिए। जोखिम निर्धारण का अर्थ विभिन्न परिदृश्यों में

किसी संभाव्य हानि की मात्रा, संभाव्यता और उसके समय का अनुमान लगाने से है, आस्ति देयता प्रबंधन जोखिम मापने का एक अच्छा उदाहरण है।

3. **जोखिम नियंत्रणः** जोखिम के घटकों की पहचान और उनका निर्धारण करने के बाद अगले चरण में जोखिम पर नियंत्रण करना शामिल है। जोखिम नियंत्रण के उपलब्ध विकल्प निम्न प्रकार हैं।

   क. प्रभाव पड़ने से बचाव करें।

   ख. इसकी तीक्ष्णता कम करके इसके प्रभाव को कम करें।

   ग. जोखिमयुक्त क्षेत्र के संकेद्रण से बचें।

   घ. जोखिमों से सुरक्षा करने हेतु जोखिम प्रबंधन सरीखे कार्य और उपाय अपनाएं।

नकदी जोखिम एवं एटीएम पर हमला आदि का जोखिमः –

नकदी जोखिम एवं एटीएम पर हमला आदि के जोखिम के बारे में चर्चा करना नितांत आवश्यक है क्योंकि अब हाल के समय में हमें समाचार पत्रों, दूरदर्शन और रेडियो यानि दृश्य एवं श्रव्य सोशल मीडिया द्वारा पता चलता है कि बैंक में नकद की डकैती तथा एटीएम की तोड़फोड़ करके नकदी की लूटपाट की जाती है। इसके अतिरिक्त नकदी राशि के साथ बैंककर्मी की हत्या का भी जोखिम बना रहता है। इसी प्रकार कई बैंकों के एटीएम तोड़कर नकद राशि निकाल कर बैंक डकैती की जाती है। इस जोखिम के सामने सुरक्षा प्राप्ति हेतु बैंक शाखा में प्रबंधक, अधिकारी तथा खजांची की कुर्सियों के पास एक स्विच रखा जाता है और ऐसे लोग जो बैंक डकैती करने हेतु बैंक परिसर में दाखिल होते हैं और उसके इरादे का पता चलने पर तुरंत ये स्विच सतर्कता से दबाने से शाखा में तुरंत सायरन बजने लगता है। इससे शाखा परिसर में स्थित स्टाफ सदस्य तथा ग्राहकजन सतर्क हो जाते हैं। शाखा के बाहर भी लोगों की भीड़ जमा हो जाती है। अतः पुलिस के आ जाने और पकड़े जाने के डर से बैंक डकैती करने वाले लोग फटाफट शाखा को छोड़कर तथा एटीएम को छोड़कर भाग जाते हैं और ऐसे जोखिम से बैंक बच जाता है। अतः ऐसे जोखिमों की रोकथाम हेतु 'जोखिम प्रबंधन' की आवश्यकता अहम् भूमिका अदा करती है एवं इसका योगदान भी महत्वपूर्ण है।

जोखिम प्रबंधन एवं बैंकिंग उद्योगः–

बैंकिंग कारोबार सामान्यतः जनता द्वारा बैंक में जमा की गई राशियों पर ही चलता है। अतः बैंक जनता की जमा राशियों के संरक्षक है। किसी भी बैंक की साख बनने में बहुत समय लगता है और जमाकर्ताओं या ग्राहकों के बीच आस्था और विश्वास पैदा करने में समय लगता है। बैंकिंग उद्योग की साख या उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा पर केवल निदेशक मंडल को ही नहीं, बल्कि बैंकिंग उद्योग के वरिष्ठ प्रबंधक और कर्मचारियों को भी ध्यान देना चाहिए। सुदृढ़ पूँजीगत आधार और उत्कृष्ट जोखिम प्रबंधन श्रेष्ठ बैंकिंग के आधार स्तंभ हैं। इनमें किसी प्रकार की कमी या कमजोरी सम्पूर्ण बैंकिंग उद्योग को कमजोर बना देती है। यही कारण है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इन बातों पर अधिक जोर दिया जाता है।

जोखिम प्रबंधन में बैंक पर्यवक्षकों की भूमिकाः –

बैंक के किसी भी कारोबार में नियंत्रण एवं निगरानी रखने वाले व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बैंकों में ऋण जोखिम की पहचान, माप, निगरानी एवं नियंत्रण प्रणाली जोखिम प्रबंधन प्रणाली का अति महत्वपूर्ण हिस्सा है। पर्यवेक्षक यह सुनिश्चित करें कि उक्त सभी विभाग अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह कर रहें हैं। पर्यवेक्षकों द्वारा बैंकों में ऋण प्रदान करने संबंधी कार्य–प्रणालियों, प्रक्रिया, नीति एवं निगरानी प्रणाली तथा ऋण संविभाग के निरंतर प्रबंधन का स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन किया जाना चाहिए। जोखिम से बचने के लिए या उससे बचना संभव न हो तो उस संभावित नुकसान को सहने के लिए हमें परिचालनगत और नीतिगत दृष्टि से तैयार रहना चाहिए और जोखिम के मूल कारण की पहचान करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए तथा अविरल प्रयास जारी रखने चाहिए। अतः पर्यवेक्षकों को अपनी भूमिका महत्वपूर्ण तरीके से अदा करने में 'जोखिम प्रबंधन' की आवश्यकता बढ़ जाती है।

अतएव, सभी प्रकार के बैंकिंग क्रियाकलापों में जोखिम निहित है और यह बैंकिंग कारोबार का एक अभिन्न अंग है। इसीलिए बैंकिंग में वर्तमान सभी प्रकार के जोखिमों की पहचान, माप एवं निगरानी और नियंत्रण के लिए जोखिम प्रबंधन की नितांत रूप से आवश्यकता है, जिसको हम नजर अंदाज नहीं कर सकते।

हरिद्वार (कुम्भ मेला) – एक जीवंत यात्रा

खुशबू जैन, वरिष्ठ प्रबंधक, एमसीसी, (रैम) रोहतक मंडल

बात उस समय की है जब हम अप्रैल 2021 में हरिद्वार घूमने गये थे। मैं और मेरा परिवार कुम्भ मेले के दर्शन हेतु गये थे। हरिद्वार जिसे हरी की पावन नगरी कहा जाता है। यह स्थान इसलिए भी पवित्र माना जाता है क्योंकि यहाँ पावन गंगा कई स्थानों से होकर बहती है। यह स्थान हरी का वास है। यहाँ की शांत हवाएं और मनमोहक मौसम अपनी ओर खींचते हैं। यहाँ के चाट पकोड़े, गोलगप्पे, टिक्की इत्यादि बहुत मशहूर है। दूर–दूर से लोग इनका लुफ्त लेने आते हैं।

हमारी यात्रा का आरंभः

कोरोना काल पिछले एक साल से यानि 2020 से चल ही रहा था पर कब तक घर पर बैठे रहें। सोचा यह अच्छा अवसर होगा अब 2021 है, कहीं घूमा जाये। तो परिवार संग हरिद्वार के कुम्भ मेले में घूमने की इच्छा हुई। यह कुम्भ मेला इस बार कुछ खास था। ऑफिस से अब छुट्टी भी अनुमोदित करवानी थी। मेरे बॉस ने सुनते ही कहा तुम्हें डर नहीं लगता खुशबू इस कोरोना काल में बाहर घूमने जा रही हो। तुम्हें मरने से डर नही लगता क्या? पर मैने भी उन्हें समझाते हुए कहा कि जब ईश्वर की कृपा होती है तो हम उस ओर चल ही लेते हैं। मेरे बॉस ने भी मुझे संभलकर जाने को कहा और कहा कि पूरे ऑफिस की ओर से दर्शन करके आना। फिर हरिद्वार की ओर हमने प्रस्थान किया। इस कोविड काल में दूर की यात्रा करना थोड़ा टेढ़ा काम था। जगह–जगह कोरोना टेस्ट, नेगेटिव रिपोर्ट और न जाने क्या–क्या। पर यह सब हमारी सुरक्षा के लिए जरूरी भी था। सरकार ने हमारी सुरक्षा के लिए कदम–कदम पर संसाधन उपलब्ध करवाए हुए थे।

यात्रा–एक रोमांचक सफरः

जिस दिन हमें हरिद्वार के लिए प्रस्थान करना था उसी दिन कोविड की घोषणा हुई और डायरेक्ट बसें चलना बंद हो गयीं। हमारे होटल्स पहले से ही सब बुक थे। फिर क्या था हमने हार नहीं मानी अब जाना है तो जाना ही है फिर कितनी भी चुनौतियाँ आयें और हम चल पड़े। सफर कुछ यूँ शुरू हुआ कि 12 अप्रैल को हम रोहतक से बस में रवाना हुए। वहाँ से पानीपत गये। फिर पानीपत से सीधा हरिद्वार के लिए रवाना हुए। आधी रात को हम हरिद्वार पहुँचे। बस और ट्रेन से यात्रा की। आम जन जीवन नजदीक से देखा और महसूस किया। फिर हम बस से उतरे और बीच में एक रेस्टोरेंट पर रूके और बहुत स्वादिष्ट भोजन का लुफ्त लिया। खाना क्या था, एक दम घर जैसा। बहुत ही स्वादिष्ट दाल–मखनी, रायता, कुरकुरी रोटियां, दम आलू, बहुत ही कम दाम में इतना स्वादिष्ट खाना। शायद कई दिनों बाद खाया था। उस कोविड काल के भी अपने एहसास थे। हर

नियम का ध्यान रखते हुए हम भगवान के द्वार की ओर बढ़ रहे थे। ऐसा लग रहा था कि ईश्वर की असीम कृपा हम पर बरस रही है। यह वाकई अनोखा अनुभव था जो हम कभी सोच भी नहीं सकते थे। सफर में ही कई लोग मिले, जो अपने से ही थे। उनके साथ फोटोज लिए, बातें कीं, सफर का आनंद लिया।

बेहद रोमांचक सफर रहा। रास्ते में आती परेशानियाँ हमारा इम्तेहान लेती हैं। एकाएक मौसम बदला। उधर ठण्ड का माहौल था। गर्मी से सर्दी में प्रवेश जाहिर तौर पर था। ऐसे में हमारे शरीर पर इसका असर होता है। इसलिए अपना ध्यान रखना होता है। थोड़ी सर्दी जुकाम होने का खतरा बना रहता है और आज के समय में कोविड जैसी भयंकर बीमारी का भी खतरा हो गया है। आयुर्वेदिक तरीके अपनाने होंगे। नेचुरल रहकर ही काम चल सकता है। प्रकृति से प्रेम करने की आवश्यकता है। हमारा स्वभाव प्राकृतिक होता है और अगर हम इसके विपरीत जाने की कोशिश करते हैं तो यह बहुत दुःखदायी होता है। आखिरकार हम हरिद्वार पहुँच ही गए और वहीं रास्ते में ही हमने भोजन किया।

इतना सस्ता और स्वादिष्ट खाना हरिद्वार की तरफ का ही हो सकता है। आत्मा तृप्त हुई। फिर बड़े आनंद से हर की पौड़ी की ओर प्रस्थान किया। वहाँ का नजारा देखते ही बनता था। बहुत ही खूबसूरत नजारा था। रात का वक्त था। सुनसान रास्ता था। कोई भी होटल नही मिल रहा था। फिर कहते हैं न शिद्दत से कोई चीज माँगो तो मिल जाती है। आखिरकार हर की पौड़ी के बिल्कुल नजदीक हम होटल में ठहरे। वहाँ रात भर आराम से रहे। गपशप के माहौल के बीच में सुबह का पता ही नही चला। फिर क्या, शाही स्नान जो करना था तो सुबह मेरे पति देव जी, मेरे देवर जी उठे और चल दिए, बर्फ जैसे शीतल पानी वाली गंगा मैया में डुबकी लगाने। कराहते हुए डूबकी लगाई फिर धीरे–धीरे मजा आया, पर वहाँ कोरोना की वजह से बहुत बाधाएं थी। मास्क लगाकर ही जाना पड़ता था पर गंगा जी के दर्शन बहुत अच्छे हुए।

हरिद्वार – शाही गंगा स्नान :

वहाँ शाही स्नान करने के लिए लोग दूर–दूर से आते हैं। कहते हैं वहाँ के कण–कण में हरी का वास है। वहाँ साक्षात् ईश्वर रहते हैं और ऐसे में गंगा मैया के दर्शन अनोखा अनुभव था। मैं पहली बार किसी कुम्भ के मेले में गयी थी। थोड़ा डर था, पर वहाँ जाकर डर जैसी कोई चीज नहीं लगी। वहाँ पर हर एक डुबकी का अपना ही आनंद है। जल बहुत ही ठंडा था, पर हरी ओम करते हुए हमने कई डुबकियाँ लगाई। हम काँप भी रहे थे और पानी का मजा भी ले रहे थे। सुबह–सुबह चार बजे उठकर वहाँ कई लोग स्नान के लिए आते थे। वो नजारा कभी न भूलने वाला नजारा था। फिर क्या था, ठंडे–ठंडे पानी से नहा लेने के बाद कुछ गरमा गरम तो खाने का मन करता ही है।

हरिद्वार की मशहूर टिक्की, गोलगप्पों, गन्ने का जूस, और वहाँ का मशहूर जलजीरा पानी उसका तो कोई जवाब ही नहीं। साथ ही पहले गंगा मैया के पानी में नहाना, डुबकी लगाना फिर चाट पकोड़े खाना। सचमुच बहुत ही आनंदमयी समां था। ऐसे ही मस्ती में मगन हमने सारे दिन निकाल दिए पर कोरोना काल की वजह से भीड़ बहुत कम थी। क्योंकि अक्सर ऐसा कहा जाता है कि कुम्भ के मेले में बहुत भीड़ होती है और वहाँ खो जाने का खतरा भी बना रहता है परन्तु हमने बहुत आनंद के साथ दर्शन किये। जो शाही स्नान का दिन था और जो कई सालों में आया था उस दिन की जो खासियत थी उस वक्त हम वहाँ मौजूद थे। नागा बाबाओं का झुण्ड देखते ही बनता था। जोकि एक के बाद एक शाही स्नान के लिए जा रहे थे, पर आम आदमी के लिए वहाँ जाने की मनाही थी। वो केवल सुबह 10 बजे तक ही स्नान कर सकते थे। इसलिए हमने अपने होटल की छत पर खड़े होकर वहाँ से दर्शन किये थे जो अपने आप में ही अद्भूत नजारा था। शायद मैंने यह पहली बार देखा था। अलग–अलग कतारों में सब एक के बाद एक नागा बाबा आ रहे थे और गंगा जी में डुबकी लगाकर वापस प्रस्थान कर रहे थे। सुरक्षा व्यवस्था काफी अच्छी थी।

वहाँ अन्नपूर्णा नाम का होटल जो हमारे लॉज के बिल्कुल सामने था। उसके आलू के परांठे बहुत स्वादिष्ट थे। हमने खूब लुफ्त उठाकर खाए। ऐसे ही छोटे–छोटे पल आनंद पूर्वक बीत गये। हर पल का अपना ही मजा था और एक अलग ही रोमांच था।

हरिद्वार का बाजार:

वहाँ का बाजार बहुत ही सुन्दर सजा हुआ था। जो मैंने कभी नहीं देखा था। चारों ओर रंग बिरंगी झाल्लर, नये–नये डिजाईन के जेवर, सब बहुत अच्छे लग रहे थे। वहाँ अति सुन्दर गहने, मालाएं, कपड़े, और सब कुछ बहुत ही अच्छा और किफायती दामों पर मिल रहा था। हमने जमकर खरीदारी की और ऐसा लग रहा था कि हम कहीं वादियों में है। रास्ते में एक हेअरकट की दुकान भी थी। मैंने बहुत सुन्दर हेअरकट वहाँ से करवाया। सबसे अच्छी बात, वहाँ बहुत सुन्दर साज–सजावट का सामान और बहुत ही किफायती दामों पर मिलता है।

मंदिर के दर्शन:

इसी बीच उड़न खटोले से सफर करते हुए मनसा मंदिर, चंडी देवी के मंदिर गये।

मंदिर से शानदार भव्य दर्शन हुए। पूरा हरिद्वार स्वर्ग सा दिखाई दे रहा था। मनसा माँ मंदिर की ओर बढ़ते हुए उड़न घटोले से बीच–बीच में पहाड़, प्रकृति, हवाएं कानों में कुछ कह रही थी। वहाँ बीतें इतिहास की बुदबुदाहट महसूस हो रही थी। ऊपर जाकर नारियल चढ़ाना, माथे पर कुमकुम लगाना, लाल धागा बाँधना, दर्शन करना, मंदिर के चारों ओर घूमना, वहाँ से बेहद खूबसूरत चित्रों का दर्शन। सब कुछ बहुत ही रोमांचकारी और आनंदमयी लग रहा था। ऊपर एक मैगी पॉइंट भी बना हुआ है। गर्मा–गरम मैगी का खूब आनंद लिया और साथ में थी गरम–गरम कॉफी। इसी तरह वापस उड़न घटोले से नीचे आये। सभी मंदिर बहुत ही खूबसूरत थे। चारों तरफ का नजारा बहुत शानदार था।

गंगा जी की आरती:

वहाँ हर की पौड़ी पर गंगा जी की आरती हर शाम होती है। गंगा जी की आरती एक अद्भुत तथा एहसास भरा नजारा था। शंख की आवाज, मधुर कीर्तन की ध्वनि जो कहीं से भी आकर्षित कर ले। इतना प्यारा भजन, प्रभु का गान, गंगा जी की आरती, गंगा तट पर बैठ खुद में ही बहुत आनंद भरा पल है वहाँ एकत्रित भीड़ अपना ही लुफ्त दे रही थी। हम सभी ने मिलकर गंगा जी की आरती गाई। वहाँ बहुत बड़ी–बड़ी ज्योत जलाई जाती हैं। आधा घंटा यह आरती होती है। शाम 7 बजे करीबन वहाँ सभी एकत्रित होकर गंगा मैया की स्तुति करते हैं। धूप, अगरबत्ती, फूलों की खुशबू से पूरा वातावरण महक उठता है।

पतंजलि योगपीठ:

वहीं कुछ दूर पतंजलि योगपीठ भी है। हरिद्वार गये तो वहाँ जाना कैसे भूल सकते थे। उधर भी दर्शन हुए। बहुत ही भव्य ईमारत है। काफी शांत और सुन्दर परन्तु वहाँ इलाज के लिए भी पहले रजिस्ट्रेशन करवाना होता है। मगर जो शांति, सुख देने वाली फिजा वहाँ महसूस की, वो कहीं नहीं की। शायद यह अनुभव कहीं नहीं हो सकता जो कोविड काल के दौरान हरिद्वार कुम्भ मेले का रहा। वाकई में यह यात्रा मेरे जीवन की अविस्मणीय यात्राओं में से एक बन गई जिसके दौरान न केवल मैने प्रकृति का साक्षात्कार किया और गंगा नदी में आस्था की डुबकी भी लगाई। देवी–देवताओं के दर्शन किये बल्कि आध्यात्म और आस्था के कुम्भ मेले को अपने परिवार के साथ देखा जोकि मेरे लिए एक सुखद अनुभव था।

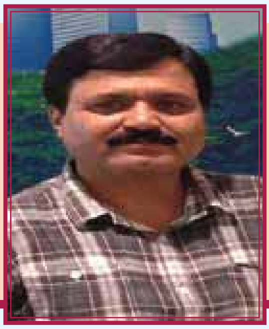

जोखिम प्रबंधन का महत्व

(कुलदीप कुमार कौशल, अग्रणी, जिला प्रबंधक, कांगडा (धर्मशाला)

जोखिम की परिभाषाः जोखिम किसी मूल्यवान चीज के खोने या पाने की संभावना को कहते है। जोखिम के कार्य और प्रक्रिया में अनिश्चितता का तत्व उपस्थित होता है। जोखिम एक विस्तृत अवधारणा है, जिसका विभिन्न परिस्थितियों में अनेक प्रकार से विश्लेषण व प्रबंधन किया जाता है। सरल शब्दों में जोखिम कुछ बुरा होने की संभावना है।

जोखिम में किसी गतिविधि के प्रभाव /निहितार्थ के बारे में अनिश्चितता शामिल होती है, जो मानव मूल्य (जैसे स्वास्थ्य, कल्याण, धन, संपति या पर्यावरण) के संबंध में होती है जो अक्सर नकारात्मक, अवांछनीय परिणामों पर ध्यान केंद्रित करती है। व्यवस्थित जोखिम को अपरिवर्तनीय जोखिम के रूप में भी जाना जाता है, अस्थितरता या बाजार जोखिम समग्र बाजार को प्रभावित करता है। अर्थव्यवस्था में जोखिम व्यापक आर्थिक कारणों से उत्पन्न होने वाला जोखिम है। अनिश्चितता के कारण जोखिम उत्पन्न होता है।

जोखिम प्रबंधन प्रणाली क्या हैः जोखिम प्रबंधन उन सभी जोखिमों को परिभाषित करने की प्रक्रिया है जिसका सामना कंपनी करती है और उन जोखिमों पर नजर रखने और उनका सामना करने के लिये रूपरेखा का निर्माण करती है। जोखिम प्रबंधन का उद्देश्य हानि करने वाले जोखिम को कम करना है।

जोखिम के प्रकारः

जोखिम की चार व्यापक श्रेणियाँ हैं, हालांकि कई व्यापारिक जोखिम इन श्रेणियों में से एक से अधिक हो सकते हैं;

(क) प्राकृतिक जोखिम।

(ख) मानवीय जोखिम।

(ग) बाजार जोखिम।

(घ) देश जोखिम।

(क) प्राकृतिक जोखिम :

प्राकृतिक कारणों द्वारा होने वाला प्राकृतिक जोखिम आमतौर पर हमारे नियंत्रण से परे है। बारिश, बर्फ, बाढ़, तूफान, भूकंप, भूस्खलन, बिजली, कीट और अत्यधिक गर्मी या ठंड के कारण होने वाली हानियाँ कुछ प्राकृतिक जोखिमों के उदाहरण हैं जो मूल रूप से हमारे नियंत्रण से बाहर हैं लेकिन वर्तमान तकनीक को देखते हुए इनमें से कुछ जोखिमों को नियंत्रित किया जा सकता है या उनका प्रभाव कम हो सकता है।

(ख) मानवीय जोखिम :

i) मानवीय जोखिम मानव धोखाधड़ी और अप्रत्याशितता से उत्पन्न होता है। इसमें व्यक्तिगत जोखिम जैसे उच्च कर्मचारी टर्नओवर, बेईमानी, अक्षमता, लापरवाही, बीमारी, दुर्घटना, मृत्यु, हड़ताल आदि शामिल हैं।

ii) ग्राहक के जोखिम जैसे कि ऋण खातों में भुगतान न करना

iii) सरकारी जोखिम ऐसे जोखिम होते हैं जो सरकार की नीतियों में बदलाव से उत्पन्न होते हैं। कराधान, विनियम, मूल्य नियंत्रण, युद्ध, और सीमा शुल्क आदि।

(ग) बाजार जोखिमः

इस तरह के जोखिम मूल रूप से समय और स्थान के संबंध में मूल्य में उतार–चढ़ाव के कारण होते हैं;

समय जोखिमः

समय बीतने के साथ कीमतों में बदलाव, ऐसे उतार–चढ़ाव आपूर्ति और माँग संतुलन से संबंधित हैं जो निम्न प्रकार की स्थितियों को दर्शाता है;

क) बाजार की संतृप्ति।

ख) उपभोक्ता माँग में बदलाव।

ग) नए आविष्कार और विकास।

घ) प्रतियोगियों के कार्य।

ड.) सामान्य व्यापार की स्थिति।

च) मौसमी उतार–चढ़ाव।

स्थान जोखिम:

किसी वस्तु या सेवा की माँग और कीमत किसी स्थान पर स्थिर नहीं रहती है, वे जगह–जगह बदलती रहती है। यह भिन्नता मूल रूप से भौगोलिक स्थितियों और प्रत्येक व्यावसायिक स्थान पर अलग–अलग माँग के कारण उत्पन्न होती है ।

(घ) देश काल तथा परिस्थिति संबंधी जोखिम:

इस जोखिम का उद्देश्य यह तय करना है कि उससे किस देश या पार्टी के साथ व्यापार करना है या नहीं। यदि देश का जोखिम कारक अधिक है (मतलब जोखिम से भरा व्यवसाय) और फिर भी व्यापार करना है तो व्यापारी को वास्तविक शिपमेंट से पहले भुगतान की वसूली के लिए अच्छी तरह से सुनिश्चित करना होगा कि बिक्री किये गये सामान की राशि वापस मिलेगी या नहीं। दूसरी तरफ अगर देश जोखिम कम है (स्थिर देश) तो उस स्थिति में व्यापारी सामान्य व्यापार शर्तों पर काम कर सकता है।

यह जोखिम मुख्य रूप से देश की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति और नीतियों से जुड़ा है। अधिकांश वैश्विक व्यापारिक संगठनों को अपने बैंकरों से इस जोखिम पर गोपनीय रिपोर्ट मँगवानी पड़ती है। कुछ विशेष प्रकार के संगठन भी हैं जो इस प्रकार की जानकारी उपलब्ध कराते हैं।

आम तौर पर विकसित देशों या विकासशील देशों के साथ काम करते समय कोई समस्या नहीं होती है, लेकिन समस्या तब पैदा होती है जब कम विकसित देशों के साथ या राजनीतिक अशांति, आर्थिक अस्थिरता, सैन्य शासन आदि के इतिहास वाले देशों के साथ काम करना पड़ता है।

देश के जोखिम के मूल्यांकन के लिए विचार किए जाने वाले विभिन्न कारकों की जाँच सूची है:

1. विदेशी मुद्रा भंडार।
2. ऋण संग्रहण।
3. विनिमय दरों और प्रमुख हार्ड मुद्राओं पर उतार–चढ़ाव।
4. राजनीतिक स्थिरता और अस्थिरता पर इतिहास और वर्तमान स्थिति।
5. जातीय संघर्ष।
6. ऐसी स्थितियों के लिए नागरिक युद्ध या स्थिति अनुकूल।
7. विदेश व्यापार नीतियाँ।
8. निवेश नीतियाँ।
9. अन्य व्यापारिक देशों के साथ विवाद।
10. गैर टैरिफ बाधाएं।
11. विश्व व्यापार संगठन विवाद निपटान केंद्र में स्थिति (सहित और डंपिंग मामले)।
12. सीमा विवाद जैसे कम तीव्रता वाले युद्ध में सशस्त्र संघर्षों की वजह से।
13. जीडीपी और रक्षा व्यय का अनुपात।
14. मध्यम आय और गरीबी रेखा के संदर्भ में जनसंख्या।
15. बिजली और पानी की आपूर्ति और खपत।
16. औद्योगिक नीतियाँ।
17. विशेष रूप से कर संरचना जो निवेश और प्रत्यावर्तन को प्रभावित करती है।

जोखिमों से निपटने के उपाय:

जोखिम से निपटने के दो उपाय हैं,

1. जोखिम का अवशोषण।
2. जोखिम में कमी।

1. जोखिम का अवशोषण:

जब एक व्यावसायिक संगठन छोटे मुनाफे के लिये अटकलें लगाता है तो होने वाले जोखिम के पूर्ण अवशोषण की नीति भी बना सकता है । इसके लिए पर्याप्त पूँजी की आवश्यकता होती है, जोकि व्यापार में जोखिम के पूर्ण अवशोषण के लिए आवश्यक है। इसके अतिरिक्त व्यापार के सभी क्षेत्रों का व्यापक ज्ञान होना भी आवश्यक है ताकि यह पता रहे कि किये जाने वाले व्यापार में जोखिम का पूर्ण अवशोषण किस प्रकार किया जा सकता है ।

वैश्विक व्यापार में उदाहरण के लिए व्यापारी हमेशा किसी भी आकस्मिकता के लिए पर्याप्त भंडार रखता है जिसके परिणामस्वरूप व्यापारियों का लेनदेन होता है। भंडार की सीमा प्रत्याशित शुद्ध जोखिम के अनुपात में है।

2. जोखिम में कमी:

जोखिम कम करने के लिए कई तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। जो निम्न प्रकार हैः–

(i) इसके संगठनात्मक पैटर्न को बदलना।
(ii) इसके प्रबंधन के तरीकों में सुधार।
(iii) इसके भौतिक उपकरणों की दक्षता में वृद्धि।
(iv) अनुसंधान एवं विकास सुविधाओं का उपयोग करना।

वर्क फ्रॉम होम अवसर या चुनौती

अर्चना कोचर, प्रबंधक, एल.डी.एम. ऑफिस रोहतक

वर्क फ्रॉम एक नजर में

आजकल बाजार का बड़ा चर्चित नाम, वर्क फ्रॉम होम कार्य संस्कृति में एक नए प्रारूप का उद्‌भव है। वर्क फ्रॉम होम अर्थात् किसी भी संस्था द्वारा अपने कर्मचारियों को प्रदान किए गए कार्यों को संस्था द्वारा निश्चित दफ्तर की बजाए रिमोट कंट्रोल द्वारा घर पर ही सुचारू रूप से सकारात्मक तरीके से निष्पादन करना वर्क फ्रॉम होम कहलाता है। जो संकट की घड़ी में एक वरदान के रूप में उभर कर सामने आया है। क्योंकि कोविड–19 के दौरान अचानक लगे लॉकडाउन के कारण जहाँ पल भर के लिए पूरी दुनिया ठहर गई थी। वहाँ सभी पिजरे में बंद परिंदे की मानिंद बाहर निकलने के लिए पँख फड़फड़ा रहे थे। महामारी गुलजार थी, लेकिन सड़के बेबस और लाचार, दफ्तर में जाने वाली गाड़ियों की घर्र–घर्र सुनने को बेचैन थीं। लेकिन गाड़ियाँ तो बड़ी दूर की बात है, सड़कें तो इंसानी पद चाप सुनने को भी तरस गई थीं। केवल जरूरी सेवाओं को छोड़कर बाकी सब कुछ बंद था। ऐसे में पूरी दुनिया के सामने जो सबसे बड़ी समस्या मुँह उठाए खड़ी थी वह अर्थव्यवस्था के साथ–साथ रोजगार तथा औद्योगिक इकाइयों एवं कंपनियों को जीवित रखने की थी।

जिस प्रकार आवश्यकता आविष्कार की जननी है, उसी प्रकार कोरोना महामारी में व्यापारिक संस्थाओं, कंपनियों, व्यवसायिक संस्थानों तथा रोजगार को बरकरार रखने की आवश्यकता ने प्रौद्योगिकी की आधुनिक तथा उन्नत तकनीक की मदद से वर्क फ्रॉम होम का आविष्कार हुआ। इस प्रकार कार्य का यह नया प्रारूप वर्क फ्रॉम होम आपदा में अवसर कोरोना की देन है।

वर्क फ्रॉम होम एक अवसर

तकनीकी क्रांति के दौर में ऑनलाइन शॉपिंग, बैंकिंग, होटल, गैस बुकिंग, व्यंजनों के आर्डर, रेल, हवाई टिकटें घर बैठे प्राप्त कर रहे हैं। अब लंबी–लंबी लाइनों में टिकटों की बुकिंग करवाना बीते कल की बात हो गई है। उसी तर्ज पर लॉकडाउन की चुनौती को अवसर बना कर विद्यालयों, न्यायालयों तथा अन्य कई संस्थाओं ने वर्क फ्रॉम होम तथा वीडियो कॉफ्रेंसिंग के जरिए अपनी कार्यप्रणाली की निरंतरता को बनाए रखा है।

रोजगार की दृष्टि में

कोरोना महामारी अत्यंत विनाशकारी आपदा तो थी ही साथ में लेकर आई संपूर्ण लॉकडाउन की स्थिति, ऐसे में बंद घरों में खाली बैठकर कितने दिन खाया जा सकता है। जहाँ व्यापारिक संस्थानों और कंपनियों पर पड़े ताले, उन्हें बिखरने तथा चरमराने को मजबूर कर रहे थे, वहीं सबके रोजगार को बचाए रखने की समस्या सिर उठाए खड़ी थी, क्योंकि इन संस्थानों के बंद होते ही करोड़ों लोग बेरोजगार होकर सड़कों पर आ जाते। एक तो विनाशकारी आपदा की तबाही, फिर बेरोजगारी के कारण नंगे बदन, भूखे पेट इस स्थिति की भयावहता की कल्पना मात्र से ही दिल–जान सिहरने लगते हैं। उस समय अर्थव्यवस्था के साथ देशवासियों का मनोबल भी चरमरा रहा था। ऐसे में उन्नत तकनीक और प्रतिभा की बदौलत वर्क फ्रॉम होम की सौगात किसी अलादीन के चिराग से कम नहीं थी। जिसने संस्थानों को तो चरमराने से बचाया ही, साथ में रोजगार और अर्थव्यवस्था के मनोबल की उखड़ती साँसों में नवाचार का संचार करके एक मजबूत आधार प्रदान किया ।

प्रदूषणमुक्त स्वच्छ भारत अभियान एवं सड़क दुर्घटनाओं में सुरक्षा की दृष्टि में

प्रदूषण मुक्त स्वच्छ भारत का सपना केवल भारत का ही नहीं, अपितु पूरे विश्व का है। जिसे साकार करने में वर्क फ्रॉम होम केवल एक अवसर ही नहीं बल्कि बड़ा ही कारगर हथियार साबित हुआ है। क्योंकि सड़कों पर लंबी–लंबी गाड़ियों की रफ्तार, फिर लंबे–लंबे जाम, पार्किंग की समस्याएं और रेड लाइट पर घर्र–घर्र करती गाड़ियों के धुएं के गुबारों को ना चाहते हुए भी पीने की मजबूरी से होने वाले मानसिक तनाव से निजात इससे ही पायी जा सकती है।

क्योंकि वर्क फ्रॉम होम होने से सड़कों पर गाड़ियों और भीड़ का कम होना स्वाभाविक है। जिससे दिन–प्रतिदिन होने वाली सड़क दुर्घटनाएं अपने–आप कम हो जाएंगी, दूसरा इससे सड़कें तो स्वच्छ रहेगी ही, साथ में गाड़ियों से उठने वाले धुएं के कम होते ही प्रदूषण मुक्त पर्यावरण स्वतः शुद्ध और साफ हो जाएगा ।

पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि में

संयुक्त परिवारों की पृष्ठभूमि को एकल बनाने में ऊँची महत्वाकांक्षाओं के साथ–साथ रोजगार की स्थितियाँ भी काफी हद तक जिम्मेदार रही हैं, क्योंकि मल्टीनेशनल कंपनियों के लुभावने पैकेज से आकर्षित ज्यादातर युवा विदेशों या महानगर की राह पकड़ लेते हैं। जिससे घरों में बुजुर्ग माँ–बाप अकेले रह जाते हैं। उम्र के इस मोड़ पर बुजुर्गो को चिकित्सा और सुरक्षा की दृष्टि से अकेले गुजर–बसर करने में अनेकों कठिनाइयों का सामना तो करना ही पड़ता है। इसके साथ बच्चों को भी महानगरीय जीवन या विदेशों में अकेले सारी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जिससे अकेलेपन के अवसाद (डिप्रेशन) का शिकार केवल बुजुर्ग ही नहीं अपितु युवा भी होने लगे हैं। इस प्रकार अवसाद से निजात दिलाने में वर्क फ्रॉम होम एक सुनहरा अवसर है।

कामकाजी महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा की दृष्टि से

घर पर अकेले बच्चों की देखभाल और सुरक्षा की दृष्टि से वर्क फ्रॉम होम कामकाजी महिलाओं के लिए केवल एक अवसर ही नहीं अपितु वरदान भी है। क्योंकि दिन–प्रतिदिन घटित होने वाली अपराधिक घटनाएं उनकी सुरक्षा की चिंताएं दफ्तर में कामकाजी महिलाओं के दिलों की धड़कनें तो तेज रखती ही हैं, साथ में काम की एकाग्रता को भी प्रभावित करती है। इस तरह के हादसों की संख्या कम करने का एकमात्र उपाय है – वर्क फ्रॉम होम। जिसे अवसर के साथ–साथ कोरोना महामारी के तिमिर में मिला उपहार भी मान सकते हैं।

अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण के रूप में

वर्क फ्रॉम होम से पेट्रोल डीजल के खर्चे तो बचते ही हैं, साथ में दफ्तर में कई बार होड़ की दौड़ में अपने–आप को सुपर साबित करने के लिए महंगे ब्रांडेड कपड़े, जूते, बैग और अन्य सौन्दर्य प्रसाधनों के सामानों की जरूरत के बिना इतनी खरीदारी कर ली जाती है, जिससे परिवार पर आर्थिक बोझ तो बढ़ता ही है, साथ में फिजूल में पड़े सामान संभाल पाने के अभाव और फैशन से बाहर होने पर व्यर्थ हो जाते हैं। वर्क फ्रॉम होम फिजूलखर्ची पर प्रतिबंध का एक जरिया तथा सीमित साधनों और संसाधनों के साथ दायरे में रहने का एक सुअवसर है।

वर्क फ्रॉम होम पति–पत्नी के रिश्ते में ठहराव एवं गहराई पर एक दृष्टि

जहाँ पति–पत्नी दोनों कामकाजी तथा बच्चें छोटे होते हैं, वहाँ दोनों के पास समयाभाव का रहना स्वभाविक है। समयाभाव और अत्यधिक कार्य के बोझ के कारण ज्यादातर मामलों में पति–पत्नी के आपसी प्यार, विश्वास और सामंजस्य की गाड़ी पटरी से डगमगाने लगती है तथा रिश्तों में मिठास, ठहराव एवं प्यार की गहराई धीरे–धीरे ढलती साँझ के धुंधलके की तरह ढलने लगती है। जिससे भावनाएं तो आहत होती ही हैं, साथ में घर का मधुर मनोहर वातावरण भी दूषित होता है। कई बार तो यह स्थिति इतनी बदतर हो जाती है कि परिवार बिखराव की स्थिति तक पहुँच जाता है। ऐसे दंपतियों के लिए वर्क फ्रॉम होम एक सौगात है, क्योंकि इससे दफ्तर में आने–जाने वाले समय की बचत तो होती ही है, साथ में सफर के दौरान होने वाली थकावट से भी निजात मिलती है। इस बहुमूल्य समय को वह अपने परिवार के साथ व्यतीत कर सकते हैं। साथ उठने–बैठने, खाने–पीने से प्यार, विचारों में ठहराव और गहराई की परिपक्वता स्वतः आ जाएगी। इस प्रकार वर्क फ्रॉम होम बिखराव में ठहराव की एक उम्मीद है तथा एकांकी जीवन जी रहे बुजुर्ग माता–पिता का अपने बच्चों के साथ फिर से इक्कठा रह पाने का सुनहरा अवसर है। वर्क फ्रॉम होम ने हमें अपने परिवार और परिजनों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय (क्वॉलिटी टाइम) बिताने का एक स्वर्णिम अवसर प्रदान किया है।

वर्क फ्रॉम होम चुनौती की नजर में

अवसर और चुनौतियाँ दो अलग–अलग अवधारणाएं हैं। लेकिन अलग–अलग होते हुए भी दोनों साथ–साथ चलती हैं। कोई भी अवसर ऐसा हो ही नहीं सकता जो अपने साथ चुनौतियाँ ना लेकर आए। वर्क फ्रॉम होम जहाँ एक अवसर के रूप में उभर कर सामने आया है, वहीं अपने साथ अनेकों चुनौतियाँ भी लेकर आया ।

घर पर काम का वह माहौल नहीं बन पाता जो दफ्तरों में

काम के अनुरूप सेट किया जाता है। फिर तकनीक और नेट कनेक्शन की समस्या के कारण कई बार एक क्षेत्र में काम करने वाले कई कर्मचारियों में पर्याप्त संचार के अभाव में, आपसी समन्वय ना हो पाने के कारण काम तथा उत्पादन क्षमता का प्रभावित होना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त ज्यादातर लोग डिजिटल संवाद की जगह रू–ब–रू होकर संवाद करना ज्यादा पसंद करते हैं। क्योंकि इससे आदमी केवल रोबोट की तरह रिमोट नियंत्रक बनकर रह जाता हैं।

वर्क फ्रॉम होम रोजगार के लिए चुनौती की नजर में

जिस रोजगार को कायम रखने के लिए वर्क फ्रॉम होम की नींव रखी गई थी, उसी रोजगार की गाड़ी पटरी से लड़खड़ाने लगी है, क्योंकि ऐसे में कई संस्थाएं और कंपनियाँ स्थाई कर्मचारियों की प्रतिबद्धता से मुक्त हो सकती हैं। सड़कों पर गाड़ियाँ और भीड़ कम होने से निःसंदेह पर्यावरण शुद्ध और स्वच्छ हो जाएगा लेकिन इन गाड़ियों को चलाने वाली कंपनियाँ और उनके ड्राइवरों के आगे रोजगार की समस्या उत्पन्न हो जाएगी। पार्किंग के ठेके लेने वाले ठेकेदारों के भूखे मरने की नौबत आ जाएगी। जरूरत के सामानों जैसे कपड़ों,जूतों और सौन्दर्य प्रसाधनों की माँग कम होने पर इन उद्योगों पर खतरे के बादल मंडराने शुरू हो जाएंगे। मेट्रो, रेल और बसों में यात्री कम होने पर इन सेवाओं की आय का प्रभावित होना लाजमी है।

महानगर में बने बड़े–बड़े रियल एस्टेट, दफ्तरों के लिए संपूर्ण सुख–सुविधाओं से लैस किराए के हिसाब से बनी बड़ी–बड़ी बिल्डिंग एवं बाहर से आए हुए बच्चों के हिसाब से बने पेइंग गेस्ट (पी.जी.) वर्क फ्रॉम होम होने पर इन सब पर ताले लटकाने की नौबत आ जाएगी। जिसका हर्जाना देर–सवेर हमें ही भुगतना पड़ेगा।

मानवीय संबंधों की चुनौती के रूप में

जिस प्रकार रोजगार का नया प्रारूप संयुक्त परिवारों के टूटने का कारण बना, उसी प्रकार वर्क फ्रॉम होम मानवीय संबंधों के दरकने का कारण बनेगा। यह सहयोगियों के साथ मिल–जुल आपसी सहयोग से काम करने की भावना को तो प्रभावित करेगा ही, साथ में दफ्तरों में पनपते सौहार्दपूर्ण और दोस्ती के रिश्ते को भी पूर्ण विराम लगा देगा।

सेहत की दृष्टि में

वर्क फ्रॉम होम से दैनिक दिनचर्या काफी हद तक प्रभावित होती हैं। क्योंकि सुबह दफ्तर जाने और आने का समय निश्चित होने के कारण दिनचर्या उसी के अनुरूप बिल्कुल चुस्त–दुरुस्त हो जाती है। वहीं घर पर काम करने से काम के घंटे और दिनचर्या निश्चित ना रह पाने के कारण सेहत का प्रभावित होना लाजिमी है। घंटो इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के सामने रहने से इनका दुष्प्रभाव हमारे शरीर पर भी पड़ता है।

निष्कर्ष

जहाँ तक वर्क फ्रॉम होम अवसर या चुनौती का सवाल है इसमें कोई दो राय नहीं है कि अवसर और चुनौतियाँ दो अलग–अलग अवधारणाएं होते हुए भी दोनों हमेशा साथ–साथ चलती हैं। क्योंकि अवसर के पुष्पों को हासिल करने के लिए चुनौती रूपी काँटों से होकर तो गुजरना ही पड़ता है। फिर यह तो कुदरत का भी नियम है कि हर सकारात्मक पहलू के साथ नकारात्मक पहलू अपने–आप जुड़ जाता है अर्थात् कोई भी अवसर, तब तक सुअवसर नहीं बन सकता जब तक वह चुनौतियों का अभ्यस्त नहीं होता। चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना अवसर की सम्पूर्णता की खरी कसौटी है। इसमें कोई दो राय नहीं कि वर्क फ्रॉम होम कार्य संस्कृति का नया प्रारूप कोरोना महामारी के दौरान एक अवसर के रूप में उभरकर सामने आया है तथा लॉकडाउन में अर्थव्यवस्था पर छाए तिमिर के बादलों को तितर–बितर करने में इसने एक प्रकाश पुंज का कार्य किया है। अतः उन्नत तकनीकी सौगात की बदौलत वर्क फ्रॉम होम आपदा में एक अवसर है, लेकिन इसे चिरस्थाई कायम रखना एक चुनौती है, क्योंकि घर पर काम का वह माहौल नहीं बन सकता जो दफ्तर में सहयोग और अनुशासन से बनता है। इससे कार्य एवं उत्पादन क्षमता का प्रभावित होना स्वाभाविक है। फिर जिस रोजगार की बुनियाद पर इसे खड़ा किया गया था, निकट भविष्य में बेरोजगारी, राष्ट्रीय आय के कम होने तथा उचित समन्वय के अभाव में उसी बुनियाद के डगमगाने के खतरे की संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। इसलिए वर्क फ्रॉम होम के अवसर को चिरस्थाई अवसर बने रहने के लिए अभी बहुत सारी चुनौतियों के इम्तिहानों को पास करना अभी बाकी है।

बैंक ऋण, जोखिम और वसूली

पवन कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (विधि) मंडल कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली

सामान्य शब्दों में ''जोखिम प्रबंधन'' संभावित जोखिम/नुकसान से निपटने के लिए योजना बनाना और उसका निष्पादन करना है। मोटे तौर पर बैंक की आय ग्राहक से जमा के रूप में स्वीकार किए गए धन को ऋण के रूप में देने से प्राप्त ब्याज से उत्पन्न होती है। इसलिए, ऋण देने में शामिल जोखिम का प्रबंधन करना आवश्यक है जो बैंक द्वारा अन्य के साथ, संपार्श्विक प्रतिभूति (कोलैटरल सिक्यूरिटी)/बंधक (मॉर्टगेज)/दृष्टि बंधक (हाईपोथीकेशन) आदि पर ऋण देकर भी किया जाता है ताकि यदि ऋण खाता एनपीए हो जाता है, तो बैंक बंधक/दृष्टि बंधक संपत्ति पर कार्यवाही करके होने वाले नुकसान से बच सकता है या कम कर सकता है जिसके लिए बैंक सरफेसी अधिनियम (SARFAESI) का उपयोग कर सकता है।

सरफेसी अधिनियम का उद्देश्य एनपीए खातों का शीघ्र समाधान और उनकी वसूली करना है। यह अधिनियम बैंकों और वित्तीय संस्थानों को अदालत के हस्तक्षेप के बिना प्रतिभूतियों पर कब्जा करने और उन्हें बेचने का अधिकार देता है। सरफेसी अधिनियम के प्रावधान के अन्तर्गत सभी कार्यवाही केवल एक अधिकृत अधिकारी (स्केल–IV और ऊपर के अधिकारी) के द्वारा ही की जा सकती है।

सरफेसी कार्यवाही पर दिशा–निर्देश शस्त्र (SASTRA) प्रभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा समय–समय पर परिचालित किए जाते हैं। सभी योग्य एनपीए खातों में सरफेसी कार्यवाही शस्त्र (SASTRA) प्रभाग परिपत्र द्वारा प्रदान किए गए 'कार्य प्रवाह चार्ट (वर्क फ्लो चार्ट)' में दी गई समय–सीमा के अनुसार ही की जानी चाहिए क्योंकि अधिनियम की प्रभावशीलता/सफलता एक के बाद एक शुरू की गई कार्यवाहियों की श्रृंखला पर निर्भर करती है।

सरफेसी अधिनियम की धारा 13 (2) के अन्तर्गत बैंक द्वारा उधारकर्ता/बंधककर्ता/गारंटर को 60 दिनों का नोटिस देने का प्रावधान है, जिससे पार्टी को नोटिस की तारीख से 60 दिनों के भीतर बैंक को अपनी देनदारियों को चुकता करने की आवश्यकता होती है। डिमांड नोटिस के द्वारा एनपीए की दिनांक देय राशि, बंधक/दृष्टि बंधक संपत्ति का विवरण और धारा 13(8) की ओर ध्यान आकर्षित करना होता है। यदि पार्टी कोई अभ्यावेदन/कोई आपत्ति प्रस्तुत करती है, तो बैंक को आपत्ति प्राप्त होने के 15 दिनों के भीतर उसका उत्तर देना अनिवार्य होगा। यदि पार्टी 60 दिनों के भीतर पूरी तरह से अपनी देनदारी का निर्वहन करने में विफल रहती है, तो बैंक धारा 13(4) के तहत बंधक/दृष्टि बंधक संपत्ति का कब्जा ले सकता है और उसे बेच सकता है। यदि पार्टी द्वारा वास्तविक कब्जा देने का विरोध होता है, तो बैंक सरफेसी अधिनियम की धारा 14 के तहत भौतिक कब्जा लेने के लिए डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट /चीफ मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट के समक्ष आवेदन दाखिल कर सकता है, जो 30 दिनों के भीतर उपयुक्त आदेश पारित करेगा जिसे 30 दिन तक और बढ़ाया जा सकता है। बैंक 30/15 दिन (जो भी लागू हो) का बिक्री नोटिस देगा जिसके उपरांत बैंक बंधक संपत्ति को बेच देगा। क्रेता को बिक्री के दिन, बिक्री मूल्य का 25% (अग्रिम राशि सहित) का भुगतान करना होगा। शेष 75% राशि का भुगतान क्रेता द्वारा बिक्री की पुष्टि के 15 दिनों के भीतर किया जाएगा जिसे क्रेता के साथ लिखित सहमति के साथ 3 महीने से ज्यादा नहीं बढ़ाया जा सकता। बिक्री मूल्य के पूर्ण भुगतान पर बैंक क्रेता को बिक्री प्रमाण पत्र जारी करेगा। यह भी ध्यान देने योग्य है कि सरफेसी अधिनियम के प्रावधान बैंक को बही ऋणों (बुक डेब्टस) और प्राप्य राशियों पर कार्यवाही का अधिकार भी देता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बैंकिंग कारोबार में जोखिम को समाप्त या कम करने में सरफेसी अधिनियम की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और यह जोखिम प्रबंधन हेतु एक महत्वपूर्ण कारगर हथियार साबित होता है। इसलिए जोखिम प्रबंधन की श्रृंखला में इसकी समस्त जानकारी होना अनिवार्य है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव : विगत 75 वर्षों की देश की उपलब्धियाँ एवं चुनौतियाँ

कृष्णा, सिंगल विंडो ऑपरेटर–ए, शस्त्र विभाग, मंडल कार्यालय, मुज्जफरनगर

विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा और विश्व में दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश भारत विविधता में एकता और अपने समृद्ध इतिहास से परिपूर्ण है। यह बुद्ध, महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानंद और कबीर आदि जैसे महापुरुषों की धरती है, जिसे हम भारतवर्ष के नाम से जानते हैं। इस भारत–वर्ष के सिर का मुकुट पर्वतराज हिमालय है और इसके चरणों को हिन्द महासागर पखारता है।

विश्व गुरु के नाम से चर्चित हमारा देश प्राचीन सभ्यता और संस्कृति वाला देश हैं। अपने ज्ञान–विज्ञान के सार वेदों में पिरोकर कर इस देश ने अपनी महानता का परिचय समस्त संसार को दिया है। सोने की चिड़िया कहे जाने वाले इस देश की संपन्नता से आकर्षित होकर अनेक बार आक्रमणकारी जातियाँ यहाँ आईं और इस देश की संस्कृति में रच बस गयी।

भारत की सीमाएं पश्चिम में पाकिस्तान, उत्तर–पूरब में चीन एवं भूटान, पूरब में म्यांमार, उत्तर में नेपाल, बांग्लादेश और उत्तर पश्चिम में अफगानिस्तान से लगती है साथ ही ये पूरब में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरेबियन सागर और दक्षिण में हिंद महासागर से घिरा प्रायद्वीप है।

हमारा प्यारा भारत न केवल भौगोलिक दृष्टि से विशाल और विस्तृत है बल्कि अपनी विभिन्न प्राकृतिक सुन्दरता के कारण भी जाना जाता है। छः ऋतुओं से श्रृंगारित छटाएं इसकी प्राकृतिक सुन्दरता में चार चाँद लगा देती हैं। बसंत के सुंदर फूल, ग्रीष्म में मीठे–मीठे आमों के बागों में कूं–कूं करती कोयल, बारिश में पपीहे की मोहक तान, शरद में पहाड़ों पर दूर तक छाई बर्फ की चादर और हेमंत और शिशिर की ठण्ड इसकी छठा को सचमुच में निराली और अद्भुत बना देती है।

अपनी इस अद्भुत सुन्दरता के कारण ही भारत विश्व का एक अनोखा और महान् राष्ट्र समझा जाता है। अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के साथ–साथ भारत की भौतिक सुन्दरता भी कम आकर्षक और रोचक नहीं है। हमारा देश अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण सबके आकर्षण का केन्द्र रहा है। यह उत्तर में कश्मीर और दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैला हुआ है।

सम्राट भरत के नाम से मशहूर भारत की संस्कृति संसार की प्राचीनतम और महानतम संस्कृति रही है। इस संस्कृति ने सत्य, अहिंसा, परोपकार, दान, क्षमा आदि श्रेष्ठ जीवन मूल्यों को अपना कर सभी को गले से लगाया है।

आजादी के अवसर पर हमारे प्रथम प्रधानमंत्री के शब्द थे– ''जब दुनिया सोती है, भारत जीवन और आजादी के लिये जगता है''अर्थात् चाहे दुनिया सुस्त रहे पर हम भारतवासी हमेशा उन्नति की और बढ़ते रहेंगे।

आज हम आजादी का 75वाँ अमृत महोत्सव मना रहे हैं। हमने इन 75 वर्षो में लाखों चुनौतियों को झेला और उस पर विजय पायी और कुछ पर विजय हेतु प्रत्यनशील हैं। इनमें कुछ उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ इस प्रकार हैं–

उपलब्धियाँ:

1. कोरोना वैक्सीन :

वर्तमान सदी की सबसे बड़ी त्रासदी– **''कोरोना''**। कोरोना वायरस का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर साँस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। **इस वायरस का संक्रमण दिसंबर 2019 में चीन के वुहान में शुरू हुआ था।** विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के मुताबिक बुखार, खाँसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं। भारत में भी इस बीमारी का बहुत बुरा असर देखा गया। सराहना करनी होगी हमें उन फ्रंट लाइन वॉरियर की जिन्होंने डटकर इसका सामना किया और देश में फैली त्रासदी से निपटने में मदद की। **भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इन फ्रंट लाइन वर्कर की सराहना की साथ ही इस बीमारी को फैलने से रोकने का मंत्र दिया ''दो गज की दूरी, मास्क**

है जरूरी''। साथ ही स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार ने भी कोरोना वायरस से बचने के लिए जो दिशा–निर्देश जारी किए वे हैं– हाथों को साबुन से धोना, अल्कोहल आधारित हैंड सैनिटाईजर का इस्तेमाल, खाँसते और छीकते समय नाक और मुँह रूमाल या टिश्यू पेपर से ढंकना, इत्यादि शामिल हैं, साथ ही जिन व्यक्तियों में सर्दी और बुखार के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखना। इस विपदा ने ना जाने कितनों को अनाथ बनाया, कितनों को बेरोजगार बनाया और कितने रोजगारों को चौपट किया इससे कौन नहीं परिचित है। इस विपदा ने सारे देश की अर्थव्यवस्था को हिला कर रख डाला, उस समय भी हमारे भारत वर्ष ने कई देशों में मुफ्त दवा का वितरण किया और इसके साथ ही इस त्रासदी से निपटने के लिए **भारत ने सफलतापूर्वक दो वैक्सीन – कोवैक्सीन और कोविशील्ड का निर्माण किया।** भारत में निर्मित कोविशील्ड वैक्सीन का उत्पादन भारत में सीरम इंस्टीट्यूट द्वारा किया जा रहा है तथा कोवैक्सीन का उत्पादन भारत बायोटेक द्वारा किया जा रहा है। भारत सरकार के द्वारा अपनी विशाल जनसंख्या को मुफ्त वैक्सीन देने का चलाया जा रहा अभियान खुद की आत्मनिर्भरता की गाथा सुनाता है। साथ ही साथ भारत ने वैक्सीन के उत्पादन के बाद इसे अभी तक लगभग 65 देशों में उपलब्ध कराया है।

2. खेल जगत में भारत की भूमिका / ओलंपिक्स में पदकः

अभी हाल में ही संपंन ओलंपिक्स खेल हों या पैरालंपिक खेल भारत ने क्रमशः 7 पदक (ओलंपिक्स में) और 19 पदक (पैराल्पिक्स में) जीत कर अपनी एक अमिट छाप छोड़ी है। भारत ने टोक्यो ओलंपिक में एक स्वर्ण सहित सात पदक जीतकर इन खेलों में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। टोक्यो (Tokyo) ओलंपिक्स में नीरज चोपड़ा ने मेन्स जैवलिंग थ्रो में स्वर्ण पदक जीता तो पैरालिम्पिक्स खेलो में अवनि लखेरा – एयर राइफल, योगेश कथुनिया – डिस्कस थ्रो, सुमित अंतिल ने जैवलिन थ्रो में स्वर्ण पदक हासिल कर देश को गौरवान्वित किया। पैरालंपिक में भारत के नाम कुल पाँच स्वर्ण, आठ रजत और छह कांस्य पदक रहे।

खेल जगत की बात हो तो क्रिकेट का नाम आना स्वाभाविक ही है और क्रिकेट में महेंद्र सिंह धोनी, सचिन, युवराज आदि खिलाड़ियों का योगदान कौन भूल सकता है। ये महान् खिलाड़ी आज पूरे विश्व में क्रिकेट प्रेमियों के प्रेरणास्त्रोत बन गये हैं। टेनिस में भारत के टेनिस स्टार सानिया मिर्जा, लिएंडर पेस, महेश भूपति इत्यादि विश्व प्रसिद्ध हस्तियाँ हैं। अभिनव बिंद्रा 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में भारत के एक प्रमुख निशानेबाज हैं।

3. भारतीय मूल के लोगों का विश्व के महत्वपूर्ण पदों पर पदासीन होना :

विश्व भर में अनेकों महत्वपूर्ण पदों पर भारतीय मूल के नागरिक पदासीन हो कर हमारे देश के गौरव में चार चाँद लगा रहे हैं जैसे कि विश्व न्यायालय के न्यायाधीश श्री दलवीर भंडारी, गूगल के सीईओ पद पर सुशोभित श्री सुंदर पिचई, माइक्रोसॉफ्ट के चेयरमैन श्री सत्या नडेला, भारतीय मूल की कमला हैरिस का अमेरिका के उपराष्ट्रपति के पद पर सुशोभित होना। भारतीय मूल की नीरा टंडन अमेरिकी राष्ट्रपति, जो बाइडन की वरिष्ठ सलाहकार हैं। ये भारतीय मूल के वासी हमारे देश के उज्ज्वल भविष्य की ओर इशारा करते हैं। ये भारत को गौरवान्वित करते हुए, हमारे देश का मस्तक गर्व से ऊँचा करते हैं।

4. ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदमः

आजादी के बाद हमारी सबसे बड़ी समस्या थी रोटी, कपड़ा और मकान, किन्तु आज हमने इन सब समस्याओं से निपटते हुए अनेकों क्रांति (जैसे कि **हरित क्रांति– गेहू की पैदावार बढ़ानें हेतु, पीली क्रांति– तेल की उत्पादकता बढ़ाने हेतु, श्वेत क्रांति– दुग्ध की उत्पादकता बढ़ाने हेतु,** इत्यादि) करते हुए आगे बढ़े और **आज हम एक परमाणु संपन्न राष्ट्र बनें।** एक समय था जब हम ऊर्जा उत्पादन हेतु अन्य देशों पर आश्रित थे परन्तु आज स्थिति ये है कि हम इस दिशा में आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। आज हमारे **परमाणु ऊर्जा संयंत्र जैसे कि – तारापुर (महाराष्ट्र), रावतभाटा (राजस्थान) और काकरपारा (गुजरात)** इत्यादि जगहों पर कार्यरत हैं। आज **भारत विश्व का पांचवाँ** सबसे बड़ा पवन बिजली उत्पादक देश है। हमने अक्षय सौर ऊर्जा क्षेत्र में भी कदम बढ़ाते हुए **दुनिया की सबसे बड़ी एकल स्थान सौर बिजली उत्पादन परियोजना की ओर कदम बढ़ाया है। ये राजस्थान में स्थापित होने वाली परियोजना है,** इसकी क्षमता लगभग 4,000(मेगावाट)MW की अल्ट्रा मेगा सौर ऊर्जा परियोजना की दिशा में कार्यरत हैं। भारत की लम्बी तटरेखा भी इसके

लिए वरदान है क्योंकि तट पर पाए जाने वाले रेत थोरियम से परिपूर्ण होते हैं। थोरियम एक रेडियोएक्टिव तत्व है। अब हम अपनी भविष्य की ऊर्जा की जरुरतों को पूरा करने हेतु इन पर शोध कर रहे हैं। साथ ही समुद्र की लहरों से भी बिजली बनाने की दिशा में कार्यरत हैं। हवा, सौर ऊर्जा, समुद्र की लहरों से बिजली बनाना सबसे साफ–सुथरा तरीका माना जाता है क्योंकि इनसे कोई अपशिष्ट नही बनता।

5. विज्ञान में प्रगति:

प्राचीन काल में भारत के महान् गणितज्ञ आर्यभट्ट ने दुनिया को शून्य के बारे में बताया। उन्होंने दुनिया को ये बताया कि पृथ्वी (ग्रह) ही सूरज के चक्कर लगाती है ना कि सूरज ग्रहों का।

उसी परंपरा का अनुसरण करते हुए, आज भी हमारे देश में विज्ञान के क्षेत्र में लगातार अनुसंधान कार्य हो रहे हैं – हमारा प्यारा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO), भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर (BARC), विक्रम साराभाई अन्तरिक्ष स्टेशन (VSCC) इत्यादि इनमें कार्यरत वैज्ञानिकों के ही कठिन परिश्रम का परिणाम है कि मिशन MOM के तहत भारत मंगल पर पहुँचने वाला पहला एशियाई देश बना। विश्व में भारत मंगल ग्रह पर प्रथम प्रयास में सफलतापूर्वक पहुँचने वाले देशों की गिनती में खड़ा हुआ। अपने प्रथम प्रयास में सफलतापूर्वक मंगल मिशन पूरा करने वाला भारत चौथा देश बना। हमने मिशन मंगल को बहुत ही कम लागत में पूरा किया। साथ ही साथ (इसरो) ने एक साथ 100 उपग्रहों को प्रक्षेपित कर उन्हें सफलतापूर्वक उनके कक्ष में स्थापित किया। पीएसएलवी तथा जीएसएलवी जैसी तकनीकों से आज भारत युक्त है। हमनें 22 अक्टूबर, 2008 को एक मानवरहित यान (चंद्रयान–1) चन्द्रमा पर भेज अंतरिक्ष कार्यक्रम में भी अपनी विशिष्ट पहचान बनायीं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के चंद्र अन्वेषण कार्यक्रम के अंतर्गत चंद्रमा की तरफ कूच करने वाला यह भारत का पहला अंतरिक्ष यान था। यह 30 अगस्त, 2009 तक सक्रिय रहा।

सुपर कंप्यूटर की दौड़ में भी हम पीछे नहीं हैं। भारत में तैयार सुपर कंप्यूटर अब दुनिया में अपनी धूम मचा रहा है। राष्ट्रीय सुपर कंप्यूटिंग अभियान (एनएसएम) के तहत निर्मित 'परम सिद्धि' (Param Siddhi) नामक भारतीय सुपर कंप्यूटर को विश्व के 500 सबसे शक्तिशाली कंप्यूटरों की सूची में 63 वाँ स्थान प्राप्त हुआ है। आज भारत बुलेट ट्रेन चलाने वाले देशों की श्रेणी में खड़े होने की तैयारी कर रहा है। साल 2024 में जब बुलेट ट्रेन शुरू होगी तब यह ट्रेन अहमदाबाद से लेकर गुजरात के बॉर्डर **''वापी''** तक चलाई जाएगी।

6. सुरक्षा क्षेत्र :

हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के शब्द थे ''आप मित्र बदल सकते है पर अपने पड़ोसी को नहीं'' और भारत के पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान और चीन पर विश्वास करना कठिन है। अतः भारत को अधिक सजग होकर चलना पड़ता है। आज हमारे पास विश्व की दूसरी सबसे बड़ी सेना है। साथ ही राफेल, रोमियो हेलीकॉप्टर, स्वदेशी हेलीकॉप्टर चिनूक से युक्त हमारी वायु सेना भी अपनी पराक्रम गाथा सुनाते हैं। भारत की तट रेखा बहुत बड़ी है अतः नौसेना की सामरिक शक्ति को बढ़ाना बहुत जरूरी है। वर्तमान में आईएनएस (INS)–विक्रमादित्य भारत का एकलौता एयर क्राफ्ट कैरियर है। परन्तु जल्द ही कोच्चि शिपयार्ड में निर्मित स्वदेशी–विक्रांत हमारे नौसेना बेड़े में शामिल हो कर हमारी नौसेना की शक्ति को बढ़ा देगा। एयरक्राफ्ट कैरियर्स समंदर में चलता–फिरता द्वीप होते हैं। लगभग 22,000 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित–विक्रांत देश का सबसे बड़ा जहाज है, जिसे भारत ने खुद तैयार किया है। इसका वजन 40,000 टन है। इस एयरक्राफ्ट कैरियर पर मिग–29के के अलावा 10 कामोव का 31 या वेस्टलैंड सी किंग हेलीकॉप्टर तैनात हो सकते हैं। इसने भारत को अत्याधुनिक विमान वाहक बनाने की क्षमता रखने वाले देशों के चुनिंदा समूह में शामिल कर दिया है। इस एयरक्राफ्ट कैरियर पर स्ट्राइक फोर्स की रेंज 1500 किलोमीटर है। जाहिर है आईएनएस विक्रांत के शामिल होते ही हमारी नौसेना की ताकत कई गुना बढ़ जायेगी। जब बात देश की सुरक्षा की हो तों ''मिसाइल मैन'' के नाम से मशहूर स्वर्गीय डॉ ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की भूमिका को कैसे भूल सकते हैं जिनके कारण भारत ना केवल परमाणु संपन्न राष्ट्र बना बल्कि ब्रम्होस जैसा अचूक मिसाइल भी भारत को उनकी ही देन है। डीआरडीओ के प्रयासों से आज भारत ओवर द होरिजन रडार बनाने की ओर अग्रसर है ताकि STEALTH होने वाले हमले से भी बचा जा सके। भविष्य को और सुरक्षित करने और स्वदेशी क्षेत्र में निर्भरता बढ़ाने हेतु भारत मल्टी पर्पज एयर एवं बस सी–295 बनाने की तैयारी कर रहा है। सी–295 को भारत के टाटा समूह और स्पेन की एयर बस कंपनी मिल कर भारत में तैयार करेंगे।

7. भारत का अपना पेमेंट गेटवे

आज भारत अपनी जरुरतों को समझते हुए और बैंकिंग क्षेत्र में मास्टर तथा वीजा कार्ड पर से निर्भरता को कम करने के उद्देश्य से भारत ने भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI) की स्थापना करते हुए एक कदम डिजिटल इंडिया की ओर बढ़ाया है। आज भारत के पास अपना कार्ड–रूपे कार्ड तथा अपना पेमेंट गेटवे (UPI) है। यूपीआई ने जन–जन को लाभान्वित करते हुए आज भारत में एक नए डिजिटल प्लेटफार्म को जन्म दिया है। डिजिटल अभियान के तहत आज भारत में रेस्तरां, होटल इत्यादि जगहों पर हम क्यूआर कोड लगा देख सकते हैं। डिजिटल अभियान के तहत टोल प्लाजाओं पर अब फास्टैग की व्यवस्था की गयी है, ताकि नगद भुगतान से होने वाली देरी से बचा जा सके। डिजिटल क्रांति के दौर में आज भारत भी पीछे नहीं है। दुनिया के साथ वो कदम से कदम मिला कर चल रहा है।

8. विश्व पर बढ़ता प्रभाव (वर्तमान की मजबूत राजनीतिक स्थिति) :

1947 में जब हमारा देश आजाद हुआ तो किसी ने सोचा भी ना होगा कि भारत अपनी सुरक्षा हेतु सफलतापूर्ण सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक जैसे कदम भी उठाएगा। ये 21वीं सदी हम भारतीयों की है। दशकों से चला आ रहा विवादित कश्मीर मसला जिसके लिए ना जाने कितनी बार हमने दूसरों के दरवाजों को खटखटाया को भारत ने दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ कर खत्म किया और कश्मीर को भारत से अलग करने वाली धारा ''धारा–370'' को खत्म कर जम्मू और कश्मीर को भारत का एक अभिन्न अंग बना दिया। हमेशा से कश्मीर का राग अलापने वाले पाक को भी भारत ने अपने प्रभुत्व से अलग–थलग कर विश्व मंच पर अकेला खड़ा कर दिया।

कुल मिला कर हम कह सकते है कि हम भारतीय निरंतर विकास की दिशा में अग्रसर हैं और समय के साथ–साथ हमारी चुनौतियाँ भी बदली हैं। वर्तमान की कुछ प्रमुख चुनौतियाँ इस प्रकार हैं–

चुनौतियाँ:

1. कोको द्वीप–समूह:

अंडमान के उत्तर में स्थित कोको द्वीप–समूह भारत और म्यांमार दोनों के लिए रणनीतिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। साल 1990 में भारत ने भारतीय क्षेत्राधिकार और सुरक्षा की दृष्टि से कोको द्वीप को ज्यादा महत्व न देते हुए इस द्वीप को म्यांमार को तोहफे में दे दिया था। परन्तु पिछले कुछ दशकों से भारत के बढ़ते प्रभाव के कारण चीन इस द्वीप में गहरी दिलचस्पी लेने लगा। परिणामस्वरूप, म्यांमार से चीन ने कोको द्वीप को ले लिया। इस द्वीप के कारण चीन की नजरें हमेशा भारत में होने वाली गतिविधियों पर बनी रहेंगी। चीन की महत्वाकांक्षाओं और उसके निरंतर विस्तारवाद की नीति के मद्देनजर, विशेषकर कोको द्वीपसूमह में हो रही सभी गतिविधियों की निगरानी करने की बहुत आवश्यकता है।

2. पड़ोसी मुल्कों से सतर्कता (विशेष रूप से पाकिस्तान और चीन से सतर्क रहना) :

आज भारत जब विश्व शक्ति बनने की ओर अग्रसर है तो उसे अपने पड़ोसी मुल्क चीन और पाकिस्तान से सतर्क रहने की आवश्यकता है। चीन अपने विस्तारवाद की नीति को लेकर काफी चर्चा में है और भारत को रोकने का हर संभव प्रयास कर रहा है। जैसे कि हाल ही की गलवान घाटी में हुई घटना में हमारे शहीद हुए जवान। इन जवानों का बलिदान कभी भूला नहीं जा सकता। श्रीलंका में चीन के द्वारा बंदरगाह बनाये जाने के बाद चीन ने उस पर कब्जा भी कर लिया है।

3. बेहद विशाल जनसमुदाय को मूलभूत सुविधायें देना :

जनसंख्या की दृष्टि से आज भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ा देश है। इतनी बड़ी जनसंख्या की मूलभूत जरूरतों को पूरा करना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण काम है। यही कारण था कि कोरोना काल में सबसे ज्यादा हाहाकार (ऑक्सीजन सिलिंडर, अस्पतालों में बेड) मचा। बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ बढ़ती हुई बेरोजगारी और इस बेरोजगारी से उत्पन्न आपराधिक प्रवृत्तियाँ एक सामाजिक अव्यवस्था की निशानी है।

''जय हिन्द, जय भारत, वन्दे मातरम!''

जोखिम प्रबंधन एक आवश्यकता या अनिवार्यता

भरत लाल मीना, (उप मंडल प्रमुख, सेवानिवृत्त), मंडल कार्यालय, भरतपुर

जोखिम प्रबंधन क्या है?– जोखिम प्रबंधन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई व्यवसाय करने वाले संगठन अथवा उद्योग में होने वाले नुकसान या क्षति की संभावना को समाप्त या कम करना चाहता है। बैंकिंग में कई प्रकार के जोखिम प्रबंधन कार्यक्रम हैं जिसका प्रयोग मौद्रिक नुकसान, मुकद्दमेबाजी और कर्मचारी हितों की सुरक्षा और उनको होने वाली हानि की संभावना को कम करने के लिए किया जा सकता है। किन्तु यह भी सच है कि व्यवसाय मुख्य रूप से जोखिम लेने से बढ़ता है जोखिम जितना अधिक होता है उतना अधिक लाभ भी होता है।

जोखिम प्रबंधन का अर्थः

जोखिम की पहचान, मूल्यांकन एवं प्राथमिकीकरण के साथ–साथ संसाधनों का समन्वित तथा आर्थिक प्रयोग कर दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की संभाव्यता अथवा प्रभाव को न्यूनतम करना, परखना और नियंत्रित करना है। जोखिम वित्तीय बाजारों में अनिश्चितता, परियोजना की असफलता, वैधानिक देयताओं के कारण, ऋण जोखिम दुर्घटनाओं तथा प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न होता है।

फहमी के अनुसारः

फहमी की विचारधारा के अनुसार जोखिम प्रबंधन की धारणा एक वैज्ञानिक क्षेत्र है जो विशेष रूप से यह बताता है कि कैसे संगठन एक व्यवस्थित और व्यापक प्रबंधन दृष्टिकोण का उपयोग करके सभी समस्याओं के मानचित्रण में उपायों को लागू करते हैं। इसमें जोखिम प्रबंधन कार्यक्रमों की योजना, आयोजन, अग्रणी/समन्वय और पर्यवेक्षण (मूल्यांकन सहित) शामिल हैं।

जोखिम शब्द के दो विशिष्ट अर्थ हैंः प्रचलित रूप में अवसर या संभावना की अवधारणा पर जोर दिया जाता है, जैसे ''दुर्घटना का जोखिम'' जबकि तकनीकी पद्धति में आमतौर पर कुछ विशेष कारणों, स्थान और अवधि के लिए 'संभावित नुकसानों' के संदर्भ में परिणामों पर जोर दिया जाता है। किसी भी कंपनी के लिए जोखिम प्रबंधन की पहचान करना और उसका मूल्यांकन करना और जोखिम को प्राथमिकता देना, संसाधनों का समन्वय करना और आर्थिक अनुप्रयोगों के माध्यम से पालन करना, दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की संभावना या प्रभाव को कम करना, मॉनिटर करना और नियंत्रण करना या अवसरों की प्राप्ति को अधिकतम करने की प्रक्रिया होती है।

जोखिम प्रबंधन का उद्देश्यः

जोखिम प्रबंधन का उद्देश्य अनिश्चितता को समाप्त करना है तथा इसके माध्यम से व्यापार के वांछित लक्ष्यों को प्रयास करते हुए प्राप्त करना है। जोखिम होने की संभावना यह होती है कि एक घटना घटित होगी और किसी वस्तु की उपलब्धि पर प्रतिकूल असर होगा। अतः जोखिम में अनिश्चितता है जैसे जोखिम प्रबंधन में प्रबंधक अपने जोखिम को बेहतर ढंग से नियंत्रित कर सकते हैं। एक आदर्श प्रबंधन में यह निश्चित करना होगा कि सबसे बड़ी हानि और सबसे पहले होने वाली हानि को सबसे बड़ी संभावना और लाभ में बदला जाए तथा छोटी हानि और बाद में होने वाले नुकसान की संभावना के साथ अवरोही क्रम में निपटा जाए। जब आप निवेश करते हैं तो आपको विभिन्न प्रकार के जोखिम का खतरा होता है और इनमें से कुछ जोखिम आपके निवेश प्रतिलाभ को प्रभावित कर सकते हैं।

जोखिम निम्न प्रकार के होते हैं।

- **प्राकृतिक जोखिमः**– प्राकृतिक घटना द्वारा होने वाला प्राकृतिक जोखिम आमतौर पर हमारे नियंत्रण से बाहर है। जैसे बारिश, ओलावृष्टि, बाढ़, तूफान, बिजली, कीट–पतंगों और अत्यधिक गर्मी या ठण्ड के कारण होने वाले मौसमी नुकसान कुछ प्राकृतिक जोखिम हैं जोकि मूल रूप से हमारे नियंत्रण से बाहर होते हैं लेकिन वर्तमान तकनीक को देखते हुए इनमें से कुछ जोखिमों को नियंत्रित किया जा सकता है या उनका प्रभाव कम हो सकता है।

- **बाजार जोखिम:** सारे बाजार को प्रभावित करने वाली घटनाओं के कारण मूल्य में उतार–चढ़ाव वाले निवेश का जोखिम **''बाजार जोखिम''** कहलाता है। इसका उदाहरण निम्न है: इक्विटी जोखिम (शेयर), ब्याज दर जोखिम (बांड) और मुद्रा जोखिम (विदेशी मुद्रा निवेश) आदि। इस तरह के जोखिम मूल रूप से समय और स्थान के संबंध में मूल्य में उतार–चढ़ाव के कारण होते हैं।
- **चलनिधि जोखिम:** जब कोई निवेश को बेचना चाहता है और उस समय उसे बेचने में अनिश्चितता/देरी होने का जोखिम हो तो यह **''चल निधि जोखिम''** होता है। यदि आप निवेश को बेचने में समर्थ हैं परन्तु आपने निवेश के लिए जो भुगतान किया था उससे कम दाम पर स्वीकार करना पड़ सकता है या कभी–कभी तो यह बिकता भी नहीं है।
- **संकेद्रण जोखिम:** यदि आपका धन किसी एक निवेश या विशेष प्रकार के निवेश में संकेंद्रित/लगा हुआ है तो इस कारण नुकसान होने का जोखिम बढ़ जाता है। जब आप अपने निवेश अलग–अलग जगह लगाते हैं या उसे विविधता प्रदान करते हैं, तो आप जोखिम का विस्तार विभिन्न प्रकार के निवेश, उद्योगों और भौगोलिक स्थानों में कर सकते हैं। जिससे भविष्य में आपको अधिक हानि नहीं उठानी पड़ती।
- **ऋण जोखिम:** यह जोखिम तब उत्पन्न होता है जब बांड जारी करने वाला सरकारी निकाय या कंपनी ब्याज का भुगतान करने या परिपक्वता पर मूलधन का भुगतान करने में समर्थ नहीं होता है।
- **राष्ट्र या देश जोखिम** : इसका उद्देश्य यह तय करना है कि किसी देश का जोखिम कारक अधिक या कम है (मतलब जोखिम भरा व्यवसाय) और व्यापारी को व्यापार करना आवश्यक है। तो व्यापारी को वास्तविक शिपमेंट से पहले भुगतान की वसूली के लिए अच्छी तरह से सुनिश्चित करना होगा। दूसरी तरफ अगर देश जोखिम मुख्य रूप से देश की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति और नीतियों से जुड़ा है और अधिकांश वैश्विक व्यापारिक संगठनों को अपने बैंकरों से इस कारक पर गोपनीय रिपोर्ट मिलती है या ऐसे विशेष संगठन है जो जोखिम प्रबंधन के आवश्यक कार्य जैसे बैंक के प्रोफाइल की पहचान करना, मापना आदि में अधिक महत्वपूर्ण रूप से अपनी भूमिका निभाते हैं।

अच्छे जोखिम प्रबंधन की आवश्यकता क्यों है?

1. मानव संसाधन का सही पूर्वानुमान: अधिकांशतः देखा गया है कि किसी संगठन में कर्मचारियों की पर्याप्त संख्या न होने के कारण उत्पादन कार्यों में गतिरोध पैदा होता है जोकि एक प्रकार का जोखिम है जिसे समाप्त करने हेतु जोखिम प्रबंधन की आवश्यकता होती है। इसके अलावा कर्मचारियों के हड़ताल करने या असहयोग जैसी गतिविधियों से बचाव के लिए जोखिम प्रबंधन एक बढ़िया विकल्प है।

2. सक्रिय और प्रशिक्षित कर्मचारियों का उपयोग: किसी भी संस्था के लिए लाभ कमाने के लिए यह आवश्यक है कि उसके कर्मचारी शारीरिक और मानसिक रूप से कार्य करने में सक्षम और दक्ष हों। इसके लिए सभी कर्मचारियों की कार्यकुशलता और दक्षता बढ़ाने के लिए उन्हें प्रशिक्षण देना जरुरी है। अकुशल तथा अप्रशिक्षित कर्मचारी अधिक उत्पादन और लाभ प्रदान करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं इसलिए यह संस्था के लिए एक प्रकार का जोखिम है जिसे उचित प्रबंधन द्वारा ही कम किया जा सकता है।

3. उद्देश्य पूर्ण और रोजगारन्मुख प्रशिक्षण: सभी स्तरों पर कर्मचारियों के लिए अच्छी तरह से डिजाइन किया गया प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम अति आवश्यक है ताकि संस्था और उसके कर्मचारी वांछित लक्ष्यों की दिशा में अपना कार्य कर सकें।

4. स्पष्ट जोखिम और अज्ञात जोखिम से निपटने की क्षमता: देखे जा सकने वाले जोखिम और न दिखाई देने वाले यानि भावी जोखिम से निपटने के लिए जोखिम प्रबंधन एक अति असरकारक हथियार साबित हो सकता है इसलिए हमें सभी प्रकार के जोखिमों से निपटने के लिए जोखिम प्रबंधन की महत्ता को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

जो लोग मानते हैं कि जीवन पूर्व निर्धारित है या जो भाग्य या प्रकृति में मजबूत विश्वास रखते हैं, वे अच्छे जोखिम प्रबंधक नहीं हो सकते। वे बुरे समय पर दोष देंगे और सहायता का अनुरोध करेंगे। एक अच्छा जोखिम प्रबंधक हमेशा इस बात को लेकर आश्वस्त रहता है कि वह अनहोनी या अप्रत्याशित घटनाओं को रोकने के लिए भविष्यवाणी और योजना बनाकर संकट या दुर्घटना को रोक सकता है।

ऐसा नहीं है कि प्रबंधक हर बार सफल होगा लेकिन जो महत्वपूर्ण है वह लचीलापन है जिसका अर्थ है कि विफलता के बावजूद ट्रैक पर आगे बढ़ने और नये जोखिमों से निपटने की क्षमता।

ऑनलाइन बैंकिंग में हिन्दी की भूमिका

अनिन्द दुबे, अधिकारी मंडल कार्यालय, फरीदाबाद

भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली और समझी जाने वाली भाषा – हिंदी है। राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रयोग से बेहतर संवाद संभव है। बैंकिंग सेवा क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग से बहुसंख्यक हिंदी भाषी समाज का बैंकों के प्रति आत्मविश्वास बढ़ेगा। हिंदी के प्रयोग से बैंकिंग कारोबार में जनता को सुविधा मिलेगी। गाँव में रहने वाले लोग, अंग्रेजी आम तौर पर नहीं जानते, लिहाजा उनकी बोल–चाल की सामान्य भाषा हिंदी होती है। उदाहरण के तौर पर अगर बैंक की सेवाओं के बारे में जानकारी देता पोस्टर अंग्रेजी के बजाए, हिंदी भाषा में होगा तो ज्यादातर भारतीय लोगों तक उसकी जानकारी पहुँच सकेगी। किसी विद्वान ने कहा है कि ''यदि आप किसी व्यक्ति से उस भाषा में बात करें तो वह बात उसके मस्तिष्क में जाती है और यदि आप उनसे उनकी भाषा में बात करते हैं, तो बात उसके दिल तक जाती है।' बैंक स्टाफ जितना अधिक से अधिक हिन्दी को अपने काम में स्थान देंगे, उतना ही बैंक के व्यवसाय में वृद्धि के लिए बेहतर होगा। वित्तीय समावेशन एवं प्रधानमंत्री जनधन योजना के तहत खाता खोलना एवं ग्रामीण जनता से कारोबार हेतु जन–धन योजना कार्यान्वित करने में हिंदी सशक्त भूमिका निभा सकती है।

मौजूदा आर्थिक, वैश्विक, सामाजिक, तकनीकी जैसे कारणों से बैंकिंग क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं। ऑनलाइन बैंकिंग, ग्राहकों को उनके खाते से वित्तीय और गैर–वित्तीय लेन–देन करने की सुविधा प्रदान करती है। इसमें बिना शाखा जाए ही ग्राहक, बैंक की वेबसाइट या ऑनलाइन एप्लीकेशन/ऐप का उपयोग करके उसी बैंक/ विभिन्न बैंक के अन्य खातों में अपने खाते से धनराशि का आदान–प्रदान कर सकता है। ग्राहक द्वारा उपयोग किए जाने वाले संसाधन – कंप्यूटर, लैपटॉप या मोबाइल फोन की तरह एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हो सकता है। इंटरनेट वह माध्यम है जो इस तकनीक को संभव बनाता है। ऑनलाइन बैंकिंग के माध्यम से कंप्यूटर का इस्तेमाल कर उपभोक्ता, बैंकों के नेटवर्क्स और उसकी वेबसाइट पर अपनी पहुँच बना सकता है और घर बैठे ही खरीददारी, पैसे के स्थानांतरण के अलावा अन्य तमाम कार्यों और जानकारी के लिए बैंकों से मिलने वाली सुविधा का लाभ उठा सकता है। आजकल के समय में लोग डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग, एटीएम, मोबाइल बैंकिंग/मोबाइल ऐप, एसएमएस बैंकिंग, यूपीआई, वॉलेट जैसे वैकल्पिक चैनलों के माध्यम से 365 दिनों में चौबीसों घंटे अर्थात् 24X7 भुगतान कर सकते हैं। साथ ही, ई–लॉबी (जहाँ एटीएम, पासबुक मशीन, कैश डिपॉजिट मशीन, चेक डिपॉजिट मशीन, बीएनए रखी जाती हैं) जैसे माध्यम से भी बैंकों द्वारा ग्राहकों को 24 घंटे और 365 दिन की बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करायी जा रही है। बैंकों की कोशिश होनी चाहिए कि ऊपर दिए हुए माध्यमों और मशीनों में अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी का भी विकल्प मौजूद रहे, ताकि अंग्रेजी न जानने वाले ग्राहक भी इन सुविधाओं का लाभ उठा सकें। ग्राहकों द्वारा इस्तेमाल किये जा रहे बैंक के विभिन्न फॉर्म तथा बैंक के आंतरिक पोर्टल (जिन पर बैंक का स्टाफ काम करता है) में भी हिन्दी भाषा का विकल्प होना चाहिए।

भारत एक ऑनलाइन भुगतान कैशलेस अर्थव्यवस्था के लिए परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। किसी देश के विकास में देश की अर्थव्यवस्था की बहुत बड़ी भूमिका होती है और देश की अर्थव्यवस्था उसके बैंकिंग क्षेत्र पर निर्भर करती है। इसलिए बैंकिंग क्षेत्र को मजबूत बनाने के साथ–साथ उसे आधुनिक बनाना भी आवश्यक होता है। अगर बैंकिंग और कर प्रणाली, ऑनलाइन भुगतान के माध्यम से भुगतान करती है तो इससे देश की अर्थव्यवस्था में बेहतरी आयेगी। इसके अलावा सार्वजनिक जीवन और शासन में भ्रष्टाचार का एक प्रमुख कारण नकदी में लेन–देन होना भी है। इसलिए एक कैशलेस समाज की तरफ बढ़ते हुए इससे भ्रष्टाचार को दूर करने में मदद मिलेगी और नकदी के उपयोग पर रोक लगेगी। विमुद्रीकरण ने भी ऑनलाइन बैंकिंग को बढ़ावा दिया है। बैंकिंग क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रयोग के कारण आ रहे परिवर्तनों और ग्राहकों की बढ़ती अपेक्षाओं ने नई–नई संभावनाओं को जन्म दिया है। बैंकिंग उत्पादों और ग्राहकों को दी जाने वाली सेवाओं के वितरण में पूर्णतः क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। स्मार्ट फोन और मोबाइल पर

इंटरनेट के क्षेत्र में दोहरे अंक की वृद्धि के साथ एकीकृत भुगतान इंटरफेस, भीम, यू.एस.एस.डी/ऑनलाइन वॉलेट और आई.एम.पी.एस. जैसे ऑनलाइन उत्पाद अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त 'आधार' आधारित भुगतान से हमारे देश के भुगतान वातावरण के परिदृश्य के पूरी तरह से परिवर्तित हो जाने की अपेक्षा की जाती है। ऑनलाइन बैंकिंग के तहत बिक्री केंद्र (पॉइंट ऑफ सेल) का निर्माण किया गया है। डेबिट कार्ड/क्रेडिट कार्ड आधुनिक बैंकिंग का एक महत्वपूर्ण उत्पाद है और 'प्लास्टिक मनी' के रूप में विख्यात हुआ है। ऑनलाइन बैंकिंग की मदद से बैंकिंग 'विशेष बैंकिंग' से 'विशाल बैंकिंग' की ओर अग्रसर हो रही है। उपभोक्ताओं को भी 'कैशलेस' से कई लाभ हैं। एक रुपये से लेकर किसी भी राशि के लिए अब बिना कैश के ऑनलाइन भुगतान किया जा सकता है। ग्राहक 24 घंटे ऑनलाइन लेन-देन कर सकते हैं, यहाँ तक कि अवकाश के दौरान भी। बैंक और ग्राहक दोनों को ही इससे पारस्परिक लाभ होगा।

इसके अलावा सरकार ने ऑनलाइन भुगतान को बढ़ावा देने के लिए कई घोषणाएं की हैं जैसे ईंधन खरीद पर छूट, बीमा प्रीमियम सेवा कर में छूट, एक ही प्रकार की सर्विस के लिए नकद लेन-देन के मुकाबले ऑनलाइन भुगतान सस्ता होगा। विभिन्न तरह के बिलों के भुगतान के लिए ग्राहक को शाखा या संबंधित कार्यालयों में जाकर लाइन में खड़े रहने की आवश्यकता नहीं है। वह इंटरनेट के माध्यम से विभिन्न बिलों जैसे टेलीफोन, बिजली, आदि का भुगतान ऑनलाइन और तत्काल कर सकता है। ऑनलाइन बैंकिंग से भारत में बैंकिंग का चेहरा ही बदल गया है और छोटी सी अवधि में बैंक द्वारा कार्यान्वित की गई तकनीक का सकारात्मक प्रभाव ग्राहकों ने भी महसूस किया है। आज 'कतार' बैंकिंग ने 'क्लिक' बैंकिंग का रूप धारण कर लिया है, जिससे ग्राहकों का मूल्यवान समय बच रहा है।

ऑनलाइन बैंकिंग की उन्नति से बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं का वितरण पहले से अधिक आसान और प्रभावी हो गया है और इससे नई स्पर्धा ने जन्म लिया है। गरीब और वंचित लोगों को प्रौद्योगिकी का बेहतर प्रयोग करके बैंक बिना शाखा खोले भी बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध करा सकते हैं। 'बायोमेट्रिक एटीएम' के द्वारा अनपढ़ लोग भी एटीएम का प्रयोग उतनी ही आसानी से कर सकते हैं जितने कि शिक्षित लोग। इसमें कार्ड धारक के अंगूठे का निशान स्कैन करके सर्वर में अपलोड कर दिया जाता है। 'माइक्रो एटीएम' कम लागत वाले एटीएम हैं जो कि नकदी आहरण एवं शेष राशि की जानकारी उपलब्ध कराता है।

भारत की आबादी की विशाल विविधता को देखते हुए सरकार ने विभिन्न वर्गों के लिए अलग-अलग विकल्पों को विकसित किया है। बड़ी संख्या में जागरुकता अभियानों की शुरूआत की गयी है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि ये आधुनिक दौर अब बैंकिंग सेवाओं के ऑनलाइन होने का दौर है जिसमें खुद की साख को बनाए रखने के लिए अब डिजिटल विकास आवश्यक है। आज के सेवा प्रधान युग में प्रतिस्पर्धा हेतु नए डिजिटल आयामों की खोज और जनसमूह के लिए उन्हें हिंदी भाषा में उपलब्ध कराने से बैंक को अपने लक्ष्यों तथा गृह मंत्रालय द्वारा हिन्दी भाषा संबंधित लक्ष्यों की प्राप्ति करने में आसानी होगी।

लक्ष्य-लघुकथा

भारत के दक्षिणी छोर में स्थित केरल राज्य के एक शहर में भारतीय वायुसेना के 'परिवार निवास' में समान आयुवर्ग के चार मित्र रहते थे। सभी के पिता भारतीय वायुसेना में कार्यरत थे। अवकाश के दिन चारों मित्र समीप ही स्थित तालाब की ओर जाते हुए प्रकृति का आनंद ले रहे थे। वर्षा भी हो रही थी। बातों-बातों में आभास ही नहीं हुआ कि कब तालाब का जलस्तर बढ़ गया। घर की ओर जाने के लिए केवल एक संकरा रास्ता ही बच गया था। किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। परन्तु कहते हैं कि जब विचार मिलते हों मंजिल एक हो, हृदय में कपट न हो एवं मन में एकता की भावना हो तो राह मिल ही जाती है। चारों मित्रों ने एक दूसरे के कंधों का सहारा ले कर तालाब को सरलता से पार कर लिया।

बचपन में सीखा यही पाठ उन्हें भविष्य में लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुआ और चारों मित्र आगे चलकर भारतीय सेना के विभिन्न अंगों में अधिकारी के रूप में कार्यरत हुए।

रजनीश कुमार
प्रबंधक मंडल कार्यालय-जम्मू

एक नजर फाजिल्का की ओर

संदीप गोकलानी, अधिकारी, मंडल कार्यालय–फाजिल्का

फाजिल्का की भूमि गुरुओं, पीरों पैगम्बरों, अवतारों और शहीदों के आशीर्वाद से ओत–प्रोत है तथा उनकी रहमत से यहाँ नेकदिल इंसान बसते हैं, जो हर क्षण दूसरों की सेवा करने को तत्पर रहते हैं। यहाँ श्री गुरू नानक देव जी और शहीद–ए–आजम सरदार भगत सिंह ने कदम रखकर इस धरती को पवित्र बनाया। भारत–पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा से मात्र 11 किलोमीटर की दूरी पर बसा फाजिल्का, पंजाब की सबसे पुरानी तहसील है, जो अब जिला बन चुका है। यह शहर 1844 में बसाया गया। दरिया के एक किनारे मुस्लिम समुदाय के 12 गाँव थे, जिनमें वट्टू, चिश्ती और बोदला जाति के मुस्लिम परिवारों की संख्या अधिक थी। इन गाँवों पर बहावलपुर और ममदोट के नवाबों का नियंत्रण था।

ईस्ट इंडिया कंपनी ने सबसे पहले यहाँ एक अंग्रेज अफसर पैट्रिक अलेक्जेडर वन्स एगन्यू को आर्गेनाइजेशन एजेंसी की देखरेख के लिए नियुक्त किया गया। वन्स एगेन्यू ने हार्श शू लेक यानि वाघा झील के किनारे एक बंगले का निर्माण करवाया। जिस कारण शहर का नाम बंगला पड़ गया। क्षेत्र की सीमा ममदोट, सिरसा, बीकानेर और बहावलपुर तक थी। फिर एगेन्यू के बाद जिला सिरसा के कैप्टन जे. एच. ऑलिवर को नियुक्त किया गया। यहाँ नगर को बसाने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी ने 32 एकड़ भूमि केवल 144 रुपए 8 आने में खरीदी थी। यह भूमि वट्टू जाति के मुखिया फजल खां वट्टू से खरीदी गई थी, लेकिन वट्टू की एक शर्त थी कि इस स्थान पर जो नगर बसाया जाएगा उसका नाम फजल खां के नाम से रखा जाए। उसके बाद शहर को फाजिल्का के नाम से पुकारा जाने लगा। सन् 1862 में अंग्रेजों ने सुल्तानपुरा, पैंचांवाली, खियोवाली, केरूवाला और बनवाला रकबे की 2165 बीघा भूमि और खरीद ली। यह भूमि 1301 रुपए में खरीदी गई। बाद में, 7 अगस्त 1867 में पंजाब सरकार की अधिसूचना 1034 के तहत फाजिल्का की सीमा तय की गई। फाजिल्का को कभी बाढ़ ने उजाड़ा, तो कभी प्लेग, भूख व गरीबी ने, लेकिन ऊन के व्यापार ने इस नगर को बहुत संभाला। व्यापार की दृष्टि से अंग्रेजों के न्योते पर यहाँ पेड़ीवाल, अरोड़वंश, अग्रवाल और मारवाड़ी समुदाय के लोगों ने यहाँ व्यापार कार्य आरंभ कर दिया। फाजिल्का एशिया की प्रसिद्ध ऊन मंडी बन गया। ऊन की गाँठें यहाँ तैयार होतीं और रेलगाड़ी के जरिये, दिल्ली, लाहौर और सिन्ध व कराची तक पहुँचाई जाती। वहाँ कराची की बन्दरगाहों से यह ऊन यूरोप की मंडियों तक पहुँचाई जाती थीं। ऐतिहासिक धरोहर घंटाघर जहाँ पंजाब विधानसभा की आर्ट गैलरी की शान है, वहीं भारत का गौरव है। घंटाघर 6 जून 1939 में बनाया गया।

सादकी चौकी: भारत–पाक सीमा के फाजिल्का की सादकी चौकी पर प्रतिदिन रिट्रीट सेरेमनी होती है। इस दौरान दोनों देशों का झंडा चढ़ाने उतारने की रस्म अदा की जाती है। यह सादकी चौकी देश की उन तीन चौकियों में शुमार है जहाँ रिट्रीट सेरेमनी की जाती है। इसके अलावा वाघा

हुसैनीवाला में भी रिट्रीट सेरेमनी की जाती है। फाजिल्का की सादकी चौकी पर यह रस्म देखने पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश तक के लोग आते हैं। यह शहर से करीब 14 किलोमीटर दूर स्थित है ।

आसफवाला समाधिः आसफवाला समाधि का नाम आते ही हर किसी का शीश अमर शहीदों के जवानों के समक्ष श्रद्धा से झुक जाता है। भारत–पाक युद्ध 1965 और 1971 की दास्तान बयां करती आसफवाला स्थित शहीदों की समाधि में 82 शहीदों की 90 फुट लंबी 18 फुट चौड़ी चिता जलाई गई थी। बाद में इन शहीदों की स्मृति में यहाँ पवित्र शहीदों की समाधि सभा का निर्माण किया गया। यहाँ हर साल 16 दिसंबर को विजय दिवस के मौके पर मेला आयोजित किया जाता है।

फाजिल्का का घंटाघरः फाजिल्का में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये शहर के बीचों–बीच स्थित ऐतिहासिक घंटाघर आकर्षण का केन्द्र रहता है। इस घंटाघर का निर्माण 6 जून 1936 को रामनारायण पेड़ीवाल के सहयोग से किया गया था। इसी कारण घंटाघर को रामनारायण पेड़ीवाल के नाम से जाना जाता है।

रघुवर भवनः फाजिल्का के बाहरी क्षेत्र की नई आबादी में स्थित रघुवर भवन एक सदी से ज्यादा पुराना है। रघुवर भवन को विरासत भवन के नाम से भी जाना जाता है । यह भवन ब्रिटिश साम्राज्य, मुगलकालीन हिंदू भवन निर्माण एवं वास्तुकला का उत्तम नमूना है।

विरासत भवन एवं गोल कोठीः सरकारी मॉडल सेकेंडरी स्कूल में लेक्चरार पम्मी सिंह द्वारा कबाड़ और पुरानी हो चुकी ऐतिहासिक महत्वपूर्ण वस्तुओं को संरक्षित कर स्कूल में विरासत भवन बनाया है। इसमें 1928 से बाद की स्कूल से संबंधित इतिहास के स्मृति चिन्ह स्वरूप फोटो सजाए गए हैं। इसी स्कूल में ब्रिटिश साम्राज्य में बनाई गई गोल कोठी भी है, जिसका निर्माण 1913 में किया गया था।

जोखिम प्रबंधन – बदलता स्वरुप

चारू लता, प्रबंधक, मंडल कार्यालय, नोएडा

गत एक दशक में वैश्विक वित्तीय संकटों के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आए नए–नए नियमों के कारण बैंकों में जोखिम प्रबंधन के स्वरूप में बहुत बदलाव आया है और रुझान इंगित कर रहे हैं कि आगामी एक दशक में इनमें अभी और बदलाव आएंगे।

ऋण का जोखिम प्रबंधन, बैंकों के लिए परंपरागत चुनौती रहा है मगर समय के साथ–साथ ब्याज दर, विदेशी मुद्रा विनिमय दर, शेयर मूल्य आदि भी महत्वपूर्ण हो चुके हैं। वर्तमान में, परिचालन जोखिम प्रबंधन, स्वस्थ जोखिम प्रबंधन का महत्वपूर्ण अंग है। वर्ष 1988 में बीसीबीएस (बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति) बासेल–I समझौते को लेकर आई जिसके अंतर्गत केवल ऋण जोखिम तत्व पर विचार किया गया था और जोखिम भारित कुल संपत्ति की 8% पूंजी निधि की न्यूनतम आवश्यकता को तय किया गया था।

वर्ष 2006 में बेसल–II समझौता पूँजी आवश्यकताओं के लिए काफी अधिक जोखिम संबंध संवेदनशील दृष्टिकोण पर पहुँच गया। इसने ऋण जोखिम, बाजार जोखिम और परिचालन जोखिम के लिए पूँजी आवश्यकताओं को निर्धारित करने के लिए कई विकल्प प्रदान किए।

वर्ष 2010 में 2008 के वित्तीय संकट की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए बासेल–III समझौते ने वित्तीय और आर्थिक तनाव से निपटने के लिए बैंकिंग क्षेत्रों की क्षमता में सुधार, जोखिम प्रबंधन में सुधार और बैंक की पारदर्शिता को मजबूत करने की माँग की।

इन्हीं रुझानों से पता चलता है कि बैंक आने वाले बदलावों के लिए कुछ पहल कर सकते हैं और नए पहलूओं से उपजने वाले जोखिम का निदान अथवा उसे कम सकते हैं। बासेल–IV संभवतः शीघ्र ही आने वाला हो सकता है और यह व्यापक और गहन नियामक सुधारों के साथ आ सकता है। आगामी दिनों में नए और अपरिचित जोखिमों का पता लगाना और उनका प्रबंधन करना होगा। मॉडल जोखिम, साइबर सुरक्षा जोखिम और संक्रामक जोखिम कुछ ऐसे ही जोखिम हैं जो अभी तक सामने आये हैं।

- **मॉडल जोखिम**– व्यवसाय मॉडलिंग पर बैंक की बढ़ती निर्भरता के परिणामस्वरूप ऐसे जोखिम प्रबंधकों की आवश्यकता है जो मॉडल जोखिम को बेहतर ढंग से समझते हों और उसका उचित प्रबंधन करना जानते हों कुछ मॉडलों में त्रुटियों के परिणाम अत्यधिक हो सकते हैं। जोखिम न्यूनीकरण मॉडल के विकास और सत्यापन के लिए दिशा–निर्देश और प्रक्रियाओं के साथ–साथ उनकी निरंतर निगरानी और सुधार की आवश्यकता होगी।

- **साइबर सुरक्षा जोखिम**– अधिकांश बैंकों ने पहले ही साइबर हमलों के खिलाफ सुरक्षा को सर्वोच्च रणनीतिक प्राथमिकता बना दिया है, लेकिन साइबर सुरक्षा केवल महत्व में वृद्धि करेगी और इसके लिए अधिक संसाधनों की आवश्यकता होगी। जैसे–जैसे बैंक अपने ग्राहकों के बारे में अधिक मात्रा में डेटा संग्रहीत करेंगे। साइबर हमलों का जोखिम और बढ़ने की संभावना है।

- **संक्रामक जोखिम**– वैश्विक बाजार में बैंक वित्तीय संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। बैंकों को संक्रमण के प्रति अपने जोखिम और प्रदर्शन पर इसके संभावित प्रभाव को मापने और ट्रेक करने की आवश्यकता है।

उच्च प्रबंधन को उन नए जोखिमों के लिए तैयार रहने हेतु जोखिम प्रबंधन कार्य को एक नए परिप्रेक्ष्य से देखने की आवश्यकता है और इससे निपटने के लिए बैंक की जोखिम क्षमता का पता लगाने तथा इन जोखिमों से निपटने की राह को खोजने की आवश्यकता होगी और इसे किसी भी नई जोखिम गतिविधि को पूरा करने के लिए अपने परिचालन मॉडल को अनुकूलित बनाने के लिए लचीलेपन की आवश्यकता होगी।

कहानी – ऋण माफी

प्रकृति पाटील, प्रबंधक, मंडल कार्यालय, मुंबई सेंट्रल

अरे मंगल आ गया तू। कब से राह देख रहा था तेरी। गायों को चारा डालना है। कब से भूखी तेरी राह देख रही हैं। आज देर कैसे हो गयी तुझे? गोपाल भरी आवाज में मंगल पर रौब दिखाते हुए बोला।

मालिक क्या बताऊँ ... बैंक वाले आ गए थे, बोलते हैं किस्त जमा करने की तारीख आ गई है। अगर समय पर किस्त नहीं दी तो खाता खराब हो जायेगा। मालिक खेत में सिंचाई के लिए बैंक से पैसे उधार लिए थे। खेती भी उतनी नहीं हुई और कर्जा भी चढ़ गया। गोबर की तबियत कुछ दिनों से ठीक नहीं है इस बार के सारे पैसे डॉक्टर की फीस में... ।

हाँ .. हाँ... ठीक है ठीक है। सारी कहानी सुनाएगा क्या ....! जा जाकर गाय भैसों को चारा डाल। गोपाल ने बेरुखी से उसकी बात को काटते हुए कहा।

...चली जाती है। अब बैंक के पैसे कहाँ से लाऊँ। थोड़ा आप मदद कर देते तो अच्छा होता। मंगल ने अपनी बात खुद से कहते हुए पूरी की, मानो वो खुद से बात करते हुए यह सोच रहा था कि गोपाल से भी पैसों की उम्मीद न रही। अब उसे किसी और के सामने हाथ फैलाने होंगे।

मंगल भूमिहीन किसान नहीं था। लेकिन पाँच भाईयों के बंटवारे में उसके हिस्से में जमीन का छोटा हिस्सा ही आया था। इसी जमीन को गिरवी रख कर मंगल ने बैंक से कुछ कर्ज लिया था। उसे डर था कि अगर उसका खाता खराब हो गया तो उसकी एकमात्र संपत्ति उसकी जमीन चली जाएगी और गाँव में उसकी बदनामी होगी सो अलग। आखिर यही तो होता है एक गरीब किसान के पास– इज्जत। मंगल का मानना था कि ऋण वसूली के लिए बैंक के किसी अधिकारी का उसके दरवाजे पर आना मतलब पूरे गाँव में उसकी बदनामी होना, इसीलिए वह समय पर बैंक की सारी किश्त भर देता था, गाँव में पुरखों के नाम से परिवारों को जाना जाता है। ये केवल मंगल की ही नहीं उसके पुरखों की भी इज्जत का सवाल था, इसलिए मंगल बैंक के मामलों को काफी गंभीरता से लेता था।

- अरे मंगल ! गाय भैंसों को चारा डाल दिया क्या? जरा लाल वाले ट्रैक्टर पर पानी तो डाल दे।
- जी मालिक।
- जरा जल्दी–जल्दी हाथ चला। आज सारे ट्रैक्टर धो देना। खेत का कुछ काम नहीं है और जाने से पहले छज्जे पर से लकड़ियाँ उतार कर जाना।
- जी मालिक।

तेरी मजबूरी ने तुझे नौकर बना दिया रे मंगले ! हम तो जनम से ही गुलाम थे। तू भी इस उधारी में फंस गया।–दीना ने बड़े ही दुखी स्वर में कहा। दीना, गोपाल के घर काम करने वाले नौकरों में से एक था। दीना मंगल की बीवी सुलोची के गाँव का था इसलिए उसे मंगल के परिवार की स्थिति का पता था।

क्या करें दीना, ऊपर वाले ने साथ नहीं दिया। वरना आज मजूरी नहीं करनी पड़ती। पिछले साल आई बाढ़ में सब बह गया। अपने खेत में ऊपर वाले की दया से इतना तो हो ही जाता था कि साल भर का खर्चा भी निकल जाता था और बैंक की किश्त भी।– मंगल ने लाचारी भरे स्वर में कहा,–

''हाँ रे मंगल ! लछमी के ब्याह में भी तूने कोई कसर नहीं छोड़ी। सालों की जमा पूँजी से कितने ठाठ से ब्याह किया था। तब भी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया। तीन गाँव को न्योता गया था। पूरे गाँव में नाम है तेरा और तेरे परिवार का''– दीना ने कहा।

उसी नाम की खातिर तो यहाँ हूँ रे दीना। बस एक बार ये कर्जा पूरा हो जाये, आज भी बैंक वाले आये थे, सुलोची और गोबर तो मारे शर्म के देहलीज के बाहर ही नहीं आये, पूरा गाँव ही आ खड़ा हुआ था आँगन में, हाथ–पैर जोड़े अधिकारी बाबू के। तमाशा ही बन गया था। मारे लाज के मैं तो आधा जमीन में ही धंस गया था मानो, किसी तरह इस महीने की मोहलत माँगी है। किसी तरह पैसों का इंतजाम हो जाये तो इस बार खाता पलटी करवा लूँगा। खाता खराब नहीं होगा। वरना पता नहीं और कितना पैसा भरना पड़ेगा।

बस कुछ ही दिनों के लिए थोड़े पैसे चाहिए। बनिए के आगे ही हाथ फैलाना पड़ेगा...।

क्या बात करता है रे मंगले! बनिया तो बहुत सूद लेता है। बैंक का कर्जा तो उतर भी जायेगा लेकिन बनिए के कर्ज से इस गाँव में आज तक कोई नहीं उबर पाया है। याद है न गोधन..? खुद तो मर गया आज तक उसके घर वाले बनिए के नौकर बने हुए हैं।

मंगल और दीना काम करते रहें और बातें करते रहें। पीछे से गोपाल ने आकर आवाज दी–

ट्रैक्टर साफ कर दिया ? आज बैंक जाना है। बड़े दिन से बैंक के बाबू ने परेशान किया हुआ है। आज जाकर उसका भी हिसाब कर आता हूँ ...।

आज बैंक ने ओटीएस (OTS) शिविर लगाया था। यहाँ उन सभी लेनदारों के ऋणों का एकमुश्त निपटान किया जाना था जिंहोंने लम्बे समय से किस्त जमा नहीं की थी और उनका खाता खराब हो गया था, मंगल को भी इसकी जानकारी थी। पैसे उसके पास भी नहीं थे, वह भी इस शिविर में आने वाला था, शायद बैंक के बाबू उस पर दया खाकर उसकी कुछ किस्त कम कर दें। अपना काम निपटा कर मंगल भी शिविर में पहुँचा। बैंक के आगे तिरपाल लगा हुआ था। दूर–दूर से किसान अपने खाते के एकमुश्त भुगतान के लिए वहाँ आये हुए थे। बैंक द्वारा काफी अच्छी व्यवस्था की गयी थी। गोपाल भी वहीं एक कुर्सी पर बैठा हुआ था। मंगल भी वहाँ जाकर बाबू की मेज के किनारे बैठ गया। गोपाल गाँव का नामी आदमी था। अच्छे–अच्छे जमींदारों, साहूकारों, सरकारी अफसरों से उसकी अच्छी पहचान थी। बैंक के अधिकारी को भी इसकी जानकारी थी। इसलिए बैंक का अधिकारी भी उसकी इज्जत करता था।

देखिये गोपाल जी ! ... आपने पिछले एक साल से कोई भी किस्त नहीं भरी है। आपको तो पता ही है आपका खाता खराब हो गया है। बैंक अधिकारी ने गोपाल को समझाते हुए कहा।

अब खेती हुई नहीं। सो कमाई भी नहीं हुई। अब जब कमाई ही नहीं हुई तो आपके पैसे कहाँ से दें ? – गोपाल ने अकड़ के साथ कहा और बैंक की सारी किताबें मैनेजर के सामने मेज पर रख दीं।

मैनेजर ने सभी किताबों को उठाया और विचार करते हुए कहा ठीक है आप एक काम कीजिये बैंक आपको कुल दस हजार के नुकसान पर आपका सारा बकाया भरने का अवसर देता है। यूँ समझ लीजिये बैंक की तरफ से आपको आपके कुल बकाया राशि पर दस हजार की छूट मिल रही है । बाकी बकाया जमा कर के खाता बंद करवा लो। गोपाल पैसे जमा करने के आश्वासन के साथ वहाँ से चला गया।

वहीं पास में बैठा हुआ मंगल ये बातें सुन रहा था, दस हजार की छूट की बात सुनकर मंगल के मन में उम्मीद की लहर दौड़ गयी। उसने भी बैंक के अधिकारी बाबू से अपने कर्ज पर छूट की बात की।

साहेब!– हाथ जोड़कर आदर के साथ मंगल बैंक अधिकारी के सामने खड़ा हो गया।

अरे मंगल तुम यहाँ क्या कर रहे हो ? किसी के साथ आये हो ? ... बैंक मैनेजर मंगल को पहचानता था, वह उसे देखते ही पहचान गया।

साहब यहाँ मैं अपने खाते के लिए आया हूँ, किसी ने बताया आज बैंक में कोई शिविर है। जो किसान पैसा नहीं दे पाते हैं उनको छूट मिलती है उसका खाता बंद हो जाता है, देखो न साहब ये बैंक की किताबें देखकर बताओ न मुझे कितनी छूट मिलेगी ? मैंने हर बार समय पर पैसा जमा किया है। साहब बताओ न कितनी छूट मिलेगी। मेरा भी खाता बंद करवा दो साहब।– मंगल ने लाचारी भरे भाव में कहा, मंगल को पूरी उम्मीद थी कि जब पिछले एक साल की किस्त जमा न करने पर भी गोपाल को दस हजार की छूट मिली है तब उसने तो हर बार समय पर पैसा जमा कराया है। उसे भी जरूर छूट मिलेगी, हो सकता है नियम से पैसे जमा कराने के कारण उसे गोपाल से भी ज्यादा रियायत मिल जाये। गोपाल तो पैसे वाला है। मंगल तो गरीब किसान है। उसे तो और ज्यादा छूट मिलनी चाहिए।

ये शिविर तुम्हारे लिए नहीं है मंगल, ये तो उन किसानों के लिए है जो गरीब हैं और पैसो की कमी के कारण कर्ज के रुपये भर नहीं पाए हैं। तुमने तो सभी किश्त समय पर भरी हैं। तुम्हें कोई छूट नहीं मिलेगी। बैंक अधिकारी ने मंगल को समझाते हुए कहा। बैंक अधिकारी गोपाल की धूर्तता को समझ चुका था। गोपाल की चालाकी और मंगल के सरल व्यवहार को जानते हुए भी वह मंगल की सहायता न कर पाने के लिए विवश था।

कुछ देर के लिए मंगल स्तब्ध रह गया। वह यह सोच कर हैरान था कि जिस सेठ के घर वह नौकर है, जिससे तनख्वाह लेकर वह अपने कर्ज चुका रहा है वह गरीब है? यह सोचता हुआ मंगल अपना सा मुँह लिए घर वापस आ गया।

बैंकिंग और परिचालनात्मक जोखिम (Operational Risk)

प्रेम प्रकाश सिन्हा, मुख्य संकाय, कार्मिक प्रशिक्षण केंद्र,दिल्ली

आकर्षक वित्तीय उत्पादों और नवीनतम ट्रेडिंग तकनीकों के आगमन के कारण पिछले कुछ वर्षों में बैंकिंग व्यवसाय काफी विकसित हुआ है। लेकिन सूचना प्रौद्योगिकी के विकास और वित्तीय बाजारों के वैश्वीकरण से बैंकों का जोखिम प्रबंधन काफी हद तक प्रभावित हुआ है।

आधुनिकीकरण, उदारीकरण और बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण बैंकिंग क्षेत्र में जोखिम की दर बढ़ी है। भारत में बैंकिंग कारोबार तेजी से बदलाव के दौर से गुजर रहा है। जैसे – जैसे डिजिटलीकरण ने गति पकड़ी है, बैंक अब नए प्रकार के व्यावसायिक जोखिमों का सामना कर रहे हैं। जोखिम किसी भी व्यावसायिक उपक्रम में अंतर्निहित है और जोखिम का प्रबंधन एक व्यवसाय को लाभप्रद बनाए रखने की एक महत्वपूर्ण युक्ति है। बैंक धोखाधड़ी के प्रभावी प्रबंधन के लिए पूर्व चेतावनी संकेतों (EWS) या रेड–फ्लैग संकेतकों का पता लगाना महत्वपूर्ण है।

परिचालनात्मक जोखिम (Operational Risk) संसाधनों की अपर्याप्तता या विफलता के कारण आंतरिक प्रक्रियाओं, प्रणालियों या बाहरी घटनाओं से व्यवसाय को होने वाले नुकसान का जोखिम है। उदाहरण के लिए ऋण (क्रेडिट) स्वीकृति प्रक्रिया में त्रुटि या धोखाधड़ी के कारण ऋण (क्रेडिट) लागत बढ़ सकती है। ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि व्यापार चक्र की आर्थिक मंदी के दौरान और प्राकृतिक आपदाओं और युद्ध (रूस और यूक्रेन में मौजूदा संघर्ष) जैसे बाहरी प्रतिकूल प्रभावों के कारण परिचालन घाटे का जोखिम काफी बढ़ जाता है जिसके परिणामस्वरूप भौतिक संपत्ति को नुकसान होता है। आजीविका के अवसरों की समाप्ति और संपत्ति के नुकसान से गंभीर व्यावसायिक क्षति हो रही है।

जोखिम प्रबंधन के प्रभावी ढाँचे के लिए एक मजबूत जोखिम प्रबंधन प्रक्रिया, सक्रिय आंतरिक नियंत्रण, उचित रिपोर्टिंग और आकस्मिक योजना की आवश्यकता होती है। परिचालन जोखिम संकेतक, जोखिम प्रबंधन में महत्वपूर्ण उपकरण हैं क्योंकि वे संभावित उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों की पूर्व सूचना प्रदान करते हैं ताकि समय पर उचित कार्रवाई की जा सके। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम साइबर उल्लंघनों या हैकिंग की घटनाओं का पता लगा सकता है जिससे जोखिम प्रबंधन करने में सहायता मिलती है ।

साइबर जोखिम, प्राकृतिक आपदा के अलावा आंतरिक या बाहरी धोखाधड़ी, फंड ट्रांसफर में त्रुटियाँ, गोपनीय प्रकृति की ग्राहक जानकारी के दुरुपयोग और संचार लिंक में व्यवधान के कारण परिचालन हानि उत्पन्न होने के प्रमुख कारण हैं। दुनिया भर में परिचालन हानि की बढ़ती घटनाओं ने बैंकों और नियामकों को समग्र जोखिम नियंत्रण के अभिन्न अंग के रूप में परिचालन जोखिम प्रबंधन पर तेजी से ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया है।

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा 'संचालन जोखिम के लिए न्यूनतम पूँजी आवश्यकताओं पर प्रकाशित निर्देश के अनुसार बासेल – III के तहत नए पूँजी पर्याप्तता ढाँचे के लिए बैंकों को परिचालन जोखिमों के लिए स्पष्ट रूप से पूँजी रखने की आवश्यकता है। भारतीय रिज़र्व बैंक के 1 अप्रैल 2020 से लागू नए निर्देश के अनुसार, 8,000 करोड़ से अधिक के बिजनेस इंडिकेटर रेंज वाले भारतीय बैंकों को परिचालन जोखिम पूँजी गणना के लिए हानि वाले डेटा को इनपुट के रूप में उपयोग किया जाएगा। बैंक के बिजनेस इंडिकेटर का अनुमान उनकी वार्षिक लाभ–हानि या बैलेंस शीट की मदों (आइटम) से लगाया जाएगा। संशोधित निर्देश भारत में सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों पर लागू होंगे। हालांकि, घाटे के डेटा मानकों को पूरा नहीं करने वाले बैंकों को मौजूदा बेसिक इंडिकेटर एप्रोच (बीआईए) के 100% पर पूँजी रखने की आवश्यकता होगी।

आरबीआई के दिशानिर्देशों के अनुसार राष्ट्रीय पर्यवेक्षकों द्वारा समय–समय पर न्यूनतम हानि के आंकड़ों की गुणवत्ता की समीक्षा की जाएगी। हानि डेटा की व्यापकता और सटीकता की स्वतंत्र रूप से समीक्षा करने के लिए बैंकों के पास प्रक्रियाएँ होनी चाहिए।

डेटा प्रबंधन बैंकों को परिचालन विफलताओं के कारण होने वाले प्रतिकूल व्यावसायिक प्रभावों का आंतरिक रूप से आकलन करने व सहायक कदम उठाने में कारगर होगा। बैंकों को अपने नुकसान के आँकड़ों के साथ–साथ परिचालन जोखिम प्रबंधन प्रक्रियाओं में सुधार और उपयुक्त आकस्मिक योजना का संचालन करना होगा। बाहरी घटनाओं (आर्थिक मंदी, युद्ध, राजनीतिक अशांति आदि) के प्रतिकूल व्यावसायिक प्रभाव को मापने के लिए संभावित परिदृश्यों को शामिल करना भी आवश्यक है। एक प्रभावी तनाव–परीक्षण ढाँचा, बाहरी डेटा और व्यावसायिक वातावरण और आंतरिक नियंत्रण कारक बैंकों को चरम परिदृश्यों के लिए पूँजी को सरंक्षित करने में सक्षम बनाते हैं। साथ – साथ बैंकों को बाजार में बने रहने के लिए अपनी वित्तीय सुदृढ़ता और विश्वसनीयता बनाए रखने हेतु परिचालन जोखिम प्रबंधन को प्रभावी तरीके से लागू करना होगा।

काव्य प्रतिभा

के लिए

महकती है कलियाँ बाग में खुशबू फ़ैलाने के लिए।
और बदलते हैं मौसम रुत नई दिखलाने के लिए।।

उगता है सूरज उजाला फैलाकर अँधेरा मिटाने के लिए।
ढलता है दिन रात में चाँद के चमचमाने के लिए।।

टिमटिमाते हैं तारे नभ की सुन्दरता बढ़ाने के लिए।
उठती है समंदर में लहरें साहिल से टकराने के लिए।।

गिरती हैं बारिश की बूंदे सीप में मोती बन जाने के लिए।
कूकती है कोयल बारिश से प्यास अपनी बुझाने के लिए।।

मिलते हैं सात सुर एक नया संगीत बनाने के लिए।
आता है बसंत धरती को फूलों से सजाने के लिए।।

मिलते हैं लोग मिलकर अजनबी बन जाने के लिए।
आती हैं तकलीफें जिन्दगी में मजबूत हमें बनाने के लिए।।

लगती हैं सभी को ठोकरें गिरकर फिर संभल जाने के लिए।
टूटता है रिश्ता शायद एक नया रिश्ता बनाने के लिए।।

सजते हैं ख्वाब आँखों में हकीकत में बदल जाने के लिए।
करती है साजिश कायनात हमें अपनों से मिलाने के लिए ।।

आते हैं अभाव जिन्दगी में कुछ बनकर दिखलाने के लिए ।
आती हैं बाधाएं हमें ऊँची छलांग लगाना सिखाने के लिए ।।

बिखरते हैं हम शायद टूटकर कर फिर जुड़ जाने के लिए ।
टूटता है दिल फिर मजबूत होकर संभल जाने के लिए ।।

हृदय कुमार
राजभाषा अधिकारी
राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं समीक्षा बैठक का आयोजन

पंजाब नैशनल बैंक, प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा कार्मिक प्रशिक्षण केंद्र (सीएसी), सिविल लाइन्स, नई दिल्ली में राजभाषा अधिकारियों के लिए दिनांक 14 तथा 15 मार्च 2022 को दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन तथा समीक्षा बैठक का आयोजन पूरे कोरोना प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुए किया गया जिसमें क्षेत्र 'क' एवं 'ख' में अंचल और मंडल कार्यालयों में पदस्थापित राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया।

दिनांक 14 मार्च 2022 को सम्मेलन का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री बाबू लाल मीणा, निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, राजभाषा विभाग की विभागाध्यक्षा श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक, श्रीमती रंजना खरे, प्रधानाचार्या, कार्मिक प्रशिक्षण केंद्र (सीएसी), दिल्ली, श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में श्रीमती संध्या प्रसाद तथा सुश्री शिवानी द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई।

श्री मीणा ने अपने उद्बोधन में सर्वप्रथम समस्त पीएनबी परिवार और राजभाषा विभाग को लगातार चौथे वर्ष कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करने के लिए बधाई और साधुवाद दिया। उन्होंने पंजाब नैशनल बैंक में हिंदी के उत्तरोत्तर विकास और प्रचार–प्रसार हेतु किए जा रहे नवोन्मेषी कार्यों की सराहना भी की। मुख्य अतिथि द्वारा वर्ष 2020 तथा 2021 के लिए अंचल तथा मंडल कार्यालयों में पदस्थापित राजभाषा अधिकारियों को राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए लाला लाजपत राय राजभाषा शील्ड और प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गए। प्रतिभागियों को राजभाषा रिपोर्टिंग पद्धति, संसदीय राजभार समिति की प्रश्नावली, सीबीएस व एचआरएमएस का द्विभाषी सॉफ्टवेयर, नवीनतम राजभाषा निर्देश, नराकास का महत्व आदि विषयों के सत्रों में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

तदनुपरांत श्री हरिश्चंद्र राम, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने लाला लाजपत राय शील्ड मूल्यांकन मानदंड विषय पर सत्र लेते हुए सभी प्रतिभागी राजभाषा अधिकारियों को इसकी विस्तृत जानकारी प्रदान की।

15 मार्च 2022 को समीक्षा बैठक की अध्यक्षता श्री एस. के. दाश, महाप्रबंधक, राजभाषा ने की। इस अवसर पर श्री दाश ने अपने संबोधन में सभी प्रतिभागियों को हिंदी में संबोधित करते हुए सभी अंचलों और मंडलों की हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन करने और गृह मंत्रालय से पुरस्कार प्राप्त करने वाले अंचल और मंडल कार्यालयों में पदस्थापित राजभाषा अधिकारियों की भूरी–भूरी प्रशंसा की तथा उन्हें अपने प्रदर्शन को बरक़रार रखने हेतु उनका उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग, भारत सरकार से श्री भीम सिंह, उप निदेशक उपस्थित थे। पंजाब नैशनल बैंक द्वारा वर्ष 2021–22 में किये गए राजभाषा के नवोन्मेषी कार्यो तथा अर्जित की गई उपलब्धियों की एक पीपीटी प्रस्तुति दी गई। श्री भीम सिंह ने कहा कि पंजाब नैशनल बैंक हिंदी के क्षेत्र में लगातार नए–नए नवोन्मेषी कार्य कर रहा है और विभिन्न स्तरों पर वह इसमें सफल भी हुआ है जिसका प्रमाण है बैंक का लगातार चार वर्षों से कीर्ति पुरस्कार जीतना। श्री भीम सिंह जी ने अपने संबोधन में देश के कोने–कोने से आये सभी राजभाषा अधिकारियों को हिंदी का सच्चा सेवक बताते हुए हिंदी के क्षेत्र में उनके योगदान की सराहना की। अंचल कार्यालय से आए राजभाषा अधिकारियों ने वर्ष 2021 में हिंदी के क्षेत्र में अंचल और मंडल द्वारा अर्जित उपलब्धियों की पीपीटी के माध्यम से एक संयुक्त प्रस्तुति भी दी। महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा राजभाषा के विभिन्न मानदंडों पर सभी अंचल एवं मंडल कार्यालयों की विस्तृत समीक्षा की गई। इस अवसर पर श्रीमती रंजना खरे, प्रधानाचार्या, कार्मिक प्रशिक्षण केंद्र (सीएसी), दिल्ली, श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), श्री हरिश्चंद्र राम, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) भी उपस्थित थे। श्री अखिलेश कुमार अरुण पाण्डेय, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ने मंच संचालक की भूमिका को बखूबी निभाते

हुए कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम में सम्मिलित हुए सभी अधिकारियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए राजभाषा सम्मेलन के समापन की औपचारिक घोषणा की।

राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारका, नई दिल्ली के तत्वाधान में अंचल कार्यालय, लखनऊ द्वारा क्षेत्र 'क' तथा 'ग' क्षेत्र में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों के लिए दिनांक 24 मार्च तथा 25 मार्च 2022 को लखनऊ स्थित स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज मे दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें लगभग 75 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर अंचल प्रबन्धक श्री संजय गुप्ता, स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज, लखनऊ के प्रधानाचार्य, श्री नरेंद्र कुमार बजाज (सहायक महाप्रबंधक), प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग से श्रीमती मनीषा शर्मा (सहायक महाप्रबंधक) तथा श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा, मुख्य प्रबन्धक, राजभाषा विभाग द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलन कर शुभारंभ किया गया। सर्वप्रथम श्री नरेंद्र कुमार बजाज ने उपस्थित राजभाषा अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि राजभाषा अधिकारियों का यह दो दिवसीय सम्मेलन काफी उपयोगी सिद्ध होने वाला है। उन्होंने उपस्थित सभी अधिकारियों से बैंक में दिन–प्रतिदिन होने वाले बदलावों से भी जुड़े रहने के लिए कहा जिससे बैंक के सभी क्षेत्रों की जानकारियों से राजभाषा अधिकारी अवगत हो सकें।

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग से पधारी श्रीमती मनीषा शर्मा (सहायक महाप्रबंधक) ने उपस्थित राजभाषा अधिकारियों को राजभाषा प्रगति तथा भविष्य मे राजभाषा को और अधिक व्यापक रूप में प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होने बैंकिंग में हिन्दी के महत्व को बताते हुए कहा कि आज जब विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के माध्यम से आम जनमानस हिन्दी के प्रति काफी जागरूक हुआ है तो हमें भी उसी की भाषा में ही बैंकिंग करनी चाहिए जिससे की समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक भी बैंकिंग सुविधाए पहुँचाई जा सकें। उन्होंने कहा कि जब ग्राहक को उसी की भाषा मे बैंकिंग संबंधी आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध कराए जाते हैं तो वह बैंक से सीधे तौर पर जुड़ पाता है।

अंचल प्रबंधक, श्री संजय गुप्ता ने कहा कि राजभाषा विभाग बैंक के अन्य विभागों की तरह ही अत्यंत महत्वपूर्ण विभाग है, यह और भी महत्वपूर्ण तब हो जाता है जब लगातार चार वर्षों से राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय का सर्वोच्च पुरस्कार राजभाषा कीर्ति पुरस्कार पंजाब नैशनल बैंक को ही प्राप्त हो रहा है। हम सभी को बैंक के ब्रांड एम्बेसडर की तरह कार्य करना चाहिए जिससे हम बैंक को ऊँचाई पर पहुँचा सकें। इस अवसर पर वर्ष 2020 और 2021 में हिंदी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु अंचल तथा मंडल कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों को मुख्य अथिति द्वारा लाला लाजपत राय राजभाषा शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किए गए।

अंत मे श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा, मुख्य प्रबन्धक, राजभाषा विभाग ने उपस्थित सभी वक्ताओं तथा अंचल प्रबंधक को संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी राजभाषा अधिकारीगण बैंक के उत्थान के लिए तत्पर हैं तथा बैंक द्वारा समय–समय पर दिये जाने वाले उत्तरदायित्वों का बखूबी निर्वहन कर रहे हैं।

इस दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं समीक्षा बैठक में देश के विभिन्न मंडल तथा अंचल कार्यालय से पधारे हुये राजभाषा अधिकारियों को राजभाषा संबंधी विभिन्न बिन्दुओं जैसे – मासिक तथा तिमाही प्रगति रिपोर्ट की रिपोर्टिंग, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग को प्रेषित की जाने वाली रिपोर्ट, संसदीय राजभाषा समिति तथा भारतीय रिज़र्व बैंक की विभिन्न समितियों के निरीक्षण से संबन्धित सारगर्भित विषय पर प्रकाश डाला गया। बैंक के ऑनलाइन राजभाषा पोर्टल पर मार्च तिमाही की समाप्ति पर भरी जाने वाली वार्षिक रिपोर्ट मे भी कोई त्रुटि न हो इसके लिए भी दिशानिर्देश दिये गए। नराकास की बैठकों के संबंध में सभी राजभाषा अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि वे अपने कार्यालय प्रमुख के साथ अवश्य भाग लें।

दो दिवसीय इस सम्मेलन की समाप्ति पर सभी अधिकारियों ने आश्वस्त किया कि जिस तरह विगत वर्षो में राजभाषा का सर्वोच्च पुरस्कार राजभाषा कीर्ति पुरस्कार बैंक को प्राप्त हो रहा है उसकी निरंतरता बनाए रखी जाएगी।

राजभाषा गतिविधियाँ

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का निरीक्षण दिल्ली बैंक नराकास के अध्यक्ष एवं पंजाब बैंक नैशनल बैंक के मुख्य महाप्रबंधक एवं अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय, दिल्ली, श्री समीर बाजपेयी के संयोजन में किया गया। इस अवसर पर विज्ञान भवन, नई दिल्ली में माननीय समिति के अध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब के अलावा समिति के सदस्यगण श्री राम चन्द्र जांगड़ा, प्रो. रीता बहुगुणा जोशी, श्री चिराग पासवान, श्री प्रदीप टम्टा, डॉ. मनोज राजोरिया आदि के साथ गृह मंत्रालय, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय दिल्ली–1 से श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक भी उपस्थित थे।

हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला से पंजाब नैशनल बैंक की सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती सविता चड्ढा को मिला हरियाणा गौरव सम्मान। हरियाणा राज्य के मुख्यमंत्री माननीय श्री मनोहर लाल खट्टर से सम्मान ग्रहण करते हुए श्रीमती सविता चड्ढा।

दिल्ली अंचल कार्यालय की जनवरी–मार्च तिमाही हेतु राजभाषा समीक्षा बैठक के दौरान मंडल कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली, उप मंडल प्रमुख एवं मुख्य प्रबंधक, श्री विजेंद्र सिंह जी की अध्यक्षता में सभी स्टाफ–सदस्यों के साथ राजभाषा समीक्षा बैठक करते हुए मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), श्री आशीष शर्मा।

मंडल कार्यालय, रेवाड़ी के सम्मेलन कक्ष में मंडल के स्टाफ सदस्यों के लिए एक दिवसीय "राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में बाधाएं एवं समाधान" विषय पर आयोजित राजभाषा सेमीनार सह हिन्दी कार्यशाला में भाग लेते सभी स्टाफ सदस्यगण।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, झांसी के तत्वावधान में मंडल कार्यालय, झांसी में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला और राजभाषा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता की अध्यक्षता करते हुए एम.सी. सी. प्रमुख श्री विजय कुमार अग्रवाल। साथ में हैं राजभाषा प्रभारी, मुख्य प्रबंधक श्री पुनीत कुमार सिंह और नराकास सचिव, श्री भगवान दास और अन्य सदस्य कार्यालयों से पधारे हुए राजभाषा अधिकारी एवं प्रतिभागी।

राजभाषा गतिविधियाँ

कार्मिक प्रशिक्षण केंद्र, दिल्ली में प्रधानाचार्या श्रीमती रंजना खरे की अध्यक्षता में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही समीक्षा बैठक (जनवरी–मार्च 2022) के दौरान मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), श्री पांडे अखिलेश कुमार अरुण तथा वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), श्रीमती सपना बजाज तथा अन्य स्टाफ सदस्यगण।

मंडल कार्यालय, कोलकाता उत्तर द्वारा पाँच दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की सहायक निदेशक (प्रशिक्षण) श्रीमती लेखा सरीन तथा कोलकाता केंद्र के वरिष्ठ सलाहकार व केंद्र प्रभारी श्री नवीन प्रजापति को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर मंडल प्रमुख श्री पुष्कर तराई सहित मंडल के सभी स्टाफ सदस्य भी उपस्थित थे।

नराकास बैंक राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में प्रशासकीय संवर्ग में मंडल कार्यालय, नागपुर को प्रथम पुरस्कार तथा विभिन्न अंतर बैंक प्रतियोगिताओं में नगर स्थित शाखा कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों को 6 पुरस्कारों के साथ कुल 7 पुरस्कार प्राप्त हुए, श्री आशीष चतुर्वेदी, मंडल प्रमुख, नागपुर प्रथम पुरस्कार स्वरूप राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए। साथ में है वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा) सुश्री ममता वारके।

अंचल कार्यालय, आगरा द्वारा "हर एक काम हिंदी के नाम" अभियान के तहत श्री महेंद्र चावला को उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर सम्मानित करते हुए उप अंचल प्रबंधक श्री ज्योतिष प्रसाद।

मंडल कार्यालय, कोलकाता (उत्तर) द्वारा मंडल प्रमुख, श्री पुष्कर तराई की अध्यक्षता में मार्च 2022 तिमाही हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान मंडल प्रमुख, श्री तराई विभिन्न विभागों के स्टाफ सदस्यों की तिमाही हिंदी प्रगति की समीक्षा करते हुए।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुजफ्फरनगर की छमाही समीक्षा बैठक के दौरान मंडल कार्यालय, मुजफ्फरनगर को नगर स्तर पर राजभाषा का उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। अध्यक्ष नराकास, श्री विशाल अग्रवाल से पुरस्कार ग्रहण करते हुए उप मंडल प्रमुख, मुजफ्फरनगर, श्री ललित शर्मा। साथ में हैं श्री राजीव लोचन, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), अंचल कार्यालय, मेरठ।

राजभाषा गतिविधियाँ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, झांसी के तत्वावधान में मंडल कार्यालय, झांसी में आयोजित राजभाषा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में सहभागिता करते हुए नराकास, झांसी के सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागीगण। साथ में हैं नराकास सचिव श्री भगवान दास और राजभाषा अधिकारी, जीतेंद्र कुमार अहिरवार और अन्य कार्यालयों से पधारे हुए राजभाषा अधिकारीगण।

दिनांक 4 फरवरी 2022 को मंडल कार्यालय, उत्तरी दिल्ली में 'हिन्दी प्रयोग हेतु तकनीकी टूल्स' विषय पर आयोजित हिन्दी संगोष्ठी में शाखा प्रबंधकों को सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री अजय सक्सेना।

प्रधान कार्यालय के प्रभागों/विभागों की राजभाषा संगोष्ठी व कार्यशाला

राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा हिंदी के उत्तरोतर विकास तथा उसके प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में (दिनांक 15.02.2022) प्रधान कार्यालय में स्थित प्रभागों/ विभागों के लिए "राजभाषा के विभिन्न उपयोगी ई–टूल्स एवं बैंकिंग कार्यों में इसका प्रयोग" विषय पर "सिस्को वेबेक्स" के माध्यम से एक दिवसीय ई–कार्यशाला एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रधान कार्यालय के समस्त प्रभागों/विभागों के स्टाफ सदस्यों ने उत्साहपूर्वक और सक्रिय रूप से सहभागिता की।

संगोष्ठी की अध्यक्षता राजभाषा विभाग की विभागाध्यक्षा श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक ने की। कार्यक्रम में संचालक की भूमिका श्री हरिश्चंद्र राम, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने निभाई। श्रीमती नेहा सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने सभी स्टाफ सदस्यों को विभिन्न उपयोगी ई–टूल्स जैसे ई–लर्निंग (पीएनबी यूनिव), प्रवाचक, लीला स्वप्रशिक्षण टूल, लिंग्वाफाई बैंक सॉफ्टवेयर, हिन्दी में ई–मेल में सहायक ई–टूल्स, ऑनलाइन यूनिकोड–विकृति संशोधक, राजभाषा ई–टूल्स से संबंधित उपयोगी वेबसाईट आदि की जानकारी दी और बैंकिंग कार्यों में इसके उपयोग पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रशिक्षण सत्र के दौरान प्रतिभागियों के द्वारा पूछे गए सभी प्रश्नों का रोचक ढंग से उत्तर देते हुए उनकी शंकाओं का निवारण भी किया। कार्यशाला के अंतिम चरण में सभी प्रतिभागियों से कार्यशाला से संबंधित विभिन्न प्रश्न भी पूछे गए, जिसमें सभी प्रतिभागियों ने बढ़–चढ़कर प्रतिभागिता की और बड़े ही उत्साह से सभी प्रश्नों का उत्तर दिया।

सीएसआर गतिविधियाँ

पीएनबी, अंचल कार्यालय, जोधपुर द्वारा कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के तहत बेरिकेट्स भेंट करने के उपरान्त' फीता काटते हुए डीसीपी, जोधपुर, श्री विनीत बंसल। साथ में हैं अंचल प्रबंधक, श्री अमित कुमार श्रीवास्तव एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

पीएनबी, अंचल कार्यालय, जोधपुर द्वारा कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) गतिविधियों के तहत जोधपुर पुलिस मुख्यालय में वॉटर कूलर भेंट करने के उपरान्त फीता काटते हुए डीसीपी जोधपुर श्री विनीत बंसल एवं अंचल प्रबंधक, श्री अमित कुमार श्रीवास्तव, अंचल कार्यालय, जोधपुर।

अंचल कार्यालय, मेरठ द्वारा सीएसआर गतिविधि के तहत गणतंत्र दिवस के अवसर पर राजकीय प्राथमिक विद्यालय, भावनपुर (मेरठ) में एक इनवर्टर सेट व अलमारी प्रदान की गई। इस अवसर पर अंचल प्रबंधक श्री एस. पी. सिंह, उप अंचल प्रबंधक, श्री संजीव श्रीवास्तव, सहायक महाप्रबंधक, श्री राजकुमार अग्रवाल एवं श्री सतीश बजाज तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा विद्यालय के स्टाफ व जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

अंचल प्रबंधक श्री गणपत लाल द्वारा बदायूँ मंडल कार्यालय का किया गया। इस दौरे के दौरान कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) गतिविधियों के अंतर्गत विशाल ऋण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बैंक के ग्राहकों को ऋण स्वीकृति पत्र प्रदान करते हुए अंचल प्रबंधक श्री गणपत लाल।

शामली जिले के ऊन ब्लॉक के गागोर ग्राम में वित्तीय साक्षरता सप्ताह के दौरान–'डिजीटल चुनो, सुरक्षा के साथ' शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में जिला अग्रणी बैंक प्रबंधक श्री उमा शंकर गर्ग, श्री अशोक सोलंकी, शाखा प्रभारी, शाखा कार्यालय, ऊन, श्री सरफराज आलम, एफएलसी, श्री कुलदीप, सीएफएल, ऊन तथा सुश्री सुषमा जैसवाल, एनआरएलएम, मेरठ पश्चिम ने प्रतिभागिता की।

मंडल कार्यालय, पुरुलिया द्वारा पुरुलिया के केंदुघुटु गाँव के केंदुघुटु शिशु शिक्षा प्रांगण के विद्यार्थियों को सीएसआर गतिविधि के अंतर्गत मेज–कुर्सी एवं बेंच–डेस्क वितरित किए गए। इस अवसर पर मंडल कार्यालय के उप मंडल प्रमुख, श्री सृजन कुमार कुंडू, मुख्य प्रबंधक, अग्रणी बैंक प्रमुख, श्री तपन मंडल, वरिष्ठ प्रबंधक, विद्यालय के प्राचार्य श्री शक्तिपद किश्कु, शाखाओं के प्रभारी एवं ग्रामवासी उपस्थित रहे।

सीएसआर गतिविधियाँ

पंजाब नैशनल बैंक द्वारा विश्व उपभोक्ता दिवस के उपलक्ष्य पर कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) गतिविधियों के अंतर्गत काला अम्ब इंडस्ट्री–जिला सिरमौर को एम्बुलेंस प्रदान करते हुए मंडल प्रमुख, सोलन, श्री संजीव कुमार।

पंजाब नैशनल बैंक के मंडल कार्यालय, शिमला द्वारा शिमला जिले के चौपाल क्षेत्र के कुपवी ब्लॉक के लिए एम्बुलेंस दान की गई जिसमें हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर, मंडल प्रमुख, शिमला श्री सुशील खुराना, उपमंडल प्रमुख, श्री जयन्त हालदार, सहायक महाप्रबंधक, श्रीमती मीनू भंडारी उपस्थित रहे।

पंजाब नैशनल बैंक के अंशदान से मालदा जिले के बामन गोला ग्रामीण अस्पताल में ऑक्सीजन प्लांट स्थापित किया गया। इस स्थापना के अवसर पर मालदा जिला मजिस्ट्रेट श्री राजश्री मित्र, आई.ए.एस, मंडल प्रमुख, श्री दीपंकर चक्रबर्ती, मुख्य प्रबंधक श्री दीपक कुमार साह, अग्रणी जिला प्रबंधक, श्री सुशांत कुमार हालदार तथा मालदा जिला प्रशासन के अन्य अधिकारीगण।

मंडल कार्यालय, एसएएस नगर, मोहाली द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय को पुस्तकें भेंट की। इस अवसर पर मंडल प्रमुख, श्रीमती रीटा जुनेजा सहित अन्य अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत जिला ललितपुर की पीएनबी शाखा मेहरौनी, ग्राम सिलावन में मास्क, सैनेटाईजर और स्कूल बैग का वितरण करते हुए मुख्य विकास अधिकारी, झांसी, श्री शैलेष कुमार। साथ में हैं अग्रणी बैंक प्रबंधक, श्री अरुण कुमार, श्री भानु प्रताप सिंह एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

सीएसआर गतिविधि के तहत जिला अस्पताल, किन्नौर को पंजाब नैशनल बैंक के मंडल कार्यालय, किन्नौर द्वारा चिकित्सा उपकरण भेंट किये गए। इस अवसपर अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक व पंजाब नैशनल बैंक के जिला अग्रणी प्रबन्धक, श्री केवल कलसी उपस्थित थे।

विविध गतिविधियाँ

मंडल कार्यालय, जयपुर–सीकर द्वारा सीकर में आयोजित ग्राहक संगोष्ठी में भाग लेते हुये जयपुर अंचल प्रबंधक, श्री आर. के. वाजपेयी, जयपुर–सीकर मंडल के मंडल कार्यालय प्रमुख, श्री दीपक माथुर एवं एल.डी.एम. सीकर, श्री टी. सी. परिहार।

उप अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय, गुरूग्राम, श्री विमल धवन द्वारा मंडल कार्यालय, रेवाड़ी का दौरा किया गया जिसके दौरान श्री धवन विशाल ऋण मुक्ति शिविर के अवसर पर मंडल के स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए।

पंजाब केसरी लाला लाजपत राय के जन्मदिवस पर आयोजित विशेष कार्यक्रम के दौरान मंडल प्रमुख, संबलपुर, श्री अरबिंद पंडा एवं सभी स्टाफ सदस्य पंजाब केसरी को श्रद्धासुमन अर्पित कर नमन करते हुए।

संबलपुर मंडल कार्यालय में कार्यरत श्री जगदीश कुमार अल्लाडा, अधिकारी (सूचना प्रौद्योगिकी) के प्रधान कार्यालय में स्थानांतरण होने पर मंडल प्रमुख, श्री अरबिंद पंडा, उपमंडल प्रमुख, श्री रजनीकांत बेहेरा एवं मुख्य प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी) श्री विजय कुमार, श्री जगदीश कुमार अल्लाडा को स्थानांतरण पत्र सौंप कर भावभीनी विदाई देते हुए।

विशाल ऋण मुक्ति शिविर में सम्मानीय ग्राहकों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए उप अंचल प्रबंधक, आगरा श्री ज्योतिष प्रसाद साथ में हैं अग्रणी जिला बैंक प्रबंधक, झांसी श्री अरूण कुमार और शस्त्र प्रमुख मुख्य प्रबंधक श्री कमल सिंह।

विविध गतिविधियाँ

मंडल कार्यालय, मेरठ (पश्चिम) द्वारा एमडी एवं सीईओ ट्रॉफी जीतने पर तत्कालीन एमडी एवं सीईओ श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव के साथ मंडल प्रमुख मेरठ (पश्चिम) श्री निलेश कुमार, एवं मुख्य प्रबंधक, मंडल कार्यालय, मेरठ पश्चिम श्री श्याम सिंह।

मेट सुरक्षा के अंतर्गत मंडल कार्यालय, सीकर की कृषि उपज शाखा द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन पर अंचल प्रबंधक, जयपुर, श्री आर. के. वाजपेयी से पुरस्कार ग्रहण करते हुए मंडल प्रमुख, सीकर, श्री दीपक माथुर।

सीएसआर गतिविधियों के तहत आई.टी.आई. सीकर को वाटर कूलर भेंट करते हुये जयपुर, अंचल प्रबंधक श्री आर. के. वाजपेयी एवं जयपुर–सीकर मण्डल के मण्डल प्रमुख श्री दीपक माथुर। साथ में हैं अन्य स्टाफ सदस्य गण व छात्र।

डीसीपी जोधपुर श्री विनीत बंसल को पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत करते हुए अंचल प्रबंधक, जोधपुर श्री अमित कुमार श्रीवास्तव।

जिला परियोजना समन्वय समिति की बैठक में प्रतिभागियों तथा स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए मुख्य विकास अधिकारी, झांसी, श्री शैलेष कुमार। साथ में हैं अग्रणी बैंक प्रबंधक, श्री अरुण कुमार, श्री भानु प्रताप सिंह एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस के अवसर पर सम्मानीय ग्राहकों की समस्याओं का निराकरण करते हुए अग्रणी बैंक जिला प्रबंधक, ललितपुर, श्री कुमार गौरव और ललितपुर, मुख्य बाजार शाखा के शाखा प्रबंधक, श्री रामबाबू।

बैंको में जोखिम प्रबंधन (रिस्क मैनेजमेंट) – एक अवलोकन

गीतांजली, प्रबंधक, रैम, अयोध्या–मंडल कार्यालय

वर्तमान में बैंकिंग क्षेत्र में प्रमुख प्रबंधनात्मक कार्यों में से एक है–जोखिम प्रबंधन (रिस्क मैनेजमेंट)। आइए सर्वप्रथम जानते हैं जोखिम प्रबंधन (रिस्क मैनेजमेंट) शब्द से तात्पर्य क्या है।

जोखिम प्रबंधन (रिस्क मैनेजमेंट) – वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी व्यवसाय अथवा उद्योग में होने वाले नुकसान या क्षति की संभावना को समाप्त या कम करना होता है। जोखिम की सन्निहित संभावना को कम करने के लिए एहतियाती कदम उठाना ही मोटे तौर पर जोखिम प्रबंधन है।

बैंकिंग व्यवसाय में जोखिम अपरिहार्य होने के कारण जोखिम प्रबंधन बैंकिंग गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कंपनियों की ही तरह बैंकों में भी अधिक प्रतिफल की चाह और उसमें निहित जोखिम के बीच तालमेल बैठाना पड़ता है।

वर्तमान में जोखिम प्रबंधन के क्षेत्र में भर्तृहरि कृत नीति शतक का यह श्लोक समयोचित है:

"प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचेः,
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति ।।"

अर्थात् निम्न श्रेणी के लोग विघ्नों के डर से कार्य शुरू नहीं करते हैं, मध्यम श्रेणी के लोग कार्य शुरू कर के विघ्न आने पर कार्य छोड़ देते हैं लेकिन उत्तम श्रेणी के लोग बार–बार विघ्न आने पर भी जो कार्य शुरू किया है उसे नहीं छोड़ते। किसी भी कार्य में विघ्न या जोखिम होने की संभावना बनी रहती है पर उसके भय से कार्य शुरू नहीं करने में कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। जरूरत उस विघ्न या जोखिम के प्रबंधन की है।

बैंकिंग क्षेत्र में, बैंकों द्वारा ऋण दिये जाने में जोखिम विशेष रूप से निहित है और यदि इसका प्रबंधन ठीक से ना किया जाए तो यह एनपीए अर्थात् अनर्जक आस्तियों के रूप में परिवर्तित हो सकता है और यह संस्था को वित्तीय क्षति एवं अन्य संबंधित क्षति पहुँचा सकता है।

बैंकों द्वारा सामना किए जाने वाले प्रमुख जोखिमों में क्रेडिट, परिचालन, बाजार और तरलता जोखिम शामिल हैं। विवेकपूर्ण जोखिम प्रबंधन बैंकों को मुनाफे में सुधार करने में मदद कर सकता है। बैंकिंग क्षेत्र में, कई प्रकार के जोखिम प्रबंधन कार्यक्रम हैं जिनका उपयोग मौद्रिक नुकसान, मुकदमों और कर्मचारी असुरक्षा की संभावनाओं को कम करने के लिए किया जा सकता है। बैंकिंग क्षेत्र में जोखिम प्रबंधन अलग–अलग रूप ले सकता है, जिसमें उधार अथवा कर्ज देने और निवेश की रणनीति, कर्मचारी प्रशिक्षण और सुरक्षा शामिल है।

बैंकों में जोखिम प्रबंधन का एक प्रमुख कारक जोखिम के स्रोतों की पहचान करना और इसका प्रतिकार करने के लिए कुशल योजनाओं को लागू करना है। बैंक अक्सर जोखिम प्रबंधन के लिए पेशेवरों की टीम को नियुक्त करते हैं जो जोखिम की पहचान करने, समाधान तैयार करने और नई रणनीतियों को लागू करके बैंक में जोखिम प्रबंधन को मूर्त रूप प्रदान करते हैं और बैंकिंग संस्था को भावी नुकसान से बचाने में सहायता करते हैं। जोखिम प्रबंधन की प्रक्रिया दैनिक या साप्ताहिक आधार पर बहुत सारे होने वाले नुकसानों को वहीं पर रोकती है या फिर इसे छोटे स्तर से बड़े स्तर में परिवर्तित होने से रोकने में मदद करती है।

बैंकिंग जोखिम प्रबंधन में सबसे बड़ी चिंताओं में से एक चूक के कारण (डिफॉल्ट) के माध्यम से वित्तीय नुकसान की संभावना है। यह तब होता है जब जिनके पास ऋण होते हैं, जैसे बंधक या क्रेडिट लाइन, भुगतान करने में असमर्थ होते हैं और चूक (डिफॉल्ट) से ये खराब हो जाते हैं। दिवालियापन के मामले में, इन ऋणों को अदालतों द्वारा खारिज किया जा सकता है और इन्हें कभी भी पूर्ण रूप से चुकाया नहीं जा सकता है।

अपरिहार्य नुकसान का मुकाबला करने के लिए बैंकों को फीस और निवेश के माध्यम से एक स्वस्थ लाभ सुनिश्चित करना चाहिए, साथ ही जोखिम भरे उधारकर्ताओं को आजमाने और समाप्त करने के लिए स्क्रीनिंग कार्यक्रमों जैसी रणनीति का उपयोग करना चाहिए। कुछ उच्च जोखिम वाले ऋणों पर ब्याज दरें बढ़ा सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि किसी भी नुकसान को कवर किया जा सकता है। दूसरों को संपार्श्विक प्रतिभूति की आवश्यकता होती है जैसे कि घर का ग्रहणाधिकार जब तक कि ऋण पूरी तरह से चुकाया नहीं जाता है। इसके अलावा, बैंक यह सुनिश्चित करने के लिए अनुकूल ऋण सीमा रखते हैं कि व्यवसाय का स्थिर लाभ ऋण के जोखिम से अधिक न हो।

अयोग्य ऋणों से बचाने के अलावा, बैंक जोखिम प्रबंधन में सुरक्षा संबंधी विचार भी शामिल होते हैं। चूँकि बैंकों में डकैती की संभावना हैं इसलिए बख्तरबंद परिवहन ट्रक, सशस्त्र गार्ड और सुरक्षा कैमरे और अलार्म जैसी सावधानियाँ आमतौर पर सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। इस क्रम में बैंक कर्मचारियों को भी प्रशिक्षित किया जाता है कि डकैती के दौरान कैसे व्यवहार किया जाए, जहाँ सुरक्षा एक प्राथमिक चिंता है। बैंक जोखिम प्रबंधन में कर्मचारी के लेनदेन पर सावधानीपूर्वक निगरानी रखकर आंतरिक चोरी या धोखाधड़ी की घटनाओं को कम करने के प्रयास भी शामिल हैं।

बैंक जोखिम प्रबंधन में किसी भी कार्यस्थल में होने वाले आंतरिक मुद्दों पर विचार करना शामिल है, जैसे उत्पीड़न, गलत व्यवहार, या अन्य कर्मचारी–संबंधी मुकदमे। कर्मचारी आमतौर पर एक प्रशिक्षण अवधि के माध्यम से जाते हैं या उन्हें ऐसी सामग्री दी जाती है जो कार्यस्थल में स्वीकार्य व्यवहार पर नीतियों का विस्तार करती है। कुछ बैंकों को समय–समय पर ग्राहक सेवा, विविधता, जागरूकता और अन्य विषयों पर प्रशिक्षण सत्रों की आवश्यकता होती है जो मुकदमों के जोखिम को कम करने में मदद कर सकते हैं।

बैंकों में जोखिम प्रबंधन संरचनाः बैंकों में जोखिम प्रबंधन संरचना को पहले बासेल समिति द्वारा प्रस्तावित किया गया था जिसे भारतीय बैंकों के संचालक बैंक यानि भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) ने स्वीकार किया और देश में सक्रिय सभी बैंकों को इसके लिए दिशा–निर्देश जारी किए।

जोखिम प्रबंधन में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आरबीआई के दिशानिर्देशों और अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप एक स्वतंत्र जोखिम शासन संरचना प्रत्येक बैंक में रखी जानी चाहिए जिसमें जोखिम प्रबंधन, निगरानी और नियंत्रण कार्यों की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने वाले कार्यों और दायित्वों को अलग करना आदि कार्य शामिल हैं। मुख्य चालक के रूप में प्रौद्योगिकी के साथ परिचालन स्तर पर व्यावसायिक इकाइयों से उत्पत्ति के स्थान पर जोखिम की पहचान और प्रबंधन को सक्षम करना है।

तद्नुसार जोखिम शासन संरचना, क्रेडिट जोखिम, बाजार जोखिम, परिचालन जोखिम, समूह जोखिम और उद्यम जोखिम प्रबंधन विभागों के साथ–साथ बासेल नॉर्म्स कार्यान्वयन और सूचना सुरक्षा विभागों को बोर्ड को एकीकृत करने के लिए मुख्य जोखिम प्रबंधन अधिकारी के नियंत्रण में किया जाता है।

बैंकों में जोखिम प्रबंधन की संरचना निम्न प्रकार से है :

(क) ऋण जोखिम प्रबंधन (क्रेडिट रिस्क मैनेजमेंट)।

(ख) बाजार जोखिम प्रबंधन (मार्किट रिस्क मैनेजमेंट)।

(ग) परिचालन जोखिम प्रबंधन (ऑपरेटिंग रिस्क मैनेजमेंट)।

(घ) समूह जोखिम प्रबंधन (ग्रुप रिस्क मैनेजमेंट)।

(क) ऋण जोखिम प्रबंधनः बैंक के पास एक मजबूत क्रेडिट मूल्यांकन और जोखिम मूल्यांकन अभ्यास होता है। बैंक विभिन्न भाग (सेगमेंट) के तहत क्रेडिट जोखिम के आकलन के लिए विभिन्न आंतरिक क्रेडिट जोखिम मूल्यांकन मॉडल का उपयोग करते हैं। बैंक में आंतरिक रेटिंग व्यापक रेटिंग सत्यापन ढाँचे के अधीन होती है।

बैंक "आंतरिक मूल्यांकन दृष्टिकोण के आधार पर" क्रेडिट जोखिम का मूल्यांकन करते हैं। इसके लिए ऋण जोखिम प्रबंधन से संबंधित नीतियाँ और शासन संरचना बोर्ड की जोखिम प्रबंधन समिति द्वारा अनुमोदित की जाती है। आंतरिक रेटिंग के प्रभावी कार्यान्वयन से आगे की कार्य प्रणाली और रूपरेखा प्रस्तावित किए जाते हैं।

अपेक्षित चूक (डिफॉल्ट) की गणना के लिए चूक (डिफॉल्ट) की संभावित हानि को देखते हुए चूक (डिफॉल्ट) और चूक पर चूक की संभावना के आंकलन के लिए मॉडल होते हैं जिनकी सहायता से क्रेडिट निर्णय होते हैं।

बैंक द्वारा दिए गए ऋण के भुगतान की नियमितता, क्रेडिट पोर्टफोलियो और तनाव (स्ट्रेस) परिदृश्य पर तनाव परीक्षण (स्ट्रेस इंस्पेक्शन) नियमित रूप से उद्योग की सर्वोत्तम प्रथाओं और मैक्रो–आर्थिक चर में परिवर्तन के अनुरूप अपडेट किया जाता है।

(ख) बाजार जोखिम प्रबंधन: बाजार जोखिम नुकसान की एक संभावना है जिसकी वजह से बैंक अपने ट्रेडिंग पोर्टफोलियो के मूल्यों में परिवर्तन के कारण बाजार के कारक जैसे विनिमय दरों, ब्याज दरों, इक्विटी मूल्य, आदि में परिवर्तन के कारण पीड़ित हो सकते हैं।

बैंक के पास विदेशी मुद्रा, डेरिवेटिव्स, अचल आय प्रतिभूतियों (फिक्स्ड इनकम सिक्योरिटीज), इक्विटी और म्यूचुअल फंड में ट्रेडिंग के लिए जोखिमों से संबंधित बोर्ड अनुमोदित नीतियाँ होती हैं जिनसे विभिन्न जोखिम सीमाओं जैसे कि विदेशी मुद्रा के विनिमय दर की स्थिति, संशोधित अवधि, स्टॉप लॉस, एकाग्रता और एक्सपोजर सीमा आदि नियंत्रित किए जाते हैं।

वर्तमान में, अधिकांश बैंक बासेल के मानकीकृत माप पद्धति के तहत बाजार जोखिम पूँजी की गणना करते हैं। इस मानदंड के तहत, बैंक के व्यापार पोर्टफोलियो की निगरानी के लिए जोखिम आधारित कार्यप्रणाली विकसित होती है और तनाव परीक्षण किया जाता है। बाजार जोखिम प्रबंधन समिति और बोर्ड की जोखिम प्रबंधन समिति द्वारा बाजार जोखिम की निगरानी और समीक्षा की जाती है।

(ग) परिचालन जोखिम प्रबंधन: परिचालन जोखिम,अपर्याप्त या विफल आंतरिक प्रक्रियाओं, लोगों द्वारा और प्रणालियों या बाहरी घटनाओं से होने वाले नुकसान का जोखिम है।

परिचालन जोखिम प्रबंधन के मुख्य उद्देश्य हैं सिस्टम की लगातार समीक्षा और नियंत्रण करना, पूरे बैंक में परिचालन जोखिम के बारे में जागरूकता पैदा करना, जोखिम स्वामित्व प्रदान करना, व्यापार रणनीति के साथ जोखिम प्रबंधन गतिविधियों को संरेखित करना और नियामक आवश्यकताओं के अनुपालन को सुनिश्चित करना, जोकि परिचालन जोखिम प्रबंधन के प्रमुख तत्व हैं।

इसके लिए परिचालन जोखिम प्रबंधन फ्रेमवर्क और परिचालनात्मक जोखिम मापन प्रणाली पर आरबीआई के दिशानिर्देशों के अनुरूप महत्वपूर्ण नीतियाँ, नियमावली और फ्रेमवर्क दस्तावेज आते हैं।

(घ) समूह जोखिम प्रबंधन: समूह जोखिम प्रबंधन में समूह संस्थाओं में मानकीकृत जोखिम प्रबंधन होता है। यहाँ समूह में उधारकर्ता और ऋणदाता (बैंक) और प्रत्येक के साथ जुड़ी संस्थाएं शामिल हैं।

समूह जोखिम प्रबंधन में समूह की आंतरिक पूँजी पर्याप्तता का मूल्यांकन और तनावपूर्ण परिस्थितियों में पूँजी का मूल्यांकन होता है तथा प्रासंगिक जोखिम और शमन उपायों का आकलन भी होता है। बोर्ड की समूह जोखिम प्रबंधन कमेटी / जोखिम प्रबंधन कमेटी को ऋण जोखिम, बाजार जोखिम, परिचालन जोखिम, तरलता जोखिम (लिक्विडिटी रिस्क), कॉन्सेंट्रेशन रिस्क और कॉन्टैजियन रिस्क के लिए जोखिम आधारित मापदंडों का त्रैमासिक विश्लेषण प्रस्तुत करना होता है। इसका कार्य बड़े उधारकर्ता के लिए एक्सपोजर सीमा, आरबीआई के मानदंडों के अनुसार पूँजी बाजार (कैपिटल मार्केट) एक्सपोजर और बैंक द्वारा असुरक्षित एक्सपोजर, रियल एस्टेट और इंट्राबैंक–ग्रुप एक्सपोजर की सीमा का निर्धारण करना एवं पालन करना होता है।

उपरोक्त के अलावा, ऋण लेखापरीक्षा (क्रेडिट ऑडिट), आंतरिक लेखा परीक्षा, सूचना प्रणाली लेखापरीक्षा, विदेशी कार्यालयों की लेखापरीक्षा और व्यय लेखा परीक्षा इत्यादि के माध्यम से सुचारु जोखिम प्रबंधन किया जाता है। शाखाओं द्वारा अनियमितताओं के सुधार के स्तर के अलावा और चुनिंदा शाखाओं पर लेखापरीक्षा अनुपालन भी किया जाता है।

कोई भी व्यवसाय जोखिम की संभावना से प्रतिरक्षा नहीं करता है। हालांकि बैंक जोखिम प्रबंधन कार्यक्रम हमेशा यह सुनिश्चित नहीं कर सकते हैं कि समस्याएं पैदा न हों, वे सावधानीपूर्वक आकस्मिक योजना और कर्मचारी प्रशिक्षण के माध्यम से व्यवसायों को संकट से बचाने में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा, जोखिम प्रबंधन का अभ्यास ग्राहकों को बैंक के साथ विश्वास की भावना प्राप्त करने में मदद कर सकता है, जो बदले में ग्राहक के विश्वास को बढ़ा सकता है।

अच्छे माहौल में मामूली कर्मचारी की भी कार्यक्षमता बढ़ जाती है, जबकि नकारात्मक माहौल में अच्छा काम करने वाले कर्मचारी की कार्यक्षमता घट जाती है।

मैं और स्वर्ग भूमि (एक न खत्म होने वाला अहसास)

राजीव जैन, मुख्य प्रबंधक, आगरा, अंचल कार्यालय

हिमालय पर्वतमाला की वादियों में बसे **प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण पावन धरा नेपाल में एवरेस्ट बैंक लिमिटेड में उप महाप्रबंधक के रूप में 3 वर्षों से अधिक बैंकिंग सेवाएं देने** का सुअवसर मिला। एवरेस्ट बैंक लिमिटेड पंजाब नैशनल बैंक का संयुक्त उद्यम है, जिसमें **पीएनबी का 20 प्रतिशत शेयर** है। एवरेस्ट बैंक लिमिटेड में पीएनबी के तीन अधिकारी प्रतिनियुक्त किए जाते हैं, जिससे बैंक के निवेश पर ध्यान दिया जा सके। एवरेस्ट बैंक लिमिटेड का शीर्ष प्रबंधन भी पंजाब नैशनल बैंक के पास ही होता है। **इन 03 वर्षों से अधिक की समयावधि में नेपाल की प्रकृति, संस्कृति, रहन–सहन, वेश–भूषा, कृषि पर्यटन एवं धर्म संबंधी अनेक जानकारी प्रत्यक्ष रूप से** प्राप्त करने का अवसर मिला।

नेपाल का भारत से अलग, **प्रधान, निशान एवं विधान** होने के बाद भी मुझे **नेपाल स्वदेश** सा लगा। **हिन्दू बहुल नेपाल की संस्कृति में भारत की संस्कृति** की अनेक मूलभूत समानताएँ मिलती हैं। दोनों देशों की नागरिकता भले ही अलग हो किन्तु लोगों का आना–जाना ऐसा ही है जैसा एक पड़ोसी का दूसरे पड़ोसी के यहाँ जाने या आने का होता है अर्थात् आने–जाने में वीजा तथा पासपोर्ट की जरूरत नहीं होती है। नेपाल का उत्तरी हिस्सा हिमालय पर्वतमाला से घिरा हुआ है। **विश्व की दस सबसे ऊँची चोटी में से आठ नेपाल में स्थित हैं।** दुनिया की सबसे बड़ी चोटी एवरेस्ट भी नेपाल में हैं। इसे स्थानीय लोग **''सागरमाथा''** कहते हैं। पर्वतारोही के लिए स्वर्ग कहा जाने वाला नेपाल पर्यटकों की पसंदीदा जगह है। नेपाल की राजधानी काठमांडू के साथ–साथ ललितपुर, भक्तपुर, मध्यपुर और कीर्तिपुर नाम के नगर नेपाल राष्ट्र की शोभा में वृद्धि करते हैं।

ये सारी जानकारी मुख्य रूप से मैंने तब प्राप्त की जब मुझे मेरा स्थानान्तरण आदेश पत्र प्राप्त हुआ। वहाँ के मौसम से लेकर, आने–जाने के मार्ग के बारे में जानकारी प्राप्त करना मेरा लिए आवश्यक हो गया। आगरा से निकलकर दिल्ली से फ्लाईट लेने के बाद करीब 11:30 बजे मेरी फ्लाईट काठमांडू पहुँची। चूँकि, मैं केवल नियुक्ति लेने के लिए अकेला नेपाल गया था, तो मुझे एयरपोर्ट से बाहर निकलने में समस्या नहीं हुई। बैंक के एक स्टाफ सदस्य हवाई अड्डे पर मुझे लेने के लिए पहले से ही मौजूद थे। होटल पहुँचने के बाद कुछ देर विश्राम किया। तत्पश्चात् घुम्कड़ी के स्वभाव के चलते शाम को होटल से बाहर निकला। नेपाल में भारत की करेंसी चलती है इसलिए भारत से ही कुछ भारतीय करेंसी मैं, अपने साथ लाया था। स्थानीय मार्किट घूमने के बाद में वापस आ गया। अगले दिन काठमांडू स्थित एवेरेस्ट बैंक लिमिटेड के कार्यालय में नियुक्ति प्रक्रिया को पूरा कर तथा कामकाज को जानने के बाद वापस होटल आ गया। अब जब भी समय मिलता मैं नेपाल की विशेषताओं से अपने आपको परिचित करवाता।

नेपाल में मेरा पहला अवकाशः–

पहले ही अवकाश के दिन मैंने पशुपति नाथ जी के दर्शन किए। काठमांडू में स्थित इस मन्दिर को वैसे तो 12 ज्योतिर्लिंगों में शामिल नहीं किया गया है, लेकिन इसके दर्शन काफी महत्वपूर्ण हैं। इसके अंदर कैमरा ले जाना भी मना है। 01 घंटे का समय लगने के बाद मैं मन्दिर के प्रांगण से बाहर आया। जहाँ प्रसाद एवं अन्य धार्मिक सामग्री की

दुकानें सजी थीं। मैंने वहाँ से अपने मन्दिर के लिए रूद्राक्ष की माला खरीदी। घूमने की जिज्ञासा के कारण हल्के–फुल्के किए गए नाश्ते की समय–सीमा अब खत्म हो गई थी। इसलिए थोड़ा सा खाना खाकर मैं, निकल पड़ा बौद्धस्तूप। स्तूप की परिक्रमा करने के बाद शेष नेपाल को खोजने की जिज्ञासा के साथ मैं वापस आ गया।

नेपाल यात्रा :

इस बार मैंने स्वयंभूनाथ के दर्शन करने की योजना बनाई। काठमांडू से ऊपर पहाड़ी पर स्थित इस मन्दिर की अपनी एक अलग ही छठा है। इसी बीच हल्की बारिश होने से वातावरण और अधिक सुहावना हो गया। मन्दिर में घुसते ही भजन कीर्तन की आवाज सुनाई दी। मन्दिर में बौद्ध संप्रदाय के भक्तजन कतारबद्ध बैठकर पाठ कर रहे थे। मन्दिर से बाहर आने के बाद मेरे कदम अपनी अगली मंजिल अर्थात् राजमहल की ओर बढ़े। राजमहल का नजारा अतुलनीय था। दीवारों को छोड़कर पूरा राजमहल लकड़ी से बना है। लकड़ी को नेपाल में **काठ** कहा जाता है। सपोर्ट के लिए लकड़ियों पर अनेक हिन्दू देवी–देवताओं का स्वरूप दिया गया है। ये राजमहल वाकई में दर्शनीय स्थल है।

पोखरा: नेपाल का मनमोहक चित्रण:

पोखरा नेपाल में स्थित एक ऐसा स्थल है, जिसे देखने विदेशों से हजारों सैलानी आते हैं। एवरेस्ट के बाद सबसे दर्शनीय स्थल मुझे पोखरा ही लगा। पोखरा झील एक ऐसा स्थल है जिसके आगे नैनीताल भी फीका है। यह एक छोटा–सा स्वच्छ, मनोरम और सुंदर शहर है, जो खूबसूरत फेवा लेक के किनारे बसा हुआ है।

एवरेस्ट पर्वत और मैं:

धार्मिक स्थलों के भ्रमण करने के बाद मन में एवरेस्ट घूमने की इच्छा जागृत हुई। जानकारी प्राप्त करने पर पता चला कि काठमांडू से हवाई जहाज द्वारा एवरेस्ट घूमने की व्यवस्था की जाती है। एवरेस्ट अर्थात् सागरमाथा हिमालय की सबसे ऊँची चोटी है। प्लेन से सागरमाथा को देखना मैं अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मानता हूँ। आँखों के लिए इससे अनुपम उपहार हो ही नहीं सकता। सूरज की चमकीली किरणें हिमालय की वादियों में आनंद बिखेर रहीं थी। चारों ओर प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रत्यक्ष दर्शन करना मानों मेरे जीवन की सार्थकता सिद्ध होने जैसा था। सबसे श्रद्धा का क्षण तब था जब पायलेट ने गौरीशंकर दिखाया। गौरीशंकर के दो शिखर हैं, उत्तरी(उच्च) शिखर जिसे शंकर जी(शिव के आविर्भाव) कहा जाता है और दक्षिणी शिखर को गौरी कहा जाता है।

नेपाल और हवाई यात्रा:

नेपाल में बुद्धा एयरलाइन्स के 8 सीटर से 72 सीटर हवाई जहाज चलते हैं। अपने प्रवास के दौरान कई बार मैं उनमें बैठा तथा नेपाल के कई दर्शनीय स्थलों का भ्रमण किया। छोटे हवाई जहाज में बैठना जहाँ एक ओर काफी जोखिम भरा होता था वहीं दूसरी ओर रोमांचकारी अनुभव भी प्रदान करता था। सड़कों के रास्ते जहाँ 6–12 घंटे लगते थे, इन छोटे जहाजों से जाने में मात्र 20 मिनट से 01 घंटे में सफर तय होता था जिससे काफी समय बचता था। साथ ही, प्लेन से नेपाल के पहाड़ों की छटा भी दर्शनीय होती थी।

नेपाल: स्वर्ग की भूमि और मैं:–

अपने कार्यकाल के दौरान मैंने नेपाल के सभी दार्शनिक जगहों, त्यौहारों, मौसमों एवं संस्कृति का अनुभव प्राप्त किया। जब नेपाल से भारत के आगरा शहर में मेरा स्थानान्तरण हुआ तो नेपाल की कभी न भूलने वाली यादें मुझे बार–बार आकर्षित करती रहीं। जब भी मैं उन यादों के एलबम को उठाता हूँ तो स्वयं को नेपाल की वादियों और दर्शनीय स्थलों के बीच पाता हूँ।

जिसने मन को साध लिया

जिसने मन को साध लिया
अगणित बाधाओं से होकर
ओज तेज से पूरित होकर
चला अकेला निर्भीक पथिक वो
व्यवधानों का हल उसने निर्बाध किया
जिसने मन को साध लिया।

लिए मन में मौन की भाषा
कर्म में निहित सृजन की आशा
अडिग कदम से तूफानों पर वार किया
प्रतिद्वंदी से उसने पूर्ण प्रखर संवाद किया
जिसने मन को साध लिया।

ध्रुव सा चमक रहा जो नभ मंडल में
कीर्ति फैली है जिसकी अम्बर तल में
मानवता को चुभते शूलों का संहार किया
जग में प्रचलित कुप्रथाओं का उसने
निर्मूलन निर्विवाद किया
जिसने मन को साध लिया।

बहती उसमें अविरल आनंद की धारा
शुद्ध बुद्ध है जीवन सारा
इंद्रजीत वो भयभीत नहीं
उसने खत्म हर अवसाद किया
जिसने मन को साध लिया
तम में वो प्रकाश पुंज सा
विपत्ति काल में स्थिर सुमेरु सा
उन्नत शील और परम विवेकी
मृदुभाषी और चरित्रवान वो
उसने विषमता में समता का नाद किया
जिसने मन को साध लिया।

मो. सफदर अंसारी
प्रबंधक
मंडल कार्यालय, होशियारपुर

दिन बचपन के

वो दिन बचपन के
मस्ती का न था ठिकाना
मस्तानों की टोली में
एक दूसरे पे प्यार लुटाना।
कंधे से कंधा मिलाना
खुशियों से सराबोर हो जाना
कैसे गुजर गया वक्त
ये सोच–सोच पछताना।
खेल कबड्डी, खो–खो खेलकर आना।
वो देर से घर को लौटना,
और माँ की मीठी डाँट खाना।
वो रूठना और हँसकर मनाना,
देता था पल–पल खुशी का बहाना।
सफेद दाढ़ी में गंभीर नैनों का
आज भी बच्चा बन जाना।
वो दिन बचपन के
मस्ती का न था ठिकाना।

अनूप कुमार साहू
मुख्य संकाय, का.प्र.के दिल्ली

सपना

खुली आँखो से देखा जाए वो होता है सपना,
समय के साथ जिंदा रह जाए वो होता है सपना।

राही को राह दिखाए वो होता है सपना,
आइने के जैसा साफ हो जाए वो होता है सपना।

जो यादों में समां जाए वो होता है सपना,
जो खुद से खुद को मिलाए वो होता है सपना।

किसी का अधूरा तो किसी का पूरा होता है सपना
जो जीने की वजह बन जाए वो होता है सपना।

जो यादों में अपनों से मिलाए, वो होता है सपना
उनसे जुड़े होने का एहसास कराए वो होता है सपना।

जो तीन अक्षर में दुनिया दिखाए वो होता है सपना,
जो जिन्दगी जीने की आरजू जगाए वो होता है सपना।
हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता जाए और मुश्किलों में हौंसला बढ़ाए वो होता है सपना।

कारेना उर्विशा
सहायक, मंडल कार्यालय, राजकोट

तनहा सफर

हरफों को सजा रहा हूँ
मैं तो यह सोच कर
बन जाए एक दरख्त
हम हो जिसकी छाँव में
चल रहा हूँ बदस्तूर
जिंदगी की तपती राह में
मुस्कुरा रहा है कोई
देख कर छाले मेरे पाँव में।

ना चलते तो क्या करते
मंजिल है तो सफर भी है
खुली आँखों के ख्वाब में
लंबा है सफर सोच कर
रूक न जाऊँ मैं कहीं
मिलते खूबसूरत गाँव में
जून की तपिश न जलायेगी
पहुँचूँ न जब तक अपनी ठाँव में।

ऐसा नहीं कि सिर्फ तपिश है
पैर भी फिसलते है कभी
चलते हुए भरी बरसात में
ठंड भरा हो मौसम अगर
धुँध हो और कुछ नजर न आए
ठिठुरती है रूह भी अगर
ढक लेते है खुद को हम
चादर बना अपनी ही साँस में।

खुशबू फूलों की, बाग भी है सफर में
एहसास कॉटों का न हो, ऐसा भी नहीं
खूबसूरत वादियों से होकर भी गुजरे
और हम वहीं के रह गए, ऐसा भी नहीं
फिजा का मौसम भी दस्तक दे गया
सूखी हवाओं ने हमें रोक लिया, ऐसा भी नहीं
मंजिल तो मिल जाएगी जिंदगी की यकीनन
हमसफर का साथ न हो, कहीं ऐसा तो नहीं।

बिराजमान केरकेट्टा
मंडल प्रमुख एवं उप महाप्रबंधक
मंडल कार्यालय, नदिया

अब शाम नहीं होती

दिन चढ़ता तो है पर अब शाम नहीं होती,
दिन ढलता भी है पर अब शाम नहीं होती,
न वो बच्चों का शोर, न ही वो चहचहाहट,
एक अजब सा सन्नाटा छाया रहता है।
एक वक्त था जब शाम को पापा के घर आने पर,
बाजार में घूमना होता था,
दुकान पर जाकर इठलाना होता था,
अब तो पापा के आने तक बच्चे सो जाते हैं,
क्योंकि अब शाम नहीं होती।
सब कुछ तो है अब, पैसा, सामान, खिलौने
अब बच्चों में मुस्कान तो होती है,
मगर हँसी ठिठोली नहीं होती।
न वो शाम की चाय न ही कोई पकवान,
न कोई टीवी पे धारावाहिक, न ही कोई गीतमाला
क्योंकि अब शाम नहीं होती।
इस मशीनी जीवन में सांसें तो सभी ले रहे हैं,
पर जीवित शायद ही कोई है।
न कोई आस–पड़ोस, न कोई सत्संग,
न कोई साथ, न ही कोई बात
अंदर ही अंदर सब बैठे हैं उदास,
कोई पैसे की होड़ में, कोई गृहस्थी में,
चाहे कोई छोटा है चाहे बड़ा,
इस जीवन चक्की में पिसता है हर कोई
क्योंकि अब शाम नहीं होती;
क्योंकि अब शाम नहीं होती।

महक
वरिष्ठ प्रबंधक,
मंडल कार्यालय, चंडीगढ़

हर तस्वीर कुछ कहती है : उत्कृष्ट प्रविष्टियाँ

वो बचपन के हसीन पल

इस तस्वीर को देखकर मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। क्योंकि इस तस्वीर ने मेरे बचपन की यादों को फिर से तरो–ताजा कर दिया है। बचपन, एक ऐसा समय होता है जब हमारे ऊपर जिम्मेदारी का बोझ नहीं होता। बस हमारे कंधो पर बस्ते का बोझ होता है। बचपन में हम जीवन की कड़वी सच्चाइयों से अवगत नहीं होते थे। हमें 'थोड़ी बहुत पढ़ाई–लिखाई' अच्छी लगती थी लेकिन हमारा मन 'बहुत–सारे खेल कूद' में रमता था। जीवन बहुत ही सरल हुआ करता था। तनाव नामक शब्द से हम परिचित ही नहीं थे। आज जीवन की भाग–दौड़ में प्रायः हम अपने बचपन को ढूँढते हैं, किन्तु बचपन का स्वभाव भी बहुत जिद्दी होता है, एक बार चला जाए तो फिर कभी लौटने की नहीं सोचता।

अतः कोई भी क्षण अथवा वस्तु हमें हमारे बचपन के निकट ले जाती हो, उस क्षण अथवा वस्तु से गुरेज नहीं करें। उस क्षण को तत्परता से जी लें तथा वस्तु को संभाल कर रख लें। इस बात के समर्थन में मैं बशीर बद्र साहब के एक मशहूर शेर का उल्लेख करना चाहूँगा–

"कई सितारों को जनता हूँ बचपन से,
जहाँ भी जाऊं, हमेशा मेरे साथ चलते हैं।"

ऋषि सविता पाण्डेय
एकल खिड़की संचालक 'ए',
शाखा–बिल्हा

बचपन और दोस्ती

"साथी का साथ छूट जाता है वक़्त की पुकार पर,
स्मृतियाँ शेष रह जाती है दिल के सितार पर ।"

उपरोक्त चित्र सिर्फ बचपन की मस्ती या शरारतें ही नहीं दर्शाता अपितु यह याद दिलाता है कि यदि हम जिंदगी की नदी को पार करना चाहते है तो हमें हँसते मुस्कुराते हुए संतुलन बनाकर चलना होगा तो दोस्तों का साथ ही एकमात्र वो उपाय है जो इस भागते पुल पर हौंसले का प्रतिबिंब है। इस चित्र की तरह हम बचपन की वो मासूमियत वापिस तो नहीं पा सकते पर इतना जरूर है कि जीवन की कठिन से कठिन डगर को पार करने के लिए बच्चों जैसा उत्साह, लगन एवं सबको साथ लेकर चलने के जज्बे को अपनाकर ही अपनी जिंदगी को उस सरलता के साथ जी सकते हैं, जैसे जिया करते थे। ये कहना तो बहुत सरल है कि ऐसा किया जा सकता है पर जिंदगी में सबसे कठिन हमेशा सबसे सरल चीजें होती हैं। उपरोक्त चित्र यह भी बताता है कि हमें मंजिल नहीं ध्येय तक की यात्रा को स्मरणीय बनाना चाहिए। जिंदगी की इस भेड़चाल में हमने चलना तो सीख लिया लेकिन कहीं न कहीं हम जीवंत होना भूल चुके हैं। आखिर में चार पंक्तियाँ हमारे कुछ ऐसे दोस्तों के नाम जो बेशक अभी हमारी जिंदगी में शामिल न हो पर यह भी उतना ही सच है कि बिना उनके यह जिंदगी संभवतः ऐसी न होती :

"टुकड़ों में कट रही है ये जिंदगी अपनी,
न चाँद हैं न ही सितारे हैं अपने।
बेगाना लगने लगा अब ये शहर भी साहिब,
जहाँ महफिल हुआ करती थी कभी यारों की अपनी।"

रवि राजन
वरिष्ठ प्रबंधक,
आंचलिक लेखापरीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद

बचपना पुकार रहा है

बचपन का यार आया है, बचपना पुकार रहा है।
वही गिल्ली डंडे, वही गली– मोहल्ले।
पेड़ की जलेबी, बनभुटके का स्वाद।
गंगाजी में मस्ती, रेल की पटरी पर मटरगश्ती।
फिर लौट आया है मेरा यार, बचपना पुकार रहा है।
देर तक खेलने पर पिटाई, माँ का मनुहार कर खिलाई।
पिता का रौद्र रूप, कल फिर वही अकुलाई।
धीरे से खिड़की में झाँक कर बुलाना।
फिर अमराइयों में भरी दुपहरी भटकना।
आया है मेरा यार, बचपना पुकार रहा है।
न पद पाने की लालसा, न धन पाने की लिप्सा।
गाँधी और जवाहर, बस पाठ का था हिस्सा।
भगत, चंद्रशेखर, सुभाषचंद्र बोस का किस्सा।
सब अंक का गणित था प्रेरणा नहीं बना था।
अब समझ सका हूँ त्याग उन महामानव का।
बन भी न मैं पाया तिनका भर भी उन सब का।
फिर से लौट आई बचपन की भूली यादें।
वही बेफिक्री वही बुलंद इरादे।
लौट आया है मेरा यार, बचपना पुकार रहा है।

शंकर दास
मुख्य प्रबंधक
मंडल कार्यालय, झांसी

सखा – स्मृतियाँ

जीवन पथ की अबूझ राहों पर,
गिरते भी रहे, संभलते भी रहे।
एक दूजे का हाथ थामे हम,
चार सखा बस चलते ही रहे।
बचपन की खट्टी– मीठी यादें,
मन पर दस्तक अब भी हैं देती।
मित्र–प्रेम की कोमल थपकियाँ,
सब पीड़ा–दुःख हैं हर लेतीं।
जीवन की इस संध्या बेला में,
अब एकांत में बैठा हूँ मौन।
एकाकी छोड़ जग से चले गए,
पूछते परलोक से, तेरा साथी कौन?

अरविन्द कुमार मिश्रा
मुख्य प्रबन्धक,
सीएसी, हल्द्वानी

एक रास्ता है जिन्दगी

व्यक्तित्व सफलता का क्या है, कैसे आसां पथ होता है।
कैसे पथ–कंटक दूर करें, कैसे सबको ले साथ चलें।
कैसे मुश्किल में दुखी न हों, कैसे सबके पग साथ उठें।
कैसे सबको पीछे छोड़ें, कैसे हरदम आशान्वित हों।
कैसे हर लक्ष्य विदीर्ण करें, कैसे हम सब लाभान्वित हों।
आओ हम राज बताते हैं, सबको गुरुमंत्र सिखाते हैं।
पहला मंतर सहयोग का है, दूसरा समन्वय को जानो।
सबमें संघर्षशीलता हो और लक्ष्य सभी का एक रहे।
हों नेक इरादे हम सब के, वादों के हम सब पक्के हों।
कर्मठता का आलिंगन कर, अध्यवसाय का कर अवलंबन।
आलिंगन कर सत्कर्मों का, श्रृंगार कृतज्ञता का लेकर।
सबकी पीड़ा को हर करके, श्रृंगार बना कर्तव्यों का।
हर मार्ग प्रशस्त करेंगे हम, उपहार सफलता का लेकर।
हर मुश्किल को संभव कर, सर्वदा सफल कहलाएंगे।

श्रवणदेव पाठक
मुख्य प्रबंधक,
मंडल कार्यालय, बस्ती

हर तस्वीर कुछ कहती है

कहते हैं कि कैमरा और तस्वीर झूठ नहीं बोलते हैं और वाकई में हर तस्वीर कुछ कहती है जो हमारे दिलो–दिमाग और अंतरात्मा को छू जाती है और हमें सोचने और उस पर कुछ लिखने के लिए प्रेरित करती है। क्या यह तस्वीर आपको लिखने के लिए प्रेरित नहीं कर रही है? तो उठाइए कलम और इस तस्वीर पर अपने मौलिक विचार **(गद्य/पद्य)** केवल 10 से 15 पंक्तियों में हिंदी यूनिकोड में टाइप कर हमें 20 जून 2022 तक ईमेल पते pnbstaffjournal@mail.pnb.co.in या राजभाषा विभाग की rajbhashavibhag@mail.pnb.co.in पर भेज दीजिये। कृपया प्रविष्टि में फोटो सहित अपना पूर्ण विवरण अवश्य लिखें। हस्तलिखित/रोमन लिपि में टंकित प्रविष्टियाँ स्वीकार नहीं की जाएंगी। केवल पीएनबी बैंक के स्टाफ सदस्य ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। प्रत्येक स्टाफ सदस्य की केवल एक प्रतिक्रिया पर विचार किया जाएगा। चुनी गई सर्वश्रेष्ठ प्रतिक्रियाओं को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

पीएनबी प्रतिभा का वेब संस्करण

सभी स्टाफ सदस्यों एवं प्रिय पाठकों की सुविधा हेतु पीएनबी प्रतिभा का ऑन–लाइन संस्करण नॉलेज सेंटर पर उपलब्ध है। पीएनबी प्रतिभा तक निम्न नेविगेशन से पहुँच सकते हैं–

पीएनबी नॉलेज सेंटर ➡ *ई–सर्कुलर* ➡ *मैगजीन* ➡ *पीएनबी प्रतिभा*

इस पत्रिका को और अधिक बेहतर तथा उपयोगी बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

आते होंगे – लघु कथा

चार दोस्त जिन्होंने 12वीं तक की पढ़ाई साथ की थी, अचानक से अलग हो गए। किसी को उच्च पढ़ाई करनी थी, तो किसी को बिजनेस, किसी के पिताजी का ट्रांसफर हो गया था। समय की लहर ने उन सब को अलग कर दिया था। इन चारों में सबसे ज्यादा तेज और दूसरों का ख्याल रखने वाला राजू, आर्थिक स्थिति से कमजोर था। एक बार 12वीं के बाद उन चारों ने एक बड़े होटल में मिलने का सोचा और चाय नाश्ते पर मिले और जो खर्चा आया उन्होंने आपस में बाँटने की सोची। लेकिन राजू की परिस्थिति देखकर बाकी तीन दोस्तों ने राजू से पैसे नहीं लिए। राजू यह सब मौन होकर देखता रहा। मानो मन ही मन कह रहा हो कि मैं यह एहसान कभी नहीं भूलूँगा। चारों दोस्त 50 साल बाद वापस इसी जगह पर मिलने की कसम खाकर अपने–अपने गंतव्य पर चले गए। उनकी सब बातें उस होटल का वेटर छोटू सुन रहा था। उसे उनकी दोस्ती देखकर बहुत अच्छा लगा। उसने कहा कि अगर उस समय तक वह जिंदा रहा तो वह भी उन लोगों का इंतजार करेगा।

50 साल बाद उसी दिन एक–एक करके तीन दोस्त आ गए। बस राजू का आना बाकी था। तीनों खूब तरक्की कर चुके थे। होटल का वेटर छोटू भी बहुत बूढ़ा हो चुका था परंतु उसने उन तीनों को पहचान लिया, वो भी उनकी दोस्ती देखकर खुश हो गया, उसने तीनों का स्वागत किया। तीनों दोस्तों ने जमकर चाय नाश्ता किया और बचपन की अपनी पुरानी बातों, यादों को दोहराया। शाम होने को आ गई थी पर राजू अभी तक नहीं आया था। बार–बार पूछने पर वेटर छोटू उन तीनों को यही कहता कि ''आते होंगे''। इंतजार करते–करते जाने की घड़ी भी आ गई। तभी एक जवान लड़का दौड़ता–भागता उन सबके पास आया और सब को एक–एक तोहफा दिया और उस तोहफे पर लिखा था ''नहीं आने के लिए माफी और आपका आभार।'' जब उन तीनों ने तोहफा खोलकर देखा तो उसमें थी उन चारों की तस्वीर जिसमें चारों एक दूसरे का हाथ पकड़े चल रहे हैं और सबसे आगे राजू था। तस्वीर देखकर तीनों दंग थे और उस लड़के को देखे जा रहे थे। लड़के ने कहा, ''मैं राजू जी का बेटा हूँ और वह पिछले साल गुजर गए। उन्होंने कहा था कि आज के दिन इस होटल में उनके दोस्त जरूर आएंगे, तो उन्हें यह देना और धन्यवाद कहना और आगे अवश्य गुनगुनाना कि **''ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे, तोड़ेंगे दम मगर तेरा साथ ना छोड़ेंगे''।** तीनों के तीनों यह बात सुन कर सन्न रह गए और उनकी आँखों से अश्रु धारा बही जा रही थी, मानो कह रही हो कि हमारी दोस्ती की कीमत यह तो नहीं थी यारा!

श्रीमती स्नेहा सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

''कोई लौटा दे मेरे बचपन के दिन''

दफ्तर के ए.सी. में बैठे हुए खिड़की से बाहर की ओर देखते–देखते उन दिनों की याद आने लगी जब बचपन में जेठ की धूप भी हम चारों दोस्तों की खेल–कूद की मस्ती के आगे ठंडी पड़ जाती थी। वहीं चमड़ी जला देने वाली धूप, जिससे बचने के लिए हम दुनिया भर के सनस्क्रीन लगाते हैं, तब तो कभी उनके बारे में सुना भी नहीं था। मई का पहला हफ्ता चालीस दिन के गृहकार्य को करने में निकाल देना और फिर बचे हुए समय में सारी–सारी दोपहर खेलते–कूदते बीत जाना, रात को थक के जल्दी सो जाना और फिर सुबह उठते ही वहीं हुड़दंग मचाना। गर्मी में सबसे ज्यादा चैन पानी से मिलता है और जब कोई तालाब दिख जाए गाय, भैंस, बकरियाँ, चिड़ियाँ और बच्चे चहचहा उठते हैं। सबसे ज्यादा याद आता है, पानी के भरे सरोवर या तलाब में घंटों पैर डाले बैठे रहना और अपने पसंदीदा सुपर–हीरो की बातें करना। स्पाइडर–मैन, बैट–मैन और शक्तिमान की अगर लड़ाई हो तो कौन जीतेगा, इस सवाल पर उच्च दर्जे की बहस कब सुबह से शाम कर देती थी कहाँ पता चलता था। अब तो सब कॉमिक्स एक गत्ते के डिब्बे में बंद टांट पर पड़ी धूल खा रही हैं। मन तो बहुत करता है कि अलसाई सी दोपहर में फिर किसी तालाब के किनारे पानी में पैर डाले घंटो बैठे अपने दोस्तों के संग फिर काल्पनिक सुपर हीरोज की लड़ाई करवाएँ और बाद में उन बातों को याद कर के खूब हँसें।

जिम्मेदारियाँ और परिस्थितियाँ हमें जीवन तो देती हैं परन्तु छोटी–छोटी खुशियों से विमुख कर देती हैं। इसलिए मन में बचपन की यादों की कसक हमें यह कहने पर मजबूर कर देती है कि कोई लौटा दे मेरे बचपन के दिन।

मिनी भारद्वाज
प्रबंधक, कार्मिक प्रशिक्षण केंद्र, दिल्ली

आपके पत्र

उपरोक्त विषय पर हम आपके 28 मार्च, 2022 के पत्रांक प्र. का./ रा. वि./पीएनबी प्रतिभा/62–03 की प्राप्ति सूचना देते हैं। इसके साथ ही आपकी पत्रिका के 'डिजिटल बैंकिंग विशेषांक' की प्रति हमें प्राप्त हो गई है। पत्रिका की विषय–वस्तु रोचक और ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में विविध विषयों पर आलेखों, कविता, कहानी आदि को शामिल किया गया है।

पत्रिका में 'डिजिटल बैंकिंग के महत्व एवं लाभ' और 'डिजिटल बैंकिंग उत्पाद और इनकी उपयोगिता' जैसे आलेख पत्रिका के सार्थक उद्देश्य को दर्शाते हैं। विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान ली गई तस्वीरों और कविताओं के जरिए अपने अनुभव साझा करने वाले आलेखों ने पत्रिका को जीवंत बना दिया है।

पत्रिका के अगले अंक के लिए शुभकामनाएं।

(अशोक कुमार वर्तिया)
उप महाप्रबंधक
भारतीय निर्यात– आयात बैंक
प्रधान कार्यालय, मुंबई

इंडिया एक्ज़िम बैंक
India Exim Bank

पीएनबी प्रतिभा का 'डिजिटल बैंकिंग विशेषांक' मिला। एक ऐसे समय में जब कोरोना ने आम आदमी का अपने जरूरी कार्यों के लिए घर की दहलीज लांघ कर बाहर निकलना दूभर कर दिया है और डिजिटल बैंकिंग की अवधारणा अपरिहार्य होती जा रही है, ऐसे में आपने इस महत्वपूर्ण विषय को उठाकर अपनी उत्कृष्ट संपादकीय दृष्टि का परिचय दिया है। स्टाफ सदस्यों द्वारा ऐसे तकनीकी व समसामयिक विषयों पर हिंदी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने का आपका यह प्रयास अभिनंदनीय है। इस अंक में श्री हरगोविंद मकवाना का लेख 'डिजिटल युग में बैंकिंग जगत की चुनौतियाँ एवं संभावनाएं' लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें इस विषय को सूक्ष्मतापूर्वक उठाया गया है। हृदय कुमार की कविता 'वक्त का दरिया तो बहता जाता है' बहुत अर्थपूर्ण और प्रभावी है। अंक की साज–सज्जा और अन्य तकनीकी पक्ष भी पाठकीय संतोष देते हैं। एक संग्रहणीय अंक के लिए पूरी संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई और आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय,
(शशांक युगल किशोर दुबे)
महाप्रबंधक (राजभाषा)
आईडीबीआई बैंक लिमिटेड
प्रधान कार्यालय, मुंबई

IDBI BANK
Bank Aisa Dost Jaisa

हमें आपके बैंक की उक्त गृह पत्रिका के दिसंबर, 2021 अंक को पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। विविध कलेवर वाली इस पत्रिका में विभिन्न विषयक सामग्रियों का सुनियोजित ढंग से समायोजन किया गया है, जोकि प्रशंसनीय है।
उक्त पत्रिका की रचनाएं, 'डिजिटल बैंकिंग के महत्व एवं लाभ' जिसमें बताया गया है कि डिजिटल इंडिया को सफल बनाने में डिजिटल बैंकिंग की अहम भूमिका है। 'जीवन का मकसद' लेख से हमें यह सीख मिलती है कि प्रत्येक व्यक्ति को पृथ्वी, पर्यावरण एवं जल संरक्षण में अपनी भूमिका निभानी होगी, तभी मानव जीवन का मकसद पूरा होगा। इसके साथ पत्रिका में प्रकाशित अन्य रचनाएं काफी रुचिकर, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। इस पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन हेतु संपादक मंडल को धन्यवाद एवं बधाई।

भवदीय,

(रंजन कुमार बरुन)
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
राष्ट्रीय आवास बैंक, नई दिल्ली

राष्ट्रीय आवास बैंक
NATIONAL HOUSING BANK

बैंक की तिमाही गृह पत्रिका "पीएनबी प्रतिभा. डिजिटल बैंकिंग विशेषांक" का अक्टूबर–दिसंबर 2021 अंक प्राप्त करते हुए अति प्रसन्नता हुई। सर्वप्रथम पत्रिका के कुशल एवं सफल संपादन हेतु हमारी ओर से शुभकामनाएं एवं आभार स्वीकार करें।
पत्रिका का डिजिटल बैंकिंग विशेषांक वर्तमान समय में डिजिटलीकरण की आवश्यकता को प्रदर्शित करता है। पत्रिका के इस अंक में डिजिटल बैंकिंग के प्रत्येक पहलुओं और संभावनाओं को बखूबी प्रकाशित किया गया है। "एनपीसीआई की नई पहल – आधार ओटीपी से यूपीआई पिन सेट करें" सारांश में अत्यधिक जानकारी देता है। "भारतीय भुगतान उद्योग में एक और दस्तक/बायोमेट्रिक डेबिट कार्ड" डिजिटल इंडिया की सफलता में डेबिट कार्ड की महत्ता को प्रदर्शित करता है। 'पिता का प्यार' लघु कहानी पिता के संघर्ष और पुत्र का प्रेम मन को स्पर्श कर जाता है। इसके साथ ही पत्रिका में भावपूर्ण एवं संवेदनात्मक कविताएं हृदयविदारक हैं।
पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपूर्ण संपादकीय समूह को बहुत–बहुत बधाई एवं आगामी अंक हेतु शुभकामनाएं।

भवदीय,
कामेश सेठी
महाप्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब एण्ड सिंध बैंक, नई दिल्ली

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank

सेवानिवृत्ति

मुख्य महाप्रबंधक (सामान्य प्रशासन, सुरक्षा एवं राजभाषा), श्री बिकर सिंह मान को उनकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर उपहार भेंट कर भावभीनी विदाई देते महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री एस. के. दाश। साथ में हैं उपमहाप्रबंधक, सामान्य प्रशासन, श्री कृष्ण कुमार अग्रवाल, उपमहाप्रबंधक, सामान्य प्रशासन, श्री डी. साहू तथा उपमहाप्रबंधक, सुरक्षा, श्री तेजेंद्र सिंह साही।

निरीक्षण तथा लेखापरीक्षा विभाग, प्रधान कार्यालय से महाप्रबंधक श्री आलोक सिन्हा के सेवानिवृत्ति के अवसर पर निरीक्षण तथा लेखापरीक्षा विभाग, प्रधान कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक, श्री राम कुमार, श्री सिन्हा को सप्रेम भेट स्वरूप उपहार प्रदान कर भावभीनी विदाई देते हुए। साथ में मंच पर उपस्थित हैं विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

विपणन प्रभाग, प्रधान कार्यालय से उप महाप्रबंधक, श्री संजीव सेठ की सेवानिवृत्ति के अवसर पर आयोजित विदाई समारोह में विपणन प्रभाग, प्रधान कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक, श्री सुनील सोनी श्री संजीव सेठ को पुष्पगुच्छ प्रदान कर भावभीनी विदाई देते हुए। साथ में हैं विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

मंडल कार्यालय, पुरुलिया के उपमंडल प्रमुख एवं मुख्य प्रबंधक, श्री अविनाश श्रीवास्तव को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए मंडल प्रमुख, श्री लिंगराज मोहंती। साथ में हैं श्री अविनाश श्रीवास्तव के परिजन एवं अन्य स्टाफ सदस्य।

जयपुर–सीकर, मंडल कार्यालय की शाखा घटवाड़ी के वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक, श्री राजराजेश्वर मीणा की सेवानिवृत्ति के अवसर पर श्री राजराजेश्वर को सम्मानित कर भावभीनी विदाई देते हुये स्टाफ सदस्य। साथ में हैं उनके परिजन।

मंडल कार्यालय, सोलन की शाखा माल रोड, सोलन के शाखा कार्यालय में कार्यरत श्री वकील सिंह को उनकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए मुख्य प्रबंधक एवं अन्य स्टाफ सदस्यगण।

सेवानिवृत्ति

मंडल कार्यालय, झांसी में पदस्थ मुख्य प्रबंधक, श्री के.एन. पाण्डेय की सेवानिवृत्ति के अवसर पर उनको प्रशस्ति पत्र प्रदान कर भावभीनी विदाई देते हुए मंडल प्रमुख, श्री प्रभात शुक्ला एवं एम.सी.सी. प्रमुख श्री विजय कुमार अग्रवाल। साथ में हैं मंडल कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारीगण एवं स्टाफ सदस्य।

मंडल कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली में वरिष्ठ प्रबंधक श्री हरीश कोचर की सेवानिवृत्ति के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उन्हें बधाई तथा शुभकामनाएं देते हुए मंडल प्रमुख, श्री एस.पी. गोस्वामी। साथ में है अन्य स्टाफ सदस्यगण।

मंडल कार्यालय, सीतापुर में पदस्थ वरिष्ठ प्रबंधक, श्री शिव ओम गुप्ता, शस्त्र विभाग के सेवानिवृत्ति के अवसर पर प्रशस्ति पत्र प्रदान कर भावभीनी विदाई देते हुए मंडल प्रमुख, श्री पवन कुमार। साथ में हैं पी.एल.पी. प्रमुख श्री मनीष कुमार चौधरी और वरिष्ठ अधिकारीगण।

बसंत बहार

कोंपल कोंपल फूल खिला करते थे
जब आता था मौसम बसंत का
हरियाली छाया करती थी जग में
जब आता था मौसम बसंत का

पंछी गीत गुनगुनाया करते थे
मोर पीहू पीहू गाया करते थे
हिरन जंगल में रमा करता था
हम मस्ती में झूमा करते थे

सरसों के फूलों में भौरे मंडराते थे
जोगी घूम घूम के मल्हार गाते थे

अरे किसकी लग गयी नजर दुनिया को
अब सब कुछ बदल गया है भैया
भारी शीत लहर के बाद आ गयी गर्मी
बसंत मौसम को अब के खा गई गर्मी

फूल खिलने से पहले मुरझा गये
पंछी गीत गाने से पहले घबरा गये
नाचता मोर अब की छुप गया है
भौरे न जानें अब कहां गये

बसंत में लगने वाले मेले
साथ में गुड़िया गुड्डों के खेले
दिखता नही है मल्हार गाने वाला जोगी
खिड़की में गुड़िया इंतजार कर रही होगी

कैसा आया है अबकी बसंत
सब कुछ धूप में जल गया है

वक्त रहते सम्भालों अब भी दोस्तों
ये पर्यावरण दूषित हो रहा है हमसे ही
बारिश, गर्मी, बसंत, सर्दी, सब कुछ बचाना है
अपना बचपन अपने बच्चों को भी दिखाना है
बसंत बहार से अपने बच्चों को भी मिलवाना है

हर्षला कोहाड़
अधिकारी
मंडल कार्यालय, नागपुर

भावभीनी विदाई

मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन प्रभाग) श्री राजेश वर्मा को उनकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर प्रशस्ति पत्र प्रदान कर भावभीनी विदाई देते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार, श्री स्वरुप कुमार साहा, श्री कल्याण कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री विजय कुमार त्यागी। साथ में मंच पर उपस्थित हैं श्री राजेश वर्मा के परिजन।

मुख्य महाप्रबंधक (कार्यनीति प्रबंधन एवं आर्थिक परामर्श प्रभाग) श्रीमती आरती मट्टू को उनकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर स्मृति चिन्ह प्रदान कर भावभीनी विदाई देते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार, श्री स्वरुप कुमार साहा, श्री कल्याण कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री विजय कुमार त्यागी। साथ ही मंच पर उपस्थित हैं श्रीमती आरती मट्टू के परिजन।

मुख्य महाप्रबंधक (सामान्य प्रशासन, सुरक्षा एवं राजभाषा) श्री बिकर सिंह मान को उनकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर प्रशस्ति पत्र प्रदान कर भावभीनी विदाई देते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशक, श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री कल्याण कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री विजय कुमार त्यागी। साथ में मंच पर उपस्थित हैं श्री बिकर सिंह मान के परिजन।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

pnb
...भरोसे का प्रतीक !

क्या आप चेक के माध्यम से ₹10 लाख या अधिक का भुगतान कर रहे हैं ?

चेक की धोखाधड़ी से बचने के लिए 4 अप्रैल, 2022 से पॉजिटिव पे कन्फर्मेशन अनिवार्य है।

पीपीएस

आपके चेक के लिए धोखाधड़ी बचाव सिस्टम

पॉजिटिव पे सिस्टम(पीपीएस), सीटीएस क्लीयरिंग में प्रस्तुत बड़े मूल्य के चेक के प्रमुख विवरणों की पुन:पुष्टि करके जाली, परिवर्तित और नकली चेक से ग्राहकों की रक्षा करता है।

अदाता को कोई चेक देने से पहले खाताधारक शाखाओं में या डिजिटल चैनलों अर्थात इंटरनेट बैंकिंग सेवाएं रिटेल एवं कॉरपोरेट, मोबाइल बैंकिंग सेवा (पीएनबी वन), एसएमएस बैंकिंग के माध्यम से चेक का विवरण दर्ज कर सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए कृपया टोल फ्री नंबर 1800 180 2222 पर कॉल करें या हमारी शाखा/वेबसाइट (E-service → Positive Pay System [PPS]) पर संपर्क करें।

हमें फॉलो करें:

पंजाब नैशनल बैंक ...भरोसे का प्रतीक ! pnb punjab national bank ...the name you can BANK upon!